ISSN NUMBER : 2455-9717
RNI NUMBER :- MPHIN/2016/67929
वर्ष : 4, अंक : 13
अप्रैल-जून 2019
मूल्य 50 रुपये

शिवना साहित्यिकी

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' पर केन्द्रित विशेषांक

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन

शिवना

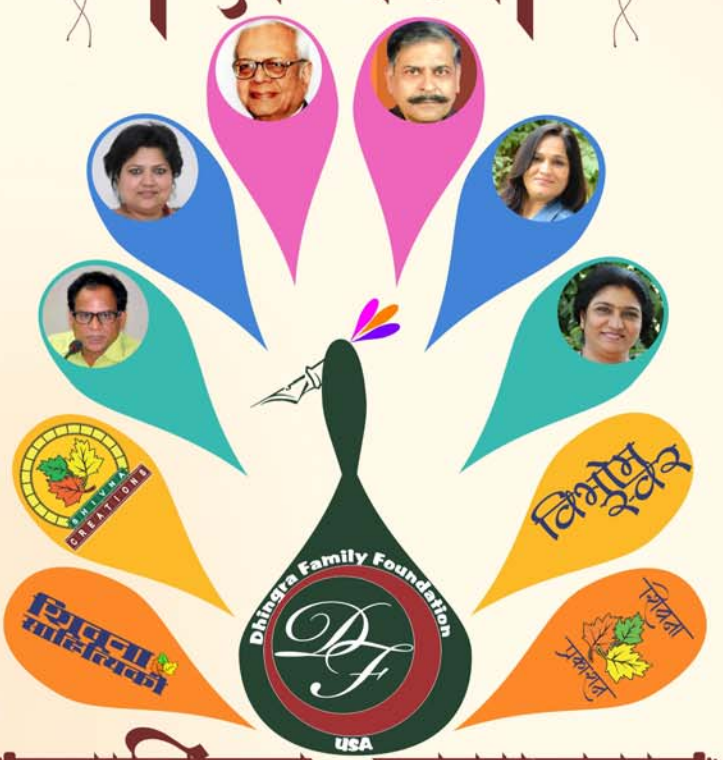

साहित्य समागम

शिवना प्रकाशन

राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल, मध्य प्रदेश

17 मार्च 2019, रविवार

भोपाल मध्यप्रदेश के राज्य संग्रहालय के सभागार में 17 मार्च 2019 को आयोजित "ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका-शिवना प्रकाशन साहित्य समागम तथा सम्मान समारोह" में शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित नए सेट की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

रेखाएँ बोलती हैं - (गीताश्री), मेरा दावा है - (सुधा ओम ढींगरा), 51 किताबें ग़ज़लों की - (नीरज गोस्वामी)

बारह चर्चित कहानियाँ - (सुधा ओम ढींगरा, पंकज सुबीर), विमर्श दृष्टि - (पंकज सुबीर), यायावर हैं, आवारा हैं, बंजारे हैं - (पंकज सुबीर)

वक़्त की गवाही - (बुधराम यादव), दो ध्रुवों के बीच की आस- (डॉ. गरिमा संजय दुबे), सरला मैडम के मिस्ड कॉल - (डॉ. कमल चतुर्वेदी)

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, कारण और निवारण- (शहरयार अमजद ख़ान), # मी-टू - (आकाश माथुर), प्रेम पॉलिटिक्स - (प्रसन्न सोनी)

कुबेर - (डॉ. हंसा दीप), इस समय तक - (धर्मपाल महेन्द्र जैन), पार्थ तुम्हें जीना होगा 'चतुर्थ संस्करण' - (ज्योति जैन)। इस अवसर पर फ़िल्म निर्देशक श्री इरफ़ान ख़ान की नई फ़िल्म शरद पूर्णिमा का पहला पोस्टर भी जारी किया गया, जिसके लेखक पंकज सुबीर हैं।

संरक्षक एवं सलाहकार संपादक
सुधा ओम ढींगरा

●

प्रबंध संपादक
नीरज गोस्वामी

●

संपादक
पंकज सुबीर

●

कार्यकारी संपादक
शहरयार

●

सह संपादक
पारुल सिंह

●

छायाकार
राजेन्द्र शर्मा

●

डिज़ायनिंग
सनी गोस्वामी

●

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय कार्यालय
पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6
सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट
बस स्टैंड के सामने, सीहोर, म.प्र. 466001
दूरभाष : 07562405545, 07562695918
मोबाइल : 09806162184 (शहरयार)
ईमेल : shivnasahityiki@gmail.com
ऑनलाइन 'शिवना प्रकाशन'
http://shivnaprakashan.blogspot.in
फेसबुक पर 'शिवना प्रकाशन'
https://facebook.com/shivna prakashan

●

एक प्रति : 50 रुपये,
(विदेशों हेतु ५ डॉलर $5)
सदस्यता शुल्क
1500 रुपये (पाँच वर्ष),
3000 रुपये (आजीवन)
बैंक खाते का विवरण :
Name: Shivna Sahityiki
Bank Name: Bank Of Baroda
Branch: Sehore (M.P.)
Account Number: 30010200000313
IFSC Code: BARB0SEHORE

शिवना साहित्यिकी

वर्ष : 4, अंक : 13
त्रैमासिक : अप्रैल-जून 2019
RNI NUMBER :- MPHIN/2016/67929
ISSN : 2455-9717

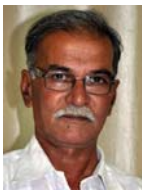

आवरण चित्र
राजेन्द्र शर्मा

इस अंक में

कुछ यूँ...
संपादकीय / शहरयार / 4
व्यंग्य चित्र / काजल कुमार / 5
'साहित्य समागम' पर विशेष सामग्री

संस्मरण आलेख
दिल्ली से भोपाल वाया सिहोर
रिश्तों की पगडंडियों पर पदयात्रा
आलेख : डॉ. प्रेम जनमेजय / 6
आज तक जो ना हुआ, अब ना होगा यार
आलेख : बुधराम यादव / 11
यह साहित्यिक कुंभ स्मरणीय रहेगा
डॉ. कमल किशोर गोयनका / 12
हिन्दी लेखिका संघ ने किया
सुधा ओम ढींगरा का सम्मान / 12
मुख़्तलिफ़ आवाज़ें....और एक भीनी याद....
आलेख : वसंत सकरगाए / 13
एक मीठा अनुभव जल तरंगों पर कविता का
आलेख : चौधरी मदन मोहन समर / 14
हम भी वहीं मौजूद थे.....
आलेख : डॉ. आज़म / 15
सीहोर कथा
आलेख : गीताश्री / 17
'अवाक्' रह जाने का आनंद
आलेख : नीरज गोस्वामी / 19
रहा किनारे बैठ
आलेख : धर्मपाल महेंद्र जैन / 20
अपनापन भी रुला जाता है
मनीषा कुलश्रेष्ठ / 21
बिना गाँठ के बँधा हुआ रिश्ता
ज्योति जैन / 21
हर लेखिका मल्लिका को जीती है
मनीषा कुलश्रेष्ठ से पारुल सिंह की बातचीत / 22
कार्यक्रमों की रपट
बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला आष्टा / 29
बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला सीहोर / 30
सम्मानित लेखकों के सम्मान में कार्यक्रम एवं रात्रि भोज / 32
प्रथम उद्घाटन सत्र सम्मानित लेखकों का रचना पाठ एवं पुस्तक चर्चा / 34
द्वितीय सत्र ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन एवं शिवना अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह / 36
तृतीय सत्र शिवना प्रकाशन पुस्तक विमोचन समारोह / 38
चतुर्थ सत्र कविता की एक शाम लहरों के नाम / 40
अंतर्राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी / 42

संपादन, प्रकाशन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक, अव्यवसायिक। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। संपादक तथा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। पत्रिका जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर माह में प्रकाशित होगी। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र सीहोर (मध्यप्रदेश) रहेगा।

संपादकीय

चलो, अब मिलते हैं अगले बरस फिर से

शहरयार

shaharyarcj@gmail.com
+91-9806162184

एक कार्यक्रम करने के बारे में सोचना और उसे कर लेना इनके बीच में इतना कुछ होता है कि उसे लेकर महाग्रंथ तक रचे जा सकते हैं। कोई आज तक समझ नहीं पाया कि इसके बाद भी क्यों कुछ पागल लोग अभी भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्यक्रम करते रहते हैं। यह निश्चित रूप से एक पागलपन ही तो है कि आप अपना सारा काम-काज छोड़ कर एक कार्यक्रम के लिए दीवानों की तरह लग जाओ। तनाव झेलो, मानसिक परेशानी झेलो और उसके बाद भी कहो कि 'चलो, अब मिलते हैं अगले बरस फिर से।' कुछ तो ऐसा होता है, जो कार्यक्रम आयोजकों को सुख देता है। एक अलग तरह का सुकून तो होता ही है, जिसके कारण पिछले वर्ष की सारी थकान, सारा तनाव भूल कर फिर से आयोजक खड़े हो जाते हैं किसी भी आयोजन को करने के लिए। सरकारी आयोजन या सरकारी ख़र्च पर होने वाले आयोजनों के बारे में तो समझ में आता है कि वहाँ तो मामला कैलेंडर वर्ष का होता है और तय रकम को निश्चित समय सीमा में ठिकाने लगाना ही होता है। लेकिन, निजी संस्थाएँ, निजी आयोजक के सामने तो ऐसी कोई बाध्यता नहीं होती है, फिर भी वह पिछले साल की गर्द झाड़ कर एक बार फिर से खड़ा हो जाता है। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका और शिवना प्रकाशन का 'साहित्य समागम' भोपाल के राज्य संग्रहालय में बिना किसी विघ्न-बाधा के, गरिमामय माहौल में संपन्न हुआ। वैसे कार्यक्रम तीन दिन का था। एक दिन सीहोर ज़िले के आष्टा नगर में और एक दिन सीहोर में कार्यक्रम करने के बाद अंतिम दिन 17 मार्च को भोपाल में चार सत्रों में आयोजन किया गया। चार सत्रों में आयोजन करना आज के समय में बहुत बड़ा जोखिम होता है। चार सत्रों तक बैठने वाले श्रोता अब कहाँ ? मगर हम इस मामले में भाग्यशाली हैं कि चारों सत्रों में श्रोता भरपूर रहे, और पूरे कार्यक्रम में वे साथ बने रहे। सुबह दस बजे से लेकर रात दस बजे तक सत्र होते रहे और लोग साथ बने रहे। हमने कोशिश यह की कि समय की सीमा का पालन किया जाए। जो कुछ जैसा भी एजेंडा में तय है, उसी हिसाब से कार्यक्रम चले। और हम इसमें बहुत हद तक सफल भी रहे। बहुत हद तक इसलिए कि वक्ताओं पर तो हमारा नियंत्रण नहीं होता, हम उन्हें समय सीमा के बारे में विनम्रता से बता ही सकते हैं, बाक़ी तो उन्हें ही देखना होता है। मगर फिर भी यह रहा कि हमने सारे सत्रों को लगभग समय पर समाप्त किया। दरअसल भारत में वक्ताओं को अभी भी यह सीखना होगा कि कुशल वक्ता वह नहीं होता है जो एक घंटे में कही जा सकने वाली बात को एक घंटे में ही कहे। कुशल वक्ता वह होता है, जो एक घंटे में कही जा सकने वाली बात को दस मिनट में ही कह दे, सब कुछ कह दे।

इस बार का यह अंक असल में उस पूरे कार्यक्रम का एक दस्तावेज़ीकरण है। हमने तीनों दिनों को समेटने की कोशिश की है इस अंक में। जो लोग आए उनके संस्मरण, साक्षात्कार और तीनों दिनों की रपट के माध्यम से। यह इसलिए कि आप लोग जो कार्यक्रम में नहीं आ पाए, आप सब कार्यक्रम के बारे में जान सकें। जान सकें कि हमारा यह छोटा-सा प्रयास कैसा था ? कोई भी कार्यक्रम जब हो जाता है, तो उसके बाद एक प्रकार का सूनापन छोड़ जाता है, ऐसा लगता है कि उसके साथ ही आपका एक अंश भी बीत गया है। उस सूनेपन को भरने का एक तरीक़ा होता है कि आप उन यादों को सहेजने की कोशिश करें। कुछ ऐसा किया जाए कि वह यादें हमेशा के लिए स्थायी हो जाएँ। यह अंक भी एक ऐसा ही प्रयास है हमारा। त्रैमासिक पत्रिका का विशेषांक निकालना इस मायने में कुछ ठीक नहीं होता कि उससे सारी सामग्री छह माह पीछे चली जाती है। नियमित सामग्री को और तीन माह तक इंतज़ार करना होता है। इसके बारे में हम अगली बार कुछ सोचेंगे, कि ऐसा न हो। मगर हाँ इस बार तो नियिमित सामग्री के स्थान पर हम केवल इस कार्यक्रम की ही सारी सामग्री दे रहे हैं। यह अंक निकल पाया है क्योंकि लेखकों ने अंक के लिए अपने संस्मरण देने में देर नहीं की। जिस प्रकार के आत्मीय संस्मरण हमें प्राप्त हुए उसके कारण ही हम इस अंक को निकाल पा रहे हैं। इस अंक को निकालने के पीछे हमारा भी एक लालच है, और वो लालच यह है कि यह अंक हमें ऊर्जा प्रदान करता रहेगा। अगले वर्ष जब हम फिर से इस आयोजन के बारे में विचार कर रहे होंगे, तब यह अंक हमें सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा। जब हमारे सामने करें या न करें की दुविधा खड़ी होगी, जो हर आयोजक के सामने होती है, तो यह अंक उस दुविधा से हमें बाहर निकालने में सहयोग करेगा। तीन दिनों में बहुत कुछ घटा, बहुत कुछ ऐसा हुआ जो शायद हमें याद नहीं रहा हो, और छूट भी गया हो, लेकिन हमने कोशिश की है कि सब कुछ समेट लिया जाए। 15, 16 और 17 मार्च इन तीनों दिनों में जो कुछ भी इस कार्यक्रम के तहत हुआ उस सब को इस अंक में समेटा गया है, सहेजा गया है। आयोजन के तुरंत बाद इस अंक की भी तैयारी करना हमारी टीम के लिए एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन सभी लोगों ने इस चुनौती को स्वीकार कर इस काम को पूरा किया। कोशिश की है कि इस अंक में किसी प्रकार की एकरसता नहीं आए, यह रोचक और पठनीय बन सके। कितना सफल हुए हैं यह तो अब आपको ही तय करना है। बताइए..... ।**आपका ही**

शहरयार

व्यंग्य-चित्र

काजल कुमार

kajalkumar@comic.com

दिल्ली से भोपाल वाया सिहोर
रिश्तों की पगडंडियों पर पदयात्रा

आलेख : डॉ. प्रेम जनमेजय
73, साक्षरा अपार्टमेंट्स, ए-3, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
मोबाइल : 9685458072, ईमेल : premjanmejai@gmail.com

मैंने देश-विदेश में अनेक साहित्यिक आयोजनों में हिस्सेदारी की है। आपने भी अवश्य की होगी। लिटरेरी फेस्टिवल, सरकारी, ग़ैर सरकारी, समृद्ध साहित्य के समृद्ध युग में बहुत कम साहित्यकार होंगे जो वंचित हों। अच्छा लगता है कि साहित्यिक आयोजनों में निरन्तर वृद्धि हो रही है एवं इसी बहाने संवादहीनता तथा असहिष्णु के समय में हम संवाद कर रहे हैं। इसलिये पंकज सुबीर ने जब आग्रह भरा फ़ोन कर कहा कि भाई साहब आपको 'साहित्य समागम' के आयोजन में आना ही है, तो अच्छा लगा। अपनों के आयोजन में जाना न केवल अच्छा है साथ ही मन को आश्वस्त भी करता है कि रे मना ! वहाँ की व्यवस्था की चिंता नकु कर। तेरे चाहने वाले चिंता करेंगे। क्योंकि जब कोई अपना बुलाता है तो अपने सम्मानित की सुविधा में कोई कोर-कसर न रह जाए, इसकी चिंता से लगातार जूझता रहता है और आप भयंकर अनिश्चितता से निश्चिन्त हो जाते हैं। यहाँ तो पंकज सुबीर जैसा आत्मीय अनुज बुला रहा था। मत चूके चौहान सी, तत्काल हाँ भर दी। पर जब कब आना है जैसे प्रश्न के उत्तर में पंकज ने विस्तृत रूपरेखा बताई, तो एक परंतु लग गया। पंकज के आयोजनों में मेरी हिस्सेदारी को लेकर मेरी ओर से कभी किंतु-परंतु नहीं लगा है। पंकज ने विश्व पुस्तक मेले के दौरान, शिवना के आयोजन में सम्मिलित होने को जब भी कहा तो मैं सम्मिलित हुआ क्योंकि पंकज के आत्मीय निमंत्रण को न कहने का साहस मुझमें कभी नहीं हुआ। और फिर शिवना तो अपना है। पंकज सुबीर ने भी तो कभी मेरे आग्रह को न नहीं कहा है। यहाँ तक कि उसकी रचनाओं में व्यंग्य चेतना लक्षित कर, जब मैंने वर्षों पूर्व पंकज से 'व्यंग्य यात्रा' के युवा व्यंग्यकार अंक के लिए अपनी व्यंग्य रचना भेजने को कहा, तो उसने पूरे मन से रचनात्मक सहयोग दिया। इसे ही शायद Mutual understanding कहते हैं।

पर इस बार एक 'परंतु' उत्पन्न हो गया। इस परंतु के प्रभाव में मैंने कहा -'पंकज मेरे परिवार ने मुझसे वचन-सा लिया है कि इस बार मैं अपना जन्मदिन उनके साथ मनाऊँगा।'

पंकज ने कहा- 'भाई साहब इसमें दिक़्क़त नहीं। हमारा कार्यक्रम 17 मार्च की शाम को समाप्त हो जाएगा और 18 सुबह आपकी फ़्लाईट बुक करा देंगे। शाम को आप घर में परिवार सहित जन्मदिन मना लेना और 17 की शाम, जन्मदिन की पूर्व संध्या हम भोपाल में मना लेंगे।' कुछ क्षण के लिए मुझे सोचता हुआ समझ पंकज ने अपने तूणीर से लक्ष्यवेधी बाण निकाला और बोला -'भाई साहब! सुधा जी की भी यही इच्छा है।' आप तो जानते हैं ऐसी आत्मीय इच्छाओं के समक्ष अच्छे-अच्छे 'परंतु' निरस्त हो जाते हैं। पंकज के तूणीर में आत्मीयता में डूबे ऐसे अनेक लक्ष्यवेधी बाण हैं। जो तन लागे सो तन जाने।

पंकज के इस बाण की प्रेरक निश्चित ही, सुधा ओम ढींगरा थीं। क्योंकि मेरे आवास में, 11 मार्च को, उनके सम्मान में आयोजित गोष्ठी में जब वे आईं तो उन्होंने कहा था -'मैंने पंकज से कहा था कि प्रेम जी को इस आयोजन का हिस्सा ज़रूर बनाना है।' जानता हूँ कि सुधा जी और पंकज ने मुझे इस महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए निमंत्रित कर अनेक को नाराज़ भी किया होगा। प्रेम को बुला लिया और मुझे... टाइप नाराज़गी।

एयर इंडिया की कृपा से आठ घंटे तक एयरपोर्ट पर प्रतीक्षारत सुधा ओम ढींगरा जब 11 मार्च को मेरे आवास पर, ओम जी के साथ पधारीं तो चेहरे पर जेटलैग और प्रतीक्षा की खीज नहीं थी और न कोई हवाइयाँ उड़ रहीं थीं; अपितु दोनों की चिरपरिचित महीन मुस्कान सबके अभिवादन में ससम्मान घुल-मिल रही थी। मैंने ये घरेलू मिलन गोष्ठी अपने आवास पर इस आशय से आयोजित की थी कि वे अपने चाहने वालों से मिल लेंगी और हम लोग उनके अनुभव जगत्, विदेशी धरती पर हिंदी के लिए काम करने की कठिन ज़मीन आदि पर बात कर लेंगे।

दिल्ली में कहीं किसी सेमिनार रूम टाइप जगह पर आयोजन करो तो अपने आप बमुश्किल दस-पंद्रह आते हैं। और दस-पंद्रह ही पूरे मन से और गंभीरता से संवाद करते हैं। तथाकथित बड़ी गोष्ठी के लिए भीड़ सी जुटानी पड़ती है। इसलिए जब भी मेरा मन साहित्यिक परिवार से मिलने या फिर कुछ सुनने-सुनाने का होता है तो मैं अपने आवास पर ही पंद्रह-बीस मित्रों को निमंत्रित कर लेता हूँ। इसमें लाभ भी होता है -हॉल, चाय-पानी, आवागमन आदि का व्यय बचता है। हाँ मेरी पत्नी आशा की व्यस्तता और काम अवश्य बढ़ता है पर उसे ये अच्छा लगता है अत: कोई कष्ट नहीं होता। उसका कहना है कि अपनों के काम करने में कैसा कष्ट, उसमें तो सुख मिलता है। और अप्पन के पास मेरे अपनों के लिए आशा को व्यस्त रखने को ढेरों काम हैं।

मेरे आवास पर 11 मार्च को सुधा ओम ढींगरा के सम्मान में आयोजित गोष्ठी में, विभिन्न पीढ़ियों और विधाओं के रचनाकर्मियों की सहभागिता के कारण एक अविस्मरणीय शाम निर्मित हुई। अमेरिका से सुधा ओम ढींगरा और श्री ओम ढींगरा, मुम्बई से सूर्यबाला के साथ-साथ राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र से कमल किशोर गोयनका, प्रताप सहगल, हरीश नवल, ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, बलराम, शशि सहगल, विवेक मिश्र, प्रज्ञा, लालित्य ललित, राकेश कुमार, दीपक पांडेय, सुनीता शानू, नूतन पांडेय, रणविजय राव, हितेश

आशा कुंद्रा की सहभागिता रही।

सूर्यबाला ने अपने सद्य प्रकाशित उपन्यास 'कौन देस को वासी वेणु की डायरी' का अंश पढ़ा। आजकल ये उपन्यास विशेष चर्चित है।

सुधा ओम ढींगरा ने साहित्य और भाषा के लिए किये गए अपने संघर्ष के माध्यम से प्रवासियों द्वारा निरंतर समस्यायों से मुठभेड़, कल्चरल शॉक, ढींगरा फॉउंडेशन के क्रिया-कलापों आदि पर अपने विचार साझा किये। उनके द्वारा आरम्भ की इस चर्चा में कमल किशोर गोयनका, प्रताप सहगल, हरीश नवल, प्रेम जनमेजय, दीपक पांडेय, नूतन पांडेय, विवेक मिश्र आदि ने सहभागिता निभाई। उन्होंने बताया कि हिंदी भाषा और साहित्य की ज़मीन तैयार करने के लिए कितना एड़ी चोटी का ज़ोर लगाना पड़ा। उनके द्वारा रामलीला के आयोजनों, सांस्कृतिक आयोजनों आदि ने एक सकारात्मक वातावरण तैयार किया।

ब्रजेन्द्र त्रिपाठी की कविताओं ने संवेदनहीन होते समय और अजनबीपन जैसे संकट से मुठभेड़ करती काव्याभिव्यक्ति द्वारा मंत्र मुग्ध कर दिया। उनकी शब्द कविता, तुम्हारे मिलने पर, घर आदि कविताएँ बहुत पसंद की गईं। प्रज्ञा ने अपनी कहानी 'मन्नत टेलर्स' के पाठ द्वारा खूब प्रशंसा बटोरी। शशि सहगल ने अपनी अत्यधिक लोकप्रिय कविता 'मिट्ठे चौल' का पाठ किया। इस अवसर पर डॉ. नूतन पांडेय की दो पुस्तकों -'मॉरीशस नींव से निर्माण तक' एवं 'मॉरीशिसय हिंदी नाट्य साहित्य और सोमदत्त बखोरी', का लोकर्पण भी हुआ।

ऐसे आत्मीय साहित्यिक परिवार संग मिलना और रचनात्मक सुख उठाना मुझे और आशा को बहुत अच्छा लगा।

अपने शहर से बाहर आयोजन का हिस्सा बनते हैं तो हमारी कुछ अपेक्षाएँ होती हैं। आप पराधीन होते हैं अत: आपको हर कदम पर आयोजक की बैसाखी की आवश्यकता पड़ती है। वयोवृद्धों को अधिक पड़ती है। सबसे पहली कि साहित्य - सेवा में अपनी जेब न ढीली हो। दूसरे अनावश्यक व्यक्तिगत छींटाकशी से रहित गुणवत्तापूर्ण चर्चा हो। ऐसी चर्चा हो जो हमारी पाठशाला भी बने। तीसरे, कार्यक्रम समयबद्ध हों। ये न हो कि आप मुख्य अतिथि हैं और हाल ये है कि आप हॉल में समय से पहुँचकर आयोजकों और श्रोताओं की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आपका सम्मान होना और आपका सम्मान करने वाले द्रुत-विलम्बित चाल से आ रहे हैं। आप पहले सत्र के अध्यक्ष हैं पर अंत में बोलने के कारण आपके लिए समय ही नहीं बचा है और आप घास काटने लगते हैं। चौथे, आवश्यक आवश्यकताओं से युक्त आरामदायक आवास हो। पाँचवे पेट पर अत्याचार न करने वाला स्वस्थ भोजन हो। छठी और महत्त्वपूर्ण अपेक्षा होती है कि कार्यक्रम समाप्त होते ही आयोजक गधे का सींग न हो जाएँ। ऐसी सातवीं, आठवीं आदि अपेक्षाएँ, व्यक्तिगत कारणों से और भी हो सकती हैं। ऐसे में ये था और ये नहीं था के दो पलड़े होते हैं। अक्सर ये पलड़े बराबर होते हैं -था भी और नहीं भी। डुबेया मुझको होने ने...

ढींगरा फ़ाउंडेशन और शिवना के साहित्य समागम में, ये नहीं है का पलड़ा बहुत हल्का था। यदि ये नहीं है कि ओर अँगुली उठी भी, तो स्वत: शर्मिंदा हो बैठ गई। मेरे लिए अविस्मरणीय आयोजन रहा।

मेरा पहला पड़ाव वह सीहोर था जिसे पंकज सुबीर ने साहित्य के नक्शे पर अमिट और बड़े शब्दों में रेखांकित कर दिया है और जो दिनों-दिन (रात भी) विकसित हो रहा है। जिसने लेखन, प्रकाशन, आयोजन की त्रिवेणी निर्मित की है। और ये त्रिवेणी समाज के वंचितों को स्वावलम्बन की ज़मीन दे रही है। इस कारण जिनको आस्तीन में साँप पालने में रुचि है, उनकी छातियों में ही वे लोटने लगते हैं।

15 की रात 8 बजे एयर इंडिया के विमान में बैठा ही था कि पंकज सुबीर का फ़ोन आया -भाई साहब एयर इंडिया का बेकार खाना मत खाइएगा, आपके भोजन की व्यवस्था घर पर है। (घर के खाने के सामने मेरे लिए पाँच सितारा होटल का खाना भी द्वितीय श्रेणी का रहा है। मेरी पत्नी आशा ने अपने हाथों के जादू से घरेलू स्वादिष्ट, रूखा सूखा ही सही, खाने की आदत जो डाल दी है।)

पंकज का फ़ोन सुनने के बाद मुझे लगा कि जैसे कोई कह रहा है -सावधान, आप सी सी टीवी कैमरे की निगाह में हैं। क्या कहिए ऐसी सी सी टी वी टाइप निगाह को जो हवा में भी पकड़ ले।

पर मेरे लिए पंकज का ये निमंत्रण मुझे चिंता में डाल गया। पहले निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुझे लगा था कि रात को 10:30 बजे के लगभग सिहोर के क्रिसेंट रिसोर्ट में पहुँचेंगे, क्योंकि खाना तो हवाई जहाज़ में खा ही चुके होंगे। कोई संकेत नहीं था कि पंकज के घर जाना होगा। अब यहाँ तो एयरपोर्ट से सीधे पंकज के यहाँ पहुँचकर रात का खाने का निमंत्रण मिला था। अनुज पंकज के घर पहली बार जा रहा हूँ और मेरे हाथ ख़ाली होंगे, सोच-सोच कर मन दुखी हो रहा था। उस दिन मन ने मुझे बहुत कोसा। और जानता था कि जब घर जाकर पत्नी को ये बताऊँगा तो वह मुझे केवल कोसेगी नहीं डाँटेगी भी। अब तो इस पश्चाताप का एक ही हल होगा, जल्दी भूल सुधार।

पंकज न केवल ये ध्यान रखा था कि मेरे समय की बचत हो अपितु ये भी कि मेरी यात्रा आरामदायक हो। मेरे आराम को ध्यान में रखते हुए मेरे लिए 1 सी सीट आरक्षित करवाई हुई थी। आप तो जानते हैं कि आजकल हवाई जहाज़ में ये सुविधा मिलती नहीं, ख़रीदनी पड़ती है। मेरे साथ की सीट युवा पति-पत्नी और उनकी लगभग आठ माह की बिटिया थी। वह बेचैन हो रही थी, और इस कारण उसके मॉम-डैड भी बेचैन थे। वो एक दूसरे को कुछ करने को कह रहे थे। बच्ची रूँ-रूँ कर रही थी। गोद में उठाकर उसकी रूँ-रूँ दूर करने को कोई नहीं उठ रहा था। जब हद होने लगी तो पति अपने मोबाइल को उसके सामने कर दिया। बच्ची चुप। सन्नारि ने अपना मोबाइल पति के समक्ष किया, मुस्कुराई। अब कोई रूँ-रूँ नहीं कर रहा था। नशाखोर को नशा मिल जाये तो उसकी रूँ-रूँ शांत हो जाती है।

जब भी कोई अजनबी मुझसे मिलता है और पहली निगाह में इश्क़-सा भाते हुए आपका हिस्सा बन जाता है, तो मुझे पाकीज़ा का यह गीत बरबस याद आ जाता है - चलते चलते, कोई यूँ ही मिल गया था, सरे राह चलते चलते।

15 मार्च की रात 9.30 बजे मुझे भी,

भोपाल के राजा भोज एयरपोर्ट पर भी कोई यूँ ही सा सरे राह मिला। आज का समय भ्रमकाल है अत: स्पष्ट कर दूँ, कोई मिल गया था, कोई मिली नहीं।

मेरी फ़्लाइट उतरी ही थी, और मैंने अपना फ़ोन चालू किया ही था कि सनी का फ़ोन आया –'सर,गेट के बाहर हम आपका इंतज़ार कर रहे हैं।'

छोटे एयरपोर्ट पर अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती है। एयरपोर्ट से बाहर निकला तो सनी ससम्मान मुझे टैक्सी तक ले गया और बोला –'सर, नीरज जी की फ़्लाइट भी आने वाली है इजाज़त दें तो उनकी प्रतीक्षा कर लें।' क़त्ल करते हों और हाथ में तलवार भी न हो, तो ऐसी विनम्र सादगी को इजाज़त देनी ही पड़ती है।

वैसे भी पंकज मेरी प्रतीक्षा कर रहा था और मैं नीरज की। दोनों पर्यायवाची हैं। एक की मैं कर रहा था और दूसरा करवा रहा था––हिसाब बरोबर।

नीरज से मिल पहली बार रहा था पर ग़ज़ल के क्षेत्र में उसके महत्त्वपूर्ण काम से परिचित था। शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित उसकी, हिंदी ग़ज़ल केंद्रित एक कृति का विश्व पुस्तक मेले के दौरान लोकर्पण कर चुका था और 17 मार्च को '51 किताबें ग़ज़ल की –भाग 2' का करना था।

नीरज टैक्सी में बैठा, तो मेरे कारण छाई ख़ामोशी ने दिल तोड़ दिया। बहुत ही जीवन्त। पहली बार मिला पर सम्मानजनक गर्मजोशी से। सनी से, इससे-उससे, सीहोर के अपनों से बात करते और सनी के माध्यम से शहरयार के प्रति रूठे भाव प्रस्तुत करते हुए मुझे वह आत्मीयता की नदी में नहाता सा लग रहा था। समझ गया कि इस घर में वो आया है बार-बार। मैं समझ गया कि नीरज ऐसी शख़्सियत है जिसके बारे में किसी शायर ने कहा है –खूब गुज़रेगी जब मिल बैठेंगे दो यार... इसके बाद, अगले दो दिन वो जब जब मेरे साथ बैठा, खूब गुज़री। वो मेरे मिजाज़ का जो निकला।

लगभग एक घण्टे बाद, आधी रात की ओर बढ़ती छोटी-बड़ी सूईयों का साथ निभाने की प्रक्रिया में हम पंकज के घर पहुँच गए।

दिल्ली से चलने से पहले लालित्य ललित ने कहा था –'गुरुदेव ! पंकज के घर

जाएँ तो उसके आँगन में लगा कटहल का पेड़ देखिएगा।' खान-पान विशेषज्ञ प्रिय ललित की बात मुझे माननी थी। वैसे भी उस समय तक भूख भी भयंकर लग चुकी थी देखकर कुछ तो आभासित-सी मिटती ही।

पंकज के घर सभी थे, घर वाले और बाहर वाले, पर वातावरण ऐसा था कि सभी घरवाले ही लग रहे थे। अपने जूते उतारकर जब घर की बैठक में पहुँचा तो लगा जैसे अपनत्व की नदी में नहा लिया और सारी थकान दूर हो गयी। पंकज की अम्मा, उसकी पत्नी रेखा, मासूम मुस्कान से भरी उसकी दोनों बेटियाँ परी और पंखुरी। सभी प्रकार की थकान और बीमारी के लक्षणों को अपनी मुस्कान से पराजित करतीं सुधा जी और सदा के संग साथी ओम जी। सुधा जी इस घर के रगो-रेशे से कितनी गहरी जुड़ी हैं और इस परिवार की हर चिंता उनकी अपनी है, इसे मैंने चावल के एक दाने-सी उनकी एक चिंता से जाना।

लगभग सब खाना खा चुके थे क्योंकि बारह बज चुके थे और नहीं चाहते थे कि आज रात खाया हुआ खाना कल के हिस्से जाए। हमें साग्रह खाने की मेज़ पर बैठने को कहा गया। उससे पहले सुधा जी ने मुझे पंकज की माता जी से मिलवाते हुए कहा –'ये पंकज की माता जी हैं और प्रेम जी ज़रा इनके पैर देखिए, कैसे सूज गए हैं। आपने 11 को दिल्ली में मुझे किसी तेल को मलने के लिए कहा था, वो इनके काम भी आ जाएगा न।' जिस दिन सुधा जी हमारे घर आईं थीं, आशा की तबियत ठीक नहीं थी, और बात चल पड़ी दवाइयों पर, क्योंकि आशा दवाई कम लेती हैं। सुधा जी ने मुझे से कहा कि उन्हें आयुर्वेदिक दवाइयाँ सूट करती हैं, और एलोपेथी दवाई वे कम लेतीं हैं। तब मैंने सुधा जी को घुटनों और हाथों के जोड़ों के दर्द लिए एक आर्युवैदिक इलाज बताया था कि तिल के तेल में लहसुन, अदरक और अजवाइन को एक उबाला दिलावा लें और फिर उसे रख लें। रोज़ गर्म कर उसकी मालिश किया करें। हालाँकि उन्हें यह तकलीफ नहीं है पर वो अम्मा की चिंता कर रही थीं। उनका पैर सूजा हुआ था, जो बाद में पंकज ने बताया कि किडनी की समस्या के कारण है। जब मैंने कहा कि ये तेल यहाँ काम नहीं आएगा, तो वे कुछ निराश-सी हो गईं।

पंकज के यहाँ पंद्रह और सोलह मार्च की रात जो भोजन खाया उसमें दोनों रस कूट-कूट कर भरे हुए थे –बनाने वाले की पाक कला का रस और आत्मीयता से परोसे गए भोजन का रस। समझ आ गया कि सुधा और ओम जी, पारुल, नीरज इस घर से क्यों बँधे हुए थे और बाद में मैं गीताश्री और मनीषा क्यों बंध गए। पंकज ने भी उन्हें बहनों-सा पूरा सम्मान दिया। सब अपने मायके आई हैं इसलिए सबको सुंदर साड़ियाँ दीं। मन ने कहा, काश तू भी पंकज की बहन होता। कुछ अतिरिक्त प्यार पा लेता। पंकज का घर ऐसे जादू से भरा है जो आपको अपने घर के आत्मीय सुख से सम्मोहित कर देता है। इसी कारण ललित मुझसे बार-बार पंकज के इस घर में व्यतीत समय को साझा कर चुका था। एक उत्सव के उत्साह के साथ सारा घर जैसे सजा हुआ था। गेट में घुसते ही बाँईं ओर चौपाल-सी अनुभूति देती कुछ एक टेबल के चारों ओर पड़ी कुर्सियाँ, संध्या और निशा निमंत्रण, दोनों देती हैं। मालवा के भोजन का आनंद मैंने पहले भी अनेक बार लिया है। पर यहाँ तो बात ही कुछ और थी। बाजरे की रोटी, कढ़ी, लहसुन, मिर्च ओर न जाने किस-किस की चटनी। पंकज ने ठीक ही कहा था कि एयर इंडिया का खाना मत खाना।

हम रात को क्रिसेंट के अपने कमरे में पहुँच गए। सुबह साढ़े नौ तक नाश्ता कर तैयार होना था और वंचित तथा आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर लड़कियों को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए नि:शुल्क चलाए जा रहे कंप्यूटर केंद्र में प्रशिक्षित हो रही आत्मस्वाभिमानी कन्याओं के दर्शन करने थे।

पिछले पाँच वर्ष से ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के आर्थिक सहयोग से समाज

सेवा का यह अभियान चल रहा है। आज तक 1000 से अधिक लड़कियाँ इस अभियान से लाभ उठा चुकी हैं। वे सभी आईं थीं।

इस अवसर पर मैंने कहा – 'जो इस देश से बाहर जाकर बस जाता है उसे यह देश कूड़ाघर लगने लगता है। उसका कर्मक्षेत्र विदेश हो जाता है। सुधा और ओम जी के लिए ये देश न केवल अपना है अपितु वे अभी भी इस देश से तन, मन और धन से जुड़े हैं और बहुत कुछ निस्वार्थ करना चाहते हैं। सुधा जी की सोच भी यही है कि गर्दनें और क़लम नहीं झुकी होनी चाहिए। आज मैं देख रहा हूँ कि उन सैकड़ों लड़कियों की गर्दनें, यदि उन्हें समय पर साथ न दिया होता तो झुकी होतीं पर आज सर उठाकर सम्मान से उठी हुई हैं। ये एक ऐसा गुरुकुल है जहाँ शिष्यों से भिक्षा नहीं मँगवाई जाती अपितु आत्मस्वाभिमान के धरातल पर खड़ा किया जाता है। यहाँ जो आत्मीय वातावरण मिला है उसमें पुनः डूबने आऊँगा। आप नहीं भी बुलाएँगे, तो भी आऊँगा।

वे सभी लड़कियाँ ऐसे तैयार होकर आई थीं जैसे किसी समारोह में आई हों। कार्यक्रम के बाद उन्होंने सुधा और ओम जी पर फूलों की जो बरसात की उससे हर मन भीग गया। लगा कि चाहे शहर ने हमारी मानवता, आत्मीयता और भावुकता को मार दिया हो पर क़स्बों ने उसे ज़िंदा रखा है। आज भी क़स्बों में किसी के किए को मानने वाला मन हैं। पूरा स्टेज लबालब भर गया था। हर लड़की अपने भविष्य सुधारकों के संग चित्र खिंचाकर अविस्मरणीय क्षणों को बाँधना चाहती थी। बहुत ही भावुक कर देने वाला दृश्य था। पारुल, और मनीषा का उत्साह देखते ही बनता था। ये भी तो बच्चियाँ बन गई थीं। इनका भी लड़कपन जाग गया था। गूँगे के गुड़ जैसा था सब कुछ।

उसी दिन दोपहर को भोजन के बाद चंद्रशेखर आज़ाद शासकीय स्नातकोत्तर अग्रणी महाविद्यालय, सीहोर में आयोजित, 'अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी' में विषय विशेषज्ञ के रूप में सहभागिता निभा कर अच्छा लगा। 'हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ : रचना प्रक्रिया और आयाम' के अंतर्गत साहित्य की अन्य विधाओं के साथ

व्यंग्य भी चर्चा के केंद्र में था। इस विषय पर व्यंग्य के जिज्ञासु शोधार्थियों के समक्ष आज के समय में व्यंग्य लेखन की आवश्यकता और अपनी रचना प्रक्रिया साझा की। इस अवसर पर मनीषा कुलश्रेष्ठ, पारुल सिंह और नीरज गोस्वामी ने क्रमशः उपन्यास, कविता एवं ग़ज़ल पर अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर मंच पर प्राचार्या आशा गुप्ता, पुष्पा दुबे और पंकज सुबीर की महत्त्वपूर्ण उपस्थिति रही। पंकज ने बताया था कि ये उसका अपना कॉलेज है, जहाँ की दीवारें उसे आज भी अपनत्व से घेरती हैं।

यहीं महेश कटारे जी से मिलना हुआ। मेरे पसंदीदा कथाकार हैं। सादगी और अपनत्व से परिपूर्ण व्यक्तित्व। पर उनकी, मेरी पसंदीदा कहानी 'मुर्दा स्थगित' में विसंगतियों पर जो प्रखर प्रहार है वो उनकी शब्द शक्ति को रेखांकित करता है। जब भी मिले सहजता से, बड़े लेखक होने का अभिमान छू तक नहीं गया। इस बार उनसे मैत्रीपूर्ण भाव निर्मित हुआ और उसके और विकसित होने की सम्भावना जगी।

ऐसे ही में मनीषा से पहली बार मिलना आत्मिक सुख दे गया। मनीषा से ई मेलिये संबंध दशकों पुराने हैं। मिल पहली बार रहा था। सार्वजानिक रूप से मितभाषी। अपनी हल्की-सी मुस्कान से कुछ कह देने वाली।

और गीताश्री.. सोचा नहीं था कि किसी से मिलकर मैं इतनी विपरीत धारणा भी बना सकता हूँ। गीताश्री को सदा मैंने बिंदास मूड में दबंग देखा। मुझे लगा भी ऐसा कि

गीताश्री बिना लिहाज कुछ भी कह सकती है और भावुकता से कोसों दूर है। पर मेरा ये भ्रम 17 मार्च को सुबह हुए सम्मान समारोह कार्यक्रम में छिन्न-भिन्न हो गया। वैसे गीताश्री के पास किसी को भी छिन्न-भिन्न करने की क्षमता है। पर उस दिन सूर्य के पश्चिम में उदय जैसा था। गीताश्री को मनीषा के उपन्यास 'मल्लिका' पर बोलना था। वह बोलते-बोलते बहुत भावुक हो रही थी पर अपने आत्मिक बल से उसे पीछे धकेल रही थी। गीताश्री जब बोलकर आई तो पूरा हॉल तालियों से गूँज उठा। वह मेरे पास ही बैठी थी। जब बोलकर मंच से मेरे पास आकर बैठी, तो वह दूसरी गीताश्री थी। आँख में अत्यधिक संवेदना से भरे आँसू नहीं थे पर उसकी पूर देह जैसे संवेदना से भीगी हुई थी। मैंने जब उसकी प्रशंसा में 'दो शब्द' ही बोले तो उसने मेरा हाथ ऐसे दबाकर थामा जैसे कोई नन्हा-सा बच्चा सहमा अपनी सुबुक को रोकने के प्रयास में कोई आत्मीय हाथ चाहता है। गीताश्री इतनी संवेदनशील होगी मैंने...।

पारुल सिंह से तो पहली बार मिला। ऐसे भी लोग अभी शेष हैं जो अपने आज को बेहद जीवंतता से जीते हैं। जो पागलपन की सीमा तक अपने आस-पास जो संबंध बना लेते हैं, उसे जीते हैं। कितना प्रेरक संदेश दिया था पारुल ने उस दोपहर – 'लड़कियों किसी की चिंता मत करो, बिंदास जियो। अपने अंदर की सुंदर लड़की को ज़िंदा रखो।'

17 की शाम भोपाल के ताल में कविता भरी शाम तो थी ही, पंकज ने इसे मेरे, पारुल, सनी के लिए विशेष बना दिया। पंकज सुबीर के मार्गदर्शन में ढींगरा फ़ाउण्डेशन और शिवना प्रकाशन की पूरी टीम ने सनी, पारुल सिंह और मेरे जन्मदिन की पूर्व संध्या को आत्मीयता एवं शुभकामनाओं से भर दिया। क्रूज़ में आयोजित काव्य संध्या में तीन लोगों के जन्मदिन का केक काटा गया। अपने साहित्यिक परिवार के साथ जन्मदिन का मुझे सुख उठाने का अवसर देने के लिए शुक्रिया पंकज सुबीर।

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन का संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' राज्य संग्रहालय के

सभागार में आयोजित हुआ था। इसके विवरण को मैं शिवना द्वारा प्राप्त रपट का सहारा ले प्रस्तुत कर देता हूँ। कार्यक्रम का शुभारंभ ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। तीन सत्रों में आयोजित हुए इस समागम में शिवना प्रकाशन की पुस्तकों का विमोचन तथा रचना पाठ भी शामिल रहा, जिसमें हिन्दी के महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों ने भाग लिया। प्रथम सत्र 'सम्मानित रचनाकारों का पाठ' की अध्यक्षता डॉ. उर्मिला शिरीष ने की तथा मुख्य अतिथि श्री महेश कटारे थे। इस सत्र में सम्मानित रचनाकारों ने अपनी सम्मानित रचनाओं का पाठ किया। सम्मानित रचनाकारों की कृतियों पर श्री बलराम गुमाश्ता, श्री विनय उपाध्याय, श्री समीर यादव तथा डॉ. गरिमा संजय दुबे ने टिप्पणी की।

दूसरे सत्र 'अलंकरण समारोह' में अध्यक्षता श्री संतोष चौबे ने की जबकि मुख्य अतिथि श्री पलाश सुरजन थे। सभी सम्मानों के तहत सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल तथा सम्मान पट्टिका प्रदान की गई। सम्मान समारोह में प्रदान किए गए सम्मानों में 'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन लाइफ़ टाइमसम्मान' डॉ. कमल किशोर गोयनका को, ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' उपन्यास विधा में मनीषा कुलश्रेष्ठ को उपन्यास 'मल्लिका' हेतु तथा कहानी विधा में मुकेश वर्मा को कहानी संग्रह 'सत्कथा कही नहीं जाती' हेतु प्रदान किया गया। शिवना प्रकाशन का 'शिवना अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' गीताश्री को उपन्यास 'हसीनाबाद' के लिए, 'शिवना अंतर्राष्ट्रीय कविता सम्मान' वसंत सकरगाए को कविता संग्रह 'पखेरू जानते हैं' तथा 'शिवना अंतर्राष्ट्रीय कृति सम्मान' उपन्यास 'पार्थ तुम्हें जीना होगा' के लिए कथाकार, कवयित्री ज्योति जैन को प्रदान किया गया।

तीसरे सत्र 'विमोचन समारोह' में शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित बीस पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेम जनमेजय ने की जबकि मुख्य अतिथि के रूप में श्री शशिकांत यादव उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री संतोष

चौबे ने कहा कि बड़ी प्रसन्नता की बात है कि भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है, इससे भोपाल की साहित्यिक गतिविधियों को और बल मिलेगा। श्री पलाश सुरजन ने साहित्य की विधाओं के बीच पारस्परिक अंर्तसंबंधों पर काम किए जाने की बात कही, तथा देश के बाहर काम कर रहे हिन्दी सेवियों की सराहना की। डॉ. उर्मिला शिरीष ने कहा कि भोपाल में एक नई शुरूआत आज होने जा रही है, जो कार्यक्रम पूर्व में अमेरिका और कैनेडा में आयोजित हुआ अब वह भोपाल में आयोजित हो रहा है।

श्री महेश कटारे ने कैनेडा यात्रा के अपने संस्मरण सुनाते हुए फ़ाउण्डेशन को साधुवाद दिया। डॉ. प्रेम जनमेजय ने शिवना प्रकाशन और ढींगरा फ़ाउण्डेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थाएँ बड़ा काम कर रही हैं।

(इस अवसर पर मैंने अपने वक्तव्य रूप में एक रचना पढ़ी। जिसमें मैंने कहा -पहले तो, मुझे लोकार्पण विशेषज्ञ बनाने का धन्यवाद। इतनी पुस्तकों के लोकार्पण कर कोई विशेषज्ञ बन जाए ये सहज संभाव्य है। अब मैं अपने बायो डेटा में लिख सकता हूँ कि मैं लोकार्पण विशेषज्ञ हूँ। आपने मुझे इस महत्त्वपूर्ण संस्था का हिस्सा मानकर प्रसन्नता दी है पर मेरे कुछ सहयात्री मित्र आलोचकों को नोंचने के लिए खम्बे दे दिए हैं। जब खम्बे नुचते नहीं तो हाथों में पीड़ा जन्म ले लेती है और गाली बन बरसने लगती है। मैं उनको अपने आँगन की कुटी में छवा रखा है। वे देख लें कि मैं कुर्ता पहन लोकार्पण कर रहा हूँ या बंद गले का कोट। दाएँ हाथ से कर रहे हूँ या बाएँ से। लोग होली पर कीचड़ फेंकते हैं पर जैसे सदाबहार पत्थरबाज़ होते हैं वे कीचड़बाज़ हैं। वे गला फाड़ चिल्लायेंगे। मित्रों किसी पुस्तक का लोकार्पण करना मेरे लिए चुनौती जैसा है।

जब भी मैं किसी पुस्तक का लोकार्पण करता हूँ तो लगता है जैसे वो पुस्तक मुझसे पूछ रही है -है लोकार्पण कर्ता तू जानता भी है कि लोकार्पण क्या होता है? कहीं तू उस देशसेवक सा तो नहीं जो ये नहीं जानता कि देश सेवा क्या होती है, पर कर रहा है। या फिर उस छपासू लेखक सा है जो नहीं जानता कि लेखक किसे कहते हैं, उसके सामाजिक सरोकार क्या होते हैं पर लिखे जा रहा है।

और मुझे ये भी कह कि तू कैसा लोकार्पण कर्ता है? क्या तू प्रधानमंत्री टाइप लोकार्पण कर्ता है जो अभिवादन के लिए हाथ हिलाता है पर पता नहीं किसके अभिवादन के लिए हाथ हिला रहा है। और जिसके भी अभिवादन के लिए हाथ हिला रहा है वो भीड़ में कुछ देर को मुस्कराता है, भीड़ में पिसता है और फिर खो जाता है। या तू उस वोटार्थी नेता सा लोकार्पण कर्ता है जो चुनाव काल में ग़रीब के झोंपड़े के भोजन का लोकार्पण करता है, फोटू खिंचवाता है और अगले ग़रीब की तलाश में पिछले को भूल जाता है। कहीं तू उस डॉक्टर सा तो नहीं जो एक साथ 5 -6 प्रसव कराने का रिकॉर्ड बनाता है और नहीं जानता कि प्रसव पीड़ा क्या होती है। जो नहीं जानता कि जो कृति उसने लोकार्पित की है उसे उसके जन्मदाता ने अपने रक्त और माँस द्वारा सींचा है। कृति निर्माण की नौ माहीय पीड़ा गौण हो जाती है और तेरे कर कमल प्रमुख हो जाते हैं। तेरे कर कमल प्रयत्न पूर्वक तैयार किये रैपर को बेरहमी से खोलते हैं और न खुले तो बेरहमी से उसकी चीर-फाड़ कर देते हैं जैसे कोई बलात्कारी दुष्कर्म करता है।) आदि आदि।

श्री शशिकांत यादव ने कहा कि भविष्य में यह दोनों संस्थाएँ हिन्दी साहित्य की प्रमुख संस्थाएँ होंगी। डॉ. कमल किशोर गोयनका ने ढींगरा फ़ाउण्डेशन द्वारा किए जा रहे साहित्यिक और सामाजिक कार्यों का ज़िक्र करते हुए फ़ाउण्डेशन की मुक्त कंठ से सराहना की।

लिखने को बहुत कुछ है, क्योंकि बहुत ऐसे हैं जिन पर बहुत कुछ कहना है। बहुत कुछ छूट गया है, पर ... वो, गतांक से आगे, फिर कभी।

❐❐❐

आज तक जो ना हुआ, अब ना होगा यार

आलेख : बुधराम यादव
'मनोरथ', एमआईजी- ए/8, चंदेला नगर, रिंग रोड नंबर 2, बिलासपुर, छत्तीसगढ़
मोबाइल- 9755141676

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका और शिवना प्रकाशन के साहित्य समागम में एक अदना से कृतिकार की हैसियत से शामिल होकर संपूर्ण आयोजन की उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय सफलता का प्रत्यक्ष साक्षी होना मेरे जीवन का एक श्रेष्ठ सुखद संयोग कहूँ तो कोई अत्युक्ति नहीं। मैं मानता हूँ कि इस अप्रत्याशित संयोग के केंद्र में मेरी हिंदी की प्रथम कृति ''वक़्त की गवाही'' गीत संग्रह है। इस संदर्भ में तुलसी की यह पंक्तियाँ मुझे बरबस याद आती हैं कि

तुलसी जस भवतव्यता, तैसी मिलइ सहाय।
आपुन आवइ ताहि पन्ह, ताहि तहाँ लइ जाय ॥

शिवना साहित्य समागम में मेरा इस तरह सम्मलित हो पाना निश्चित ही कुछ ईश्वरीय चमत्कार जैसा है। इसे स्पष्ट करने में कुछ पीछे के परिदृश्य में जाना चाहूँगा।

प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी संस्थान बिलासपुर (छत्तीसगढ़) की ओर से विगत 26 फरवरी 2019 को माउंट आबू यात्रा पर जाने आने हेतु दो माह पूर्व मेरा टिकट आरक्षित हो चुका था। लगभग 10 रोज़ पूर्व संस्था के सेंटर प्रमुख से मैंने जाने में अपनी असमर्थता बताकर संस्था के सेंटर प्रमुख से टिकट रद्द कराने अनुरोध किया था। संयोग देखिए कि ठीक इसी बीच विगत 24 फरवरी को सीहोर में सेवारत मेरे ज्येष्ठ पुत्र समीर यादव ने फ़ोन पर आवश्यक सूचना की तरह अवगत कराते हुए यह निवेदन किया कि मध्यप्रदेश में शिवना प्रकाशन सीहोर के तत्वावधान में 15 मार्च से 17 मार्च तक वृहत् साहित्य समागम है। 15 और 16 मार्च सीहोर में और 17 मार्च भोपाल में। 17 मार्च को भोपाल में आयोजित समागम में साहित्य एवं साहित्यकारों पर चर्चा परिचर्चा के अतिरिक्त अनेक साहित्य कृतियों का विमोचन भी होना है। आगे विनम्र एवं सुझाव युक्त स्वर में समीर ने कहा कि मैं अपनी हिंदी रचनाओं की पांडुलिपि जो विगत दो-तीन वर्षों से प्रकाशन की प्रतीक्षा में है, यथासंभव 28 फरवरी 2019 तक सीहोर भेज दूँ। आश्वस्त करते हुए समीर ने कहा कि बाबूजी 17 मार्च को इस कृति का भोपाल में विमोचन भी हो जाएगा। मुझे यह सुनकर इतनी उर्जा मिली और इतना संबल आया कि मैंने पांडुलिपि का पुनरावलोकन कर, छत्तीसगढ़ के दो विशिष्ट साहित्यिक हस्तियों से कृति ''वक़्त की गवाही'' के लिए भूमिका आलेख लेकर, 28 फरवरी को शिवना प्रकाशन सीहोर संप्रेषित करने में सफल हो पाया। इस बीच साहित्य समागम भोपाल में शामिल होने एक सीज़न स्पेशल ट्रेन टिकट भी आरक्षित करा लिया, जिसने यात्रा के दौरान अपनी लेटलतीफी से सबको थका दिया।

14 मार्च की रात्रि 8:00 बजे भोपाल से समीर के साथ सीहोर पहुँचा। कार्यक्रम के अनुसार रात्रि भोजन आगन्तुक साहित्यकारों के साथ शिवना प्रकाशन सीहोर के संस्थापक, निदेशक, प्रतिभावान साहित्यकार भाई पंकज सुबीर के निवास पर हुआ, जिसमें मैं समीर के साथ शामिल हुआ। ढींगरा फ़ैमिली फाउण्डेशन के प्रमुख डॉ. सुधा ओम ढींगरा, डॉ. ओम ढींगरा, सहित देश के ख्यातिनाम व्यंग्यकार डॉक्टर प्रेम जनमेजय, सुप्रसिद्ध कथाकार सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री पारुल सिंह, श्री नीरज गोस्वामी आदि के सौजन्य में यह पंकज परिवार का नितांत आत्मीय और पारिवारिक भोज का आनंद स्मरणीय रहेगा।

15 मार्च को ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका के सहयोग से संचालित निशक्त, निर्धन और असहाय बालिकाओं के सहायतार्थ कंप्यूटर प्रशिक्षण संस्थान सीहोर जिसका कुशल संचालक भाई पंकज सुबीर हैं, उस आयोजन में उपरोक्त सभी साहित्यकारों के साथ समीर सहित सहभागी रहा। छात्राओं को संबोधित करते हुए डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने खुद के जीवन से जुड़ी विसंगतियों पर विजय पाने की दास्ताँ सुनाई, जो बेहद प्रेरणादायक रही...

मानना पड़ेगा कि -
खुद को ही जो जीत ले, जीत बड़ी वह सार
संग हज़ारों दौड़ते, तज अपने घर द्वार
चमकने के लिए तपना तो पड़ता है-
अगर चमकना चाहते, सूरज जैसे आप
तब उस दिनकर ही तरह, सहना होगा ताप

16 मार्च को नोएडा से आए हास्य कलाकार विभोर चौधरी का हल्का-फुल्का मनोरंजन कार्यक्रम में सभी उपरोक्त साहित्यकारों के साथ सम्मिलित हुआ। इस आयोजन के अभ्यागतों में शामिल महामंडलेश्वर आदरणीय पंडित अजय पुरोहित का गंभीर, विद्वतापूर्ण, संदेशपरक और समीक्षात्मक उदबोधन पंकज सुबीर के उपन्यास ''अकाल में उत्सव'' पर सुनना एक सुकून दे गया। मुझे यह सूत्र याद आता है कि ...

करें सुजन की संगति, और गुणों का गान।
खुद के भी व्यक्तित्व को, गढ़ते रहें सुजान ॥

17 मार्च 2019 को राज्य संग्रहालय श्यामला हिल्स भोपाल में आयोजित साहित्य समागम दिन और रात के चार सत्रों में संपन्न हुआ। दिन के तीन सत्रों का सफल, कुशल तथा बेहद अनुशासित संचालन संस्था के भारत संयोजक प्रखर वक्ता भाई पंकज सुबीर ने किया।

प्रथम सत्र में सम्मानित रचनाकारों का रचना पाठ एवं उन पर संक्षिप्त टिप्पणी के अंतर्गत सुश्री गीताश्री के प्रसिद्ध उपन्यास

हसीनाबाद पर समीर यादव ने टिप्पणी की। जिसे साहित्य मंडली द्वारा संयमित, कसी हुई और विवेकपूर्ण समीक्षात्मक टिप्पणी की सूरत में सराहा गया। समीर को पहली बार साहित्य समारोह में बेधड़क इस तरह बोलते सुनकर लगा कि वह बहुत संभावनाओं से युक्त है।

द्वितीय सत्र अलंकरण समारोह के रूप में रहा। तृतीय सत्र में शिवना प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तकों का अभ्यागत साहित्यकारों के हाथों विमोचन की प्रक्रिया पूरी की गई। जिसके अंतर्गत एक दर्जन से अधिक अत्यंत सामयिक और महत्त्वपूर्ण कृतियाँ रही। मेरी कृति ''वक़्त की गवाही' भी विमोचित हुई। इसमें मेरे साथ समीर को भी सम्मान के साथ बुलाया गया, यह क्षण अपने आप में ''वक़्त की गवाही'' बन गया।

द्वितीय और तृतीय सत्र में अतिथि साहित्यकार मंच पर थे। इनमें सर्वश्री डॉ. प्रेम जनमेजय, अध्येता और विद्वान श्री संतोष चौबे, प्रेमचंद साहित्य के विद्वान श्री कमल किशोर गोयनका, प्रसिद्ध कवि श्री शशिकांत यादव, श्री पलाश सुरजन, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, डॉ. उर्मिला शिरीष, श्री नीरज गोस्वामी, सुश्री ज्योति जैन प्रमुख रहे।

चतुर्थ सत्र के रूप में रात्रि 8:00 बजे से 10:00 बजे तक आमंत्रित लगभग 70 उपस्थित साहित्यकारों के बीच भोपाल के बड़े ताल में नौका विहार करते हुए प्रसिद्ध मंच संचालक शशिकांत यादव के संचालन में कविता पाठ का बसंती आनंद लिया गया। यह भी मेरे लिए ख़ास अनुभव था। नौका विहार और रचना पाठ जिसमें श्री प्रेम जनमेजय, सुश्री पारुल और पंकज सुबीर जी के सहयोगी सनी के जन्मदिन का उत्सव भी मनाया गया। इसके बाद बड़े तालाब के निकट ही भव्य रेस्तराँ में सामूहिक भोज का अनोखा अनुभव रहा।

इस पूरे समागम को विविध स्वरूप में पूरी शालीनता, गरिमामय और सराहनीय अनुशासित ढंग से संपादित करने में श्री पंकज सुबीर ने जिस पुरुषार्थ का परिचय अपनी टीम के शहरयार जैसे सदस्यों के साथ दिया, उनकी कार्यशैली के साथ जीवन शैली को दर्शाता है। उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हुए इन पंक्तियों से अविस्मरणीय यादें समेटे लेखनी को विराम देता हूँ।

– आज तक जो ना हुआ, अब ना होगा यार।
मिथक तोड़ने लग रहे, तुम हरदम तैयार ॥

❐❐❐

यह साहित्यिक कुंभ स्मरणीय रहेगा

डॉ. कमल किशोर गोयनका

यह साहित्यिक कुंभ स्मरणीय रहेगा। सुधा जी और ओम जी की जोड़ी अमेरिका और भारत में प्रशंसनीय कार्य कर रही है। इसे सीहोर के पंकज जी ने संगम का सौंदर्य देकर सेतु बनकर संभव बनाया है। सुधा जी की अस्वस्थता से मैं मन में चिंतित था लेकिन पंकज जी तथा उनकी टीम की व्यवस्था और संचालन के कौशल ने इसे उत्सव बना दिया। कुछ विख्यात लेखक/लेखिकाओं से भेंट हुई और उनकी जीवंतता एवं शालीनता का अनुभव हुआ। इसकी सफलता के लिए सभी को बधाई। यह साहित्य यात्रा का एक स्मरणीय परिदृश्य है और आशा करता हूँ कि सहयात्रियों को सम्मान देने और उनसे सुनने तथा उनके प्रति यथोचित सद्भाव का भाव बना रहेगा।

❐❐❐

हिन्दी लेखिका संघ ने किया सुधा ओम ढींगरा का सम्मान

भोपाल में आयोजित 'साहित्य समागम' के दौरान हिन्दी लेखिका संघ की सदस्याओं ने सुधा ओम ढींगरा को सम्मानित किया। हिन्दी लेखिका संघ की अध्यक्ष सुश्री अनिता सक्सेना तथा चालीस से अधिक सदस्याओं ने कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज की। सुश्री अनिता सक्सेना ने शॉल, श्रीफल, पुष्प गुच्छ तथा स्मृति चिह्न भेंट कर सुधा ओम ढींगरा को सम्मानित किया। इस अवसर पर बोलते हुए अनिता सक्सेना ने कहा कि सुधा जी की मैं बड़ी प्रशंसक हूँ, आपका उपन्यास और कहानियाँ बहुत ही बढ़िया हैं। अमेरिका में रहकर आप हिंदी के लिए बहुत कार्य कर रही हैं, मेरी पिछली यात्रा में मैंने रामलीला और नाटकों को लेकर किये गए आप के कार्यों को देखा था और बहुत सराहा था। आप प्रवासी साहित्यकारों के लिए बहुत कार्य करती हैं। आपका साहित्य के प्रति समर्पण और कार्य कई साहित्यप्रेमियों और लेखकों को प्रोत्साहित करता है। आप से मिलना और बात करना हमेशा से ही बड़ा सुखद अनुभव होता है।

मुख़्तलिफ़ आवाज़ें....और एक भीनी याद....

आलेख : वसंत सकरगाए
ए / 5, कमला नगर, भोपाल, मप्र 462003
मोबाइल : 9977449467

अंतर्राष्ट्रीय शिवना कविता सम्मान से पहले भी कविता और साहित्यिक पत्रकारिता के निमित्त कुछ महत्त्वपूर्ण सम्मानों से सम्मानित हुआ हूँ। लेकिन 17 मार्च 2019 को सुखद संयोग यह भी रहा कि राज्य संग्रहालय सभागार के मंच से सम्मानित होने का यह दूसरा मौका था। इससे पूर्व यहाँ मेरे पहले कविता-संग्रह 'निगहबानी में फूल' को म.प्र.साहित्य अकादमी द्वारा दुष्यंत कुमार सम्मान प्रदान किया गया था। शिवना कविता सम्मान और प्राप्त दीगर सम्मानों के बीच फ़र्क़ ठीक वैसा ही था, जो ताज़ा खिलते गुलाबों के बाग़ीचे में कुछ देर गुज़ारने और गुलाब के इत्र को फाहे में उड़ेलकर कान की पोर में रखने अथवा कपड़ों पर मलने की कवायद से महकाने के दरमियाँ होता है। यानि कृत्रिमता और नैसर्गिकता के बीच बनावट और बुनावट के फ़ासले को ठीक-ठीक महसूस करना। और इस फ़र्क़-फ़ासले को कमोबेश सभी ने अंतर्मन से अनुभव किया। अहसास ख़र्च का नहीं, नीयत में मौजूदा अर्ज का था। बेशक आकर्षक मंच की चिलक और सुव्यवस्था, आयोजन और रचनात्मकता के प्रति निष्ठा, उदारता और गरिमा का परिचायक थी। लेकिन ख़ास तस्दीक़ थी, वरिष्ठ कथाकार तथा ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका की सूत्रधार डॉ. सुधा ओम ढींगरा और उनके जीवनसाथी श्री ओम ढींगरा का सभी आगुंतकों का तहेदिल से इस्तक़बाल ...सच, मन भीग गया। ढींगरा-दम्पति से यह पहली मुलाकात थी। मगर कहना ग़लत न होगा कि ढींगरा-दम्पति के व्यक्तित्व में सहजता, सौम्यता और पुलक का अद्भुत मिश्रण देखने को मिला। तब, जबकि सुधा जी गहरी अस्वस्थता के बावजूद अमेरिका से दिल्ली फिर भोपाल तक लगातार हवाई यात्रा कर उपस्थित हुईं। बतर्ज़-शो मस्ट गो ऑन!

व्यक्तिगत तौर पर इस साहित्य समागम की यह अनूठी तारीख़, तारीफ़ और अपनत्व का इस मायने में यादगार तोहफ़ा थी कि यहाँ साहित्यिक कुंठा लेशमात्र देखने-सुनने में नहीं आई। ऐसा नहीं कि चाय और भोजनावकाश (और कार्यक्रम के दौरान होनेवाली कानफुसाई टीका-टिप्पणी) के बीच साहित्यिक चर्चा और बहस-मुबाहिसें नहीं हुईं लेकिन बातचीत तल्ख़ी और पूर्वाग्रहों से भरी हुई नहीं थी, जैसी कि आमतौर पर आयोजन परिसर में अक्सर सर चकराने और उबकाई की शिकायतें आम होती हैं। सम्मानित रचनाकारों के रचना-पाठ और इन रचनाकारों के रचनाकर्म पर एकाग्र टिप्पणी के प्रथम सत्र और दूसरे-तीसरे सत्र के बीच भोजनावकाश के वे कुछ मिनट इस बात की बानगी पेश करते रहे। हमेशा सजग और अलहदा दृष्टि से सम्पन्न वरिष्ठ साहित्यकार संतोष चौबे, संपादक पलाश सुरजन, कथाकारत्रयी डॉ. उर्मिला शिरीष, महेश कटारे, मुकेश वर्मा और कवि बलराम गुमाश्ता सहित हम कुछ लोग, पेड़ की छाँव में लगी कुर्सियों पर बैठकर कविता और कहानी के मौजूदा परिवेश पर बातचीत तो कर रहे थे किन्तु बातचीत के केंद्र में रचनाधर्म था ना कि किसी रचनाकार की व्यक्तिगत मीमांसा अथवा छीछालेदर। विचारों का बिल्कुल स्वस्थ आदान-प्रदान। इसीलिए यह तारीख़ न सिर्फ़ सम्मानित, समागम में उपस्थित रचनाकारों के अलावा दीगर साहित्य-सृजनधर्मियों के लिए तारीफ़ का तोहफ़ा थी। कुछ ऐसा ही वातावरण दोपहर-भोज के दौरान हाल में रहा, डॉ. कमल किशोर गोयनका, प्रेम जनमेजय, यशस्वी कला-समीक्षक व सितारा उद्घोषक विनय उपाध्याय आदि तब कथा कविता के विभिन्न आयामों पर चर्चा कर रहे थे।

मेरे लिए यह दिन इसलिए अविस्मरणीय रहेगा कि अभिन्न मित्र विनय उपाध्याय ने न सिर्फ शब्द-संसार में मेरी आमद और बाद के दिनों में मेरे कविता-कर्म की यात्रा का बेलाग लेखाजोखा पेश किया। बल्कि यह पहला मौका था जब विनय ने सम्मानित कविता-संग्रह से -'पिता की विरासत' कविता का इतना भावभीना पाठ किया कि कविता सचमुच जीवंत हो गई। मेरे लिए व्यक्तिगत उपलब्धि यह भी रही कि अलंकरण-सत्र के अध्यक्षीय उद्बोधन के दौरान श्रद्धेय संतोष चौबे जी ने अपनी आलोचना-कृति-'कला-संगत' के पन्नों में शामिल मेरे कविता-संग्रह-'निगहबानी में फूल' पर अपनी बात रखी, बल्कि 'पखेरु जानते हैं' पर समयाभाव के बीच बहुत कम लेकिन मानीखेज़ बात कही। साथ ही सम्मानित संग्रह से कविता-'लापता हो रहे हैं पते वाले पेड़' का पाठ कर उपस्थित श्रोताओं को अभिभूत किया। आयोजन इस अर्थ में भी स्मरणीय रहेगा कि मंच के सूत्रधार और चर्चित कथाशिल्पी पंकज सुबीर का मंच-संचालन अलग-अलग स्तरों पर देखने को मिला। प्रतुत्पन्नमति सम्पन्न मंच-सचालक की शाइस्तगी और सब्र के बीच वाकई ऐसे क्षण कठिन चुनौती भरे होते हैं। हालाँकि,जैसा अकसर होता है तयशुदा ढंग से दिए गए समय की आवृति में न रहकर वक्ता अपने विचारों के अतिरेक का संवरण नहीं कर पाते और श्रोता सारगर्भित की अपेक्षा से परे ऊब के शिकार होते हैं। यहाँ पंकज ने हर बार के संकेत में वक्ताओं को नियंत्रित रखने की कोशिशें भी कीं। इन सबके बीच विरल उदाहरण की तरह टिप्पणीकार विनय उपाध्याय अपने सीमित समय में यह कहते हुए बेहद उम्दा पेश आए कि पत्रकारिता ने मुझे स्थान और आकाशवाणी ने समय को उसकी सीमा में बरतने का सबक दिया है। विनय के बाद मैं भी अपने पाठ के दौरान समय की सरहद में बँध गया। ...और तालियों के प्रतिसाद ने श्रोताओं के मन की बात कह दी। ....और इस तरह एक क़स्बा(सीहोर),(जिसकी गुहार-आग्रह पर एकत्र देशभर के स्वनामधन्य साहित्यकार अपनी कुब्बत के साथ भेले हुए)राजधानी (भोपाल)की साहित्यिक चौखट पर पुरज़ोर दस्तक देता रहा।

❐❐❐

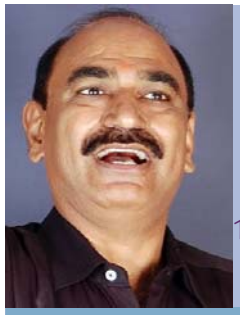

एक मीठा अनुभव जल तरंगों पर कविता का

आलेख : चौधरी मदन मोहन समर
16, श्री होम्स, चूना भट्टी, कोलार रोड, भोपाल, मप्र 462042
मोबाइल : 9425382012

शिवना प्रकाशन और ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन ने भोपाल में एक अविस्मरणीय सहित्यिकी अनुष्ठान किया। सीहोर निवासी भाई पंकज सुबीर और अमरीका के हवा-पानी में रच बस कर भी भारत की मिट्टी को अपने माथे पर धरने वाले डॉ. सुधा व डॉ. ओम ढींगरा का यह संयुक्त प्रयास शहर को ताज़ी सुगन्धि से सराबोर कर गया। इसका समापन भोपाल सहित उन लोगों के लिए एक ऐसी याद देकर गया, जो लंबे समय तक सभी को गुदगुदाती रहेगी।

मुझे भी आमंत्रित किया गया था काव्यपाठ हेतु। काव्यपाठ था विश्व प्रसिद्ध भोपाल की झील में तैरते हुए क्रूज़ पर। शाम 7 बजे से। भोपाल की शाम वैसे ही बेहद आकर्षक होती है फिर झील की हथेलियाँ और कविता के पंख। मन ये उड़ा वो उड़ा की सार्थकता यही तो थी। बेहद चुनिंदा आमंत्रित 75 लोग जिसमें 12 लोगों को काव्यपाठ करना था। संचालन था भाई शशिकांत यादव का और आमंत्रण था भाई पंकज सुबीर का। अब पंकज सुबीर ने आमंत्रण दिया तो आप अंदाज़ लगा ही सकते हैं हिंदी और हिंदी की काव्य-कथा यात्रा के कितने मर्मज्ञ लोग उस शाम के गवाह बने। श्री प्रेम जनमेजय जी, सुश्री गीताश्री जी, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठजी, श्री बुधराम यादव जी, श्री नीरज गोस्वामी जी, श्री बद्र वास्ती जी, श्री आज़म ख़ान जी, श्री समीर यादव जी, श्री मनु व्यास जी आदि श्रेष्ठ जन। साथ में हमारे प्रिय शहरयार ख़ान। एक रोमांचकारी अनुभव था सुनना भी और सुनाना भी।

मैं देख रहा था क्रूज़ से हवा में तैरती रागमय ध्वनि को तट पर खड़े लोग ऐसे समेट रहे थे जैसे किसी तलहटी में आ रहे बादलों को थामने के लिए उतावले हों।

मुझे सभी जानते हैं कि मैं वीर रस में देशभक्ति की बात करता हूँ। लेकिन उस दिन झील से आती प्रेमिल फुहारों ने मुझे इतना सिक्त कर दिया कि मैंने मेरी कविता ''सुनो जी'' सुनाई, जिसमें पति-पत्नी के एक उम्र के बाद यादों के पिटारे में बँधे दिन उन्हें बुलाते हैं। मैं देख रहा था कि सारे श्रोता मेरे इस अकल्पनीय शब्द विन्यास को सराह रहे थे जिससे मुझे ऊर्जा मिली। अकल्पनीय इसलिए कि मुझसे राष्ट्र की आराधना सुनने वालों के लिए भी यह एक अलग ही अनुभव था।

पंकज सुबीर जी बधाई के पात्र हैं। साथ ही डॉ. सुधा ओम ढींगरा जी का भी हम भोपाल वालों की तरफ से धन्यवाद है जिन्होंने एक महत्त्वपूर्ण आयोजन के लिए भोपाल को चुना। सात समंदर पार अमरीका से भोपाल का आपका सफ़र हमें हमेशा स्मरण रहेगा। और यह उम्मीद भी है कि भोपाल में इस प्रकार के अनूठे और अनुशासित समारोह ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन और शिवना प्रकाशन द्वारा और भी किए जाते रहेंगे।

❑❑❑

फार्म IV
समाचार पत्रों के अधिनियम 1956 की धारा 19-डी के अंतर्गत स्वामित्व व अन्य विवरण (देखें नियम 8)।
पत्रिका का नाम : शिवना साहित्यिकी
1. प्रकाशन का स्थान : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001
2. प्रकाशन की अवधि : त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम : जुबैर शेख़।
पता : शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स, ज़ोन 1, एमपी नगर, भोपाल, मप्र 462011
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
4. प्रकाशक का नाम : पंकज कुमार पुरोहित।
पता : पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मप्र, 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
5. संपादक का नाम : पंकज सुबीर।
पता : रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
4. **उन व्यक्तियों के नाम / पते जो समाचार पत्र / पत्रिका के स्वामित्व में हैं। स्वामी का नाम :** पंकज कुमार पुरोहित। **पता :** रघुवर विला, सेंट एन्स स्कूल के सामने, चाणक्यपुरी, सीहोर, मप्र 466001
क्या भारत के नागरिक हैं : हाँ।
(यदि विदेशी नागरिक हैं तो अपने देश का नाम लिखें) : लागू नहीं।
मैं, पंकज कुमार पुरोहित, घोषणा करता हूँ कि यहाँ दिए गए तथ्य मेरी संपूर्ण जानकारी और विश्वास के मुताबिक सत्य हैं।
दिनांक 20 मार्च 2019
हस्ताक्षर पंकज कुमार पुरोहित
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

हम भी वहीं मौजूद थे.....

आलेख : डॉ. आज़म
41, रिलायबल हाइटैक सिटी, पिपलानेर, एयरपोर्ट रोड, भोपाल मप्र -462036
मोबाइल : 9827531331

दिल में हलचल मची हुई थी। तब से ही, जब से पता चला था कि भोपाल में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के प्रतिष्ठा आयोजन ''साहित्य समागम एवं सम्मान समारोह'' के अंतर्गत राज्य संग्रहालय, भोपाल में दिन भर के लिए मैं भी आमंत्रित हूँ। शिवना प्रकाशन और पंकज सुबीर से आश्नाई भी थी और दोस्ती भी। अलबत्ता जब पंकज सुबीर ने बताया कि विशेष रूप से डॉ. सुधा ओम ढींगरा का आग्रह है कि मैं अवश्य हाज़िर रहूँ। उनसे मिलने को मेरी भी उत्कंठा थी।

बहरहाल 17 मार्च भी आ गया और मैं नियत समय पर राज्य संग्रहालय के आकर्षक परिसर में पहुँच गया। पार्किंग एरिया में कारों की भरमार से, कार्यक्रम की भव्यता का अंदाज़ा हो रहा था। मैंने थोड़ी दूर अपनी कार पार्क की। डेढ़ दशक से कार चलाते रहने के बावजूद अब भी न तो मेरी ड्राइविंग संतोषजनक है न पार्किंग दक्षता उत्साहजनक। इसलिए ऐसा करना पड़ता है। ख़ैर सभागार के चारों ओर बड़े-बड़े बैनर-पोस्टर लगे थे। प्रवेश द्वारा वाले कक्ष में बड़े क़रीने से रखी पुस्तकें ध्यान आकर्षित कर रही थीं। एक तरफ़ प्रवेश / पहचान पत्र फैला कर रखे हुए थे। अतिथि विद्वान, अतिथि रचनाकार आदि-आदि। कहीं से शहरयार आ गया। उसने मेरे नाम की पट्टिका मुझे पहना दी। अच्छा लगा कि आयोजन में मैं एलियन की तरह नहीं हूँ बल्कि बाक़ायदा एक पहचान के साथ पूरे अधिकार से भागीदार बना रहूँगा। किताबों में मेरी दोनों पुस्तकें क़रीने से रखी हुई थी। इससे दिल को आनंद का आभास हुआ।

तभी मुझे सुधा जी दिखाई दीं। बिल्कुल अपनी तस्वीरों की हूबहू। हँसते-मुस्कुराते अभिवादन करते हुए मैंने- ''नमस्कार! क्या आपने मुझे पहचाना?''

''नमस्कार! भला कैसे नहीं पहचानूँगी... आपकी समीक्षा मेरी पुस्तक पर कैसे भूल सकती हूँ।''

उनसे मिलकर बड़ा अच्छा लगा। हाल में अंदर हर सीट पर एक थैला रखा हुआ था। थोड़ी देर तक असमंजस में रहा। या अल्लाह! सारी कुर्सियाँ ही आरक्षित हैं। लोग रूमाल आदि रख कर अपनी कुर्सी / सीट रिज़र्व करते आए हैं और हम सब यही देखते आए हैं। तभी एक परिचित ने मुझे हाथ दिया और अपने पास बिठा लिया। तब पता चला कि आयोजकों की ओर से यह एडवांस ग़िफ्ट है। रिजर्वेशन नहीं।

कार्यक्रम लगभग नियत समय से प्रारंभ हुआ। स्टेज पर कुर्सियाँ बहुत-सी थीं। मगर विराजमान हुए पहले सेशन की अध्यक्ष महोदया डॉ. उर्मिला शिरीष और मुख्य अतिथि महेश कटारे। धोती में कटारे जी को देखकर मुझे मेरे दादा जी याद आ गए। वह भी किसी आयोजन में जाते तो धोती ही पहनते थे। तब धोती पहनना संस्कृति का हिस्सा था। चाहे मुस्लिम हो या हिन्दू। बाद में धोती हिंदू हो गई। और पाजामा-कुर्ता मुसलमान। ख़ैर पंकज पुरोहित ने अपने विशिष्ट तेवर और फ्लेवर के साथ संचालन प्रारंभ किया। उनके शब्दों के चयन और हाज़िर जवाबी का मैं सदैव प्रशंसक रहा हूँ। शब्द ज्ञान और शब्दों के उचित प्रयोग की विधा में वह पारंगत हैं। इस सत्र में बहुत कुछ घटित हुआ, कुछ इतनी तीव्रता से कि पता ही नहीं चला कि क्या हुआ और कुछ इतनी मंथर गति से कि दिल कह उठा ऐसा क्यों किया जाता है। आरंभिक एकाग्रता ऊपर से शालीन मगर अंदर से उद्वेलित भावना में बदलती रही।

मुकेश वर्मा का कहानी पाठ रोचकता से प्रारम्भ ही नहीं हुआ बल्कि अंत तक रोचक बना रहा। मगर वह क्या है न, बहुत लम्बा पाठ तो सभी बर्दाश्त नहीं कर सकते सिवाए धार्मिक आख्यानों के जिसमें अल्लाह / भगवान् का डर या आस्था सुनते रहने पर मजबूर कर देती है। सच मानिए मुझे तो विद्वान लेखक पर बहुत तरस आ रहा था। जब श्रोता आरामदायक कुर्सी पर बैठे-बैठे पहलू बदल रहे थे तब वह बेचारे खड़े-खड़े कितने थक गए होंगे। मेरा जी चाह रहा था कि उन्हें कुर्सी पर बिठा दिया जाए ताकि बैठ कर वह कथा पाठ कर सकें। कहानी में जितने पात्र थे उनका चरित्र चित्रण कमाल का था। एक-एक पहलू पर इतनी बारीकी से निगाह चली गई थी कि चरित्र सजीव हो उठे थे। एक घटना पर आधारित यह कथा थी मगर पात्रों में उलझ कर रह गई। वह जो एक कहानी में 'कहानी पन' होता है न वह ऐसी उलझी कि हम सब यही सोचने में लग गए कि अंत कैसे लेगी यह कहानी। और अंत कुछ आया भी नहीं और श्रोता ही कुछ आभास लगा सकें उस मोड़ तक भी नहीं पहुँचायी गयी। यह अलग बात कि कुछ मानव अंगों के नंगे नामों से कुछ लोग नाक भौं सिकोड़ते नज़र आए। अंततः श्रोताओं के धैर्य की परीक्षा लेती ''कहानी'' समाप्त हुई।

फिर उसके बाद हर वक्ता से क्षमा याचना करते हुए समयाभाव को दृष्टिगत रखते हुए संक्षेप वक्तव्य को भी संक्षिप्त रखने का आग्रह किया गया। गीताश्री, मनीषा कुलश्रेष्ठ, समीर यादव, विनय उपाध्याय, गरिमा दुबे, वसंत सकरगाए, ज्योति जैन को और सुनने की उत्कंठा बनी रही। कम समय में गीताश्री का बिंदास अंदाज़ और समीर यादव का संजीदा आकलन फिर भी यादों में महफ़ूज़ हो गए। वसंत सकरगाए को कविता के लिए पुरस्कृत किया गया। उन्होंने ''जनेऊ'' कविता पढ़ी और तालियों की गड़गड़ाहट बटोरी। मगर मुझ जैसे छांदस कविता के रसिक ऐसी कविताओं से तनिक कम ही आनंदित हो पाते है। ऐसा नहीं कि मुझे ऐसी कविताओं से जिनमें

गद्यांश जैसे वाक्य होते हैं चिढ़ है मगर आप कविता जिस फार्म में भी लिखे उसमें रस तो होना ही चाहिए। सिर्फ ज्ञान बाँटना ही कविता का काम नहीं। सिर्फ ''पंच लाइन'' तक ही सीमित नहीं होती यहाँ 'पंच लाइन' से पहले के मिस्त्रे भी रूखे-सूखे, निस्वाद गद्य जैसे नहीं होने चाहिए। हर लाइन में कवित्व होना चाहिए। लय होनी चाहिए नाटकीयता होनी चाहिए। हर लाइन दूसरी को बढ़ाती नज़र आनी चाहिए। यह नहीं कि 'पंच लाइन' तक पहुँचने के लिए आप न शब्दों के चयन को नज़र में रखे और न लयात्मकता का ध्यान रखें क्योंकि छंदरहित वाक्यों में भी एक लय होती है। अगर पूरी कविता को एक पैराग्राफ में लिख दें तो यह लघुकथा बन जाएगी। ख़ैर इससे यह न समझा जाए कि मैं ऐसी कविताओं का विरोधी हूँ मगर हाँ कविता का मूलतत्व 'रस' मानता रहूँगा। यानि बक़ौल बोदलेपर ''Poems En Prose'' यानी गद्य में पद्य की फीलिंग हो। मुख्य अतिथि महेश कटारे का उद्‌बोधन इतना संक्षिप्त था कि वह अभिवादनों पर ही समाप्त हो गया। अध्यक्षता कर रही डॉ. उर्मिला शिरीष ने पूरे सत्र के कार्यकलापों पर अपनी सारगर्भित बात रखी। और पहला सत्र यूँ अंजाम पाया।

दूसरे और तीसरे सत्र को समाहित करके समय के आभाव को कंट्रोल करने का सराहनीय कार्य किया गया। सभा एक थी सो एक ही अध्यक्ष रहे। गोया कि तीसरे सत्र के अध्यक्ष महोदय को अपनी अध्यक्षता से हाथ धोना पड़ा। मगर घरेलू वातावरण में इतनी आत्मीयता थी कि इसका कोई प्रभाव नहीं दिखा। डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका के क्रिया-कलापों का परिचय दिया। उनकी तबीयत नासाज़ नज़र आ रही थी मगर उनकी हिम्मत काबिल-ए-तारीफ़ थी। सुन कर बहुत अच्छा लगा कि जब सब अपनी-अपनी में लगे हुए हैं कोई फ़ाउण्डेशन ऐसा भी है जो परोपकार के पावन कार्यों में लगा हुआ है। ''ढींगरी फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन'' ''ज़िंदाबाद..... ज़िंदाबाद''

इस बार स्टेज भरा-पूरा था। बल्कि एक-दो कुर्सियाँ बढ़ाने की नौबत सी आ गयी। डॉ. कमल किशोर गोयनका जिन्हें ''आजीवन उपलब्धि पुरस्कार'' से नवाज़ा

जाना था। अध्यक्ष संतोष चौबे, पलाश सुरजन, प्रेम जनमेजय, शशिकांत यादव तथा सभी सम्मान पाने वाले कहानीकार, उपन्यासकार, कवि आदि आदि।

कमल किशोर गोयनका जी ने बड़ा रोचक भाषण दिया। कि कैसे उनके समाज के लोग साहित्य सेवा में आने पर मुझे बर्बाद समझते थे और अब कैसे सब मेरे साथ फ़ोटो खिंचवाने के लिए आतुर रहते हैं। ''प्रेमचंद'' विशेषज्ञ की उनकी ख्याति रही है। उनका कहना था कि लेखक कोई न कोई किरदार ऐसा भी प्रस्तुत करता है जिसमें वह ख़ुद ही होता है। कई बार रचना ही रचनाकार का परिचय होती है। प्रेमचंद को भी उनकी रचनाओं की वजह से निर्धन, निरीह समझ लिया गया है मगर वास्तव में ऐसा नहीं है। इसलिए रचनाओं से रचनाकार का पूर्ण आकलन नहीं किया जा सकता, साहित्य साधना के लिए, सम्पूर्ण जीवन लगाना पड़ता है आदि आदि।

इस पूरे दिन के आयोजन में देखने, सुनने, करने, समझने को बहुत कुछ मिला मगर जिसे मैं उपलब्धि कह सकता हूँ वह था अध्यक्षता कर रहे संतोष चौबे का वक्तव्य। इतना विद्वता भरा, मन मस्तिष्क को झकझोरने वाला, ज्ञान चक्षु विस्फारित करने वाला वक्तव्य ऐसे ही विद्वान वक्ता के बस की बात थी। उन्होंने गोयनका जी की बात पर अपनी बात भी रखी कि रचनाकार जीवन में कैसा भी हो सकता है। नीच, टूच्चा, चुग़ली करने वाला, गंदा मज़ाक़ करने वाला बल्कि इससे भी कहीं बढ़कर यानि चरित्रहीन तक मगर वह अपनी कला में महान् होता है। सामर सेट मॉम की कहानी से उन्होंने श्रोताओं को सम्मोहित करते हुए अपनी बात की मिसाल भी पेश की। और स्पष्ट किया कि रचना और रचनाकार एक ही चीज़ नहीं हैं। उसके जीवन तत्व आ सकते हैं रचना में मगर दोनों को एक ही समझ लेना हमारा दृष्टि-दोष है।

उन्होंने कविता और कहानियों पर अपने विशिष्ट विचार रखे। लगभग डेढ़ घंटे कैसे गुज़रे पता ही नहीं चला, वह भी आख़िरी सत्र के आख़िरी वक्ता के रूप में संतोष चौबे जी को इतनी तन्मयता से सुना गया यह उनकी विशिष्टता की पहचान है। आभार प्रगट करते हुए श्री प्रमोद शर्मा की यह बात याद रही कि तमाम श्रोता गणेश बन चुके हैं। इतनी बातें सुनीं कि कान हाथी जैसे बड़े हो गये है। इतना कुछ मस्तिष्क में समाया कि मस्तिष्क बड़ा हो गया... यानि गणेश रूपी श्रोताओं का आभार.... यह उपमा बहुत अच्छी लगी।

और अंत तो ऐसा हुआ इस आयोजन का कि दिन भर की सारी थकान ग़ायब हो गई। ''क्रूज़ पर कविता'' एक ऐसा सत्र जिसकी याद जीवन भर रहेगी... जो कवि और शाइरों की लिस्ट थी उसमें वैसे तो अधिकतर नदारद थे मगर जो मौजूद थे वह उनके दुर्भाग्य पर रो ही सकते थे। ऐसा स्थान, ऐसा वातावरण, ऐसे श्रोता, ऐसा संयोग, ऐसा प्रयोग, ऐसा योग कहाँ नसीब होता है। भोपाल की शान बड़ा तालाब और इस पर बल खाता क्रूज़ और उस पर आनन्द से भरे हुए लोग..... सब कुछ पारलौकिक लग रहा था। मुझे किसी की अनुपस्थिति का दु:ख नहीं हुआ सिवा ढींगरा फ़ैमिली के। ख़ैर कविता और शायरी का दौर शुरू हुआ। सब से अधिक जिस व्यक्ति ने प्रभावित किया वह थे शशिकांत यादव। क्या याददाश्त है क्या मौक़े पर चौका मारने की कला है। अद्वितीय। उनके संचालन ने समाँ बाँध दिया, सब की प्रस्तुति अच्छी लगी। माहौल जो अच्छा था। मुझे भी सराहा गया मेरा सौभाग्य। और फिर इस माह में जन्में लोगों की ''जन्म रात्रि'' भी मनाई गई। केक भी फेस क्रीम की तरह इस्तेमाल हुए। भांगड़ा भी हुआ। नृत्य यानि डांस भी हुआ और..... महीने भर से रुठी अपनी पत्नी से भी मेरी नज़दीकियाँ बढ़ी जो मेरा व्यक्तिगत लाभ था। रात्रि भोजन भी सुरुचिपूर्ण था। और इस तरह एक आयोजन का क्षण-क्षण भागीदार होकर... अपने घर पूरी तरह संतुष्ट होकर लौटा। इन सबके लिए शुक्रिया पंकज सुबीर.... दिल से।

❐❐❐

सीहोर कथा

आलेख : गीताश्री

फ़्लैट नं. डी-11442, गौर ग्रीन एवेन्यू, अभय खण्ड, इंदिरापुरम, ग़ाज़ियाबाद, उप्र

मोबाइल : 9818246059, ईमेल : geetashri31@gmail.com

सीहोर कथा-1

सीहोर कल तक सपने में था। एक बड़ा -सा घर, बड़ा सा परिसर, चारों तरफ खेत, दूर एक नदी। धरती थोड़ी सुनहरी और पहाड़ियों का घेरा। जैसे शहर को घेरती हों ... जिसके भीतर सुरक्षित रहे सारी सभ्यता, संस्कृतियाँ और कुछ लोग जो ख़ुशबू की तरह होते हैं। बड़े से शहर में एक परिवार जिसे मेरा इंतज़ार रहा होगा, मुझे तो था ही। मेरे पिता के जाने के बाद पंकज भाई ने संदेश भेजा था -अब आपका मायका सीहोर है। यहाँ आपका परिवार रहता है। जिसमें दो प्यारी, सुंदर, लंबे-लंबे, काले-काले घने बालों वाली, किसी बांग्ला कहानी से निकल कर आई हुई भतीजियाँ रहती हैं और एक उनकी लाल परी अम्मा जो मेरी भौजाई बन गईं। बिन मिले एक अटूट रिश्ता बन गया था।

और मैं सीहोर को, जिसे एक बार सपने में देखा था, वहाँ सचमुच पहुँच गई एक दिन। पूरे सम्मान के साथ बुलाई गई। मैं अपने समकालीन कथाकार-उपन्यासकार पंकज सुबीर जी की बात कर रही हूँ। जब मैं पहुँची तो उन्होंने कहा -हमारे यहाँ बेटियों-बहनों के पैर छूए जाते हैं...! यह दूसरा वाक़या जब मैं ज़ोर-ज़ोर से रो सकती थी। मुझे इसी तरह वश में किया जा सकता है। इतनी आत्मीयता जहाँ मिले, वहाँ कौन न जाना चाहे बार-बार। एक परिवार मिला और मिले ढेर सारे संगी-साथी।

कैसे भूल सकती हूँ, शहरयार भाई को, जिसे साधिकार काम अढ़ाती रही। वह साये की तरह साथ हम सबके लगे रहे। सीहोर में चौंकाने वाली बहुत-सी बातें हुईं। एक-एक कर चर्चा करूँगी सब पर। दिन कम थे और घटनाएँ तेज़ी से घट रही थीं।

मैं शाम को पहुँची जब मुझे सीहोर के एक सभागार में मंच पर बिठा कर सम्मानित किया गया, अन्य अतिथियों के साथ। सुधा ओम ढींगरा जी से मिलने की बेताबी थी। उनसे बिछड़े एक ज़माना बीत गया था। तबीयत ख़राब होने के वाबजूद वो जिस तरह से देर रात तक हमारे साथ रहीं, उसके अगले दिन भी तैनात... उनकी ऊर्जा, उनकी प्रतिबद्धता सब हैरान कर देने वाली।

मंच पर उनको सुनना सुखद अनुभव रहा। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की उपलब्धियाँ अनेक हैं। जिनमें एक आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की लड़कियों को मुफ़्त कंप्यूटर का प्रशिक्षण देना भी शामिल है। पिछले पाँच साल से लगातार यह काम वहाँ ऐसी अनेक समाजोपयोगी गतिविधियाँ हो रही हैं। अमेरिका से लेकर सीहोर तक।

सुधा जी का स्नेह पहली मुलाक़ात से आज तक वैसे ही क़ायम है। मेरे उपन्यास को अमेरिका मँगवा कर पढ़ा और उस पर लंबी समीक्षा लिखी। ये मेरे लिए बड़ी बात थी।

वे मुस्कुराती हुई कह उठीं- ''हमने तो उपन्यास पढ़ते ही तय कर लिया था...!''

सही तो कह रहीं... भला इतनी दूर कोई मेरी किताब मँगवाए क्यों... पढ़े क्यों और समीक्षा लिखे क्यों। इतने कामों में व्यस्त रहने के वाबजूद इतना करना, मुझे मान देना हुआ। इस बार मिली तो उन्हें थोड़ा और क़रीब से जाना। उनकी जीवन यात्रा के बारे में जाना। और ये भी जाना कि हिंदी के प्रति उनका लगाव अप्रतिम है।

ये भी जाना कि चुपचाप रहते हुए बड़े-बड़े कामों को कैसे अंजाम दिया जाता है। यही हुनर पंकज भाई में भी है। परदे के पीछे, क्रेडिट की कोई चाह नहीं। कोई नाम ले, तो गहरे संकोच से भर उठना। सारा श्रेय अपनी युवाओं की टीम को देना। अपने रचनाकार को पीछे रख कर अपने समकालीन रचनाकारों का डंका बजाना। सराहना और उन्हें सम्मानित करना।

कौन करता है इस तरह भला। साहित्य से हमें कुछ न मिला था, न पाने की चाहत थी। पंकज जी कहा करते थे- आपको वह सब मिलेगा, इस उपन्यास से, जो आप डिज़र्व करती हैं। पंकज भाई को मैं कथा का परफ़ेक्शनिस्ट मानती हूँ। जैसे कथा पर मेहनत करते हैं, पूरा समय देकर, धैर्य के साथ। पूरी तैयारी से उतरते हैं ..एक-एक शब्द पर मेहनत की छाया। पहली लाइन से लेकर अंतिम लाइन तक सधाव। ठीक वैसे ही इस बार का आयोजन था। भव्य, दिव्य और परफ़ेक्ट ! चूक होने की कहीं गुंजाइश नहीं। सबकुछ समयबद्ध । गरिमायुक्त !

औपचारिकता से लेकर आत्मीयता तक - सब कुछ परफ़ेक्ट ! मि. परफ़ेक्शनिस्ट को मेरा धन्नबाद पहुँचे! सुधा जी, ओम जी तक स्नेहिल आभार।

सीहोर कथा-2

सीहोर में मंच पर उस शाम पंकज सुबीर के चर्चित, बेस्ट सेलर उपन्यास ''अकाल में उत्सव'' का नया अर्थ खुला। मैंने भी इस उपन्यास पर एक लेख लिखा था। औरों के लेख पढ़े हैं मगर एक अलग व्याख्या उस शाम सुनी और मेरी समझ थोड़ी और बढ़ी।

पहली बात तो ये कि एक लेखक का परिवार उसे कभी गुदानता नहीं। कभी उसकी रचनात्मकता पर खुल कर बात नहीं करता। खुलेआम सराहना तो दूर की बात। पता नहीं मन ही मन कितना स्वीकार है या आदर-अनादर होता है। आप जीवन भर अनुमान नहीं लगा पाते। पंकज जी की हालत उस शाम समझी जा सकती थी जब उनके बड़े भाई, महामंडलेश्वर अजय पुरोहित जी मंच से उनके उपन्यास का रेशा-रेशा खोल रहे थे।

''अकाल में उत्सव'' किसानों की आत्महत्या पर संजीदगी से बात करती है। मैंने इस पर लिखते समय किताब के शीर्षक पर ध्यान नहीं दिया था। किसी काव्य पंक्ति की तरह बजता रहा था मन में, जैसे अकाल में सारस । अजय जी को सुन कर समझा कि किताब के शीर्षक पर ज़रूर ग़ौर फ़रमाएँ, पूरी कथा की कुंजी वही है। अगर एक बार समझ गए तो कथा के गहरे में गोता लगा पाएँगे। अन्यथा उलझ कर, कथा का सत्य तलाशते रह जाएँगे।

''अकाल में उत्सव'' की तुलना वे करते हैं कि जब हनुमान लंका को जला देते हैं, लंका की जनता हाहाकार कर रही थी, उनके घर, वस्त्र और भोजन सब जलकर राख । त्राहि-त्राहि प्रजा कर रही थी, चीख़ पुकार कर रही थी। महल बहरा हो गया था। उस वक़्त राजा अपने महल में उत्सव मना रहा था, उत्सव के आनंद में डूब गया था। देश में अकाल और राजा अपने आनंद में डूबा था । वो अट्टहास करता हुआ अपने सभासदों को आश्वस्त कर रहा था कि मैं चौकीदार हूँ प्रजा का। भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। उत्सव मनाओ उत्सव। हमने दुश्मन की पूँछ में आग लगा दी है। वह नष्ट हो जाएगा। हमारी विजय हुई है।

सत्ता बहरी होती है। उत्सव में डूबे राजा तक आत्महत्या करते किसानों की चीख़ कैसे पहुँचे? हम एक ''अतुल्य भारत'' (Incredible INDIA) के प्रचार और मुग्धता के दौर में जी रहे हैं।

ये सारी स्थापनाएँ, ये तुलना अजय पुरोहित जी मंच से कर रहे थे। उपन्यास का सूत्र वहाँ तलाश रहे थे। कितनी सदियाँ गुज़र गईं, राजा वही और प्रजा वही। न उसका उत्सव ख़त्म हुआ न अकाल ।

पंकज जी के लिए पहला अवसर था जब अपने बड़े भाई को अपनी रचना पर सुन रहे थे। मैंने मंच की चौंधियाती रोशनी में देखा- वे भीड़ से दूर खड़े होकर चुपचाप सुन रहे थे। टोपी में आधा चेहरा छुपा हुआ था। अँधेरा उनके चारों तरफ था, मैं चेहरे के भाव नहीं पढ़ पाई। एक लेखक होने के नाते उनके आनंद का अंदाज़ा लगा सकती हूँ।

लेखक को सबसे पहले अपने परिवार की स्वीकृति और सराहना चाहिए।

समाज पीछे-पीछे। लेखक समाज को

डिक्टेट कर सकता है, परिवार को नहीं। परिवार स्वतंत्र इकाई होता है। जो अपने घर के लेखक को एलियन की तरह देखता है।

पंकज जी ने बताया कि उनके लिए भी पहला मौक़ा था जब परिवार का कोई बड़ा सदस्य उनकी किताब पर मंच से बोले। ये बोलना किसी बड़े भाई की तरह नहीं था, एक प्रखर आलोचक की तरह था।

मेरे लिए बहुत सुखद अनुभव !

सीहोर कथा -3

''जो चीज़ आप जीते नहीं उसे लिख कर कुछ बड़ा कैसे क्रिएट कर सकते हैं ? कोई बड़ा किरदार आप रच नहीं सकते।''

- कमल किशोर गोयनका

''तुम अपने दुख, क्रोध और संतोष को किरदारों में ढाल दो...''

-उषा किरण खान

''तुम्हें कुछ दुख अपनी ज़िंदगी से उठाना चाहिए, वह प्रभावी, मार्मिक और विराट होगा ।''

- नासिरा शर्मा

ये मिलती-जुलती तीन बातें तीन दिग्गजों ने मुझसे कहा। अलग-अलग संदर्भों में बातें हुईं, कुछ उनकी बातें, कुछ सुझाव आए।

सीहोर यात्रा में मुझे गोयनका जी का साथ मिला। ठहर कर कम बातें हुई, समय कम और बातें ज़्यादा थीं। भागमभाग भी थी, आयोजन का दबाव भी।

जितनी देर बातें हुई, लेखन प्रक्रिया पर, लेखकों पर और प्रेमचंद पर ख़ूब बातें। उन्हें

इस बार ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन ने लाइफ़ टाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया। सबसे सुंदर बात सुनी जब पंकज सुबीर संचालन करते हुए कह रहे थे कि सभी सम्मानित रचनाकारों ने ये सम्मान लेकर हमारा सम्मान बढ़ाया है। गोयनका जी को भी सम्मानित करते हुए कहा कि आज हमारा सम्मान सम्मानित हुआ।

कितनी विनम्रता। सच है, पुरस्कार से बड़ा व्यक्ति हमेशा होता है। जिन्हें भ्रम है कि वे पुरस्कार देकर किसी को सम्मानित कर सकते हैं, वे अपने पास उसे संभाल कर रख सकते है। गोयनका जी जैसे विराट शख़्सियतों को सम्मानित करते हुए ऐसा कहा जाना बहुत भा गया। चाहे हम अभी उतने बड़े नहीं कि हमारे लिए कहा जाए। मगर जिस इन्सान ने सारी ज़िंदगी लिखने पढ़ने और नवोन्मेष में लगा दिया हो, उनके लिए ऐसा कहा जाना बहुत भाया। पुरस्कार एक पल का सुख है। असली सुख तो रचते जाना है, कुछ नया, कुछ अलग।

मैंने प्रेमचंद के इतने क़िस्से सुने, इतनी जानकारियाँ जिन्हें बटोरने में ज़िंदगी लग जाती। ''गोदान'' की हस्तलिखित दो पांडुलिपियाँ गोयनका जी के संग्रह में है। कुछ उपन्यासों के पहले संस्करण इनकी लाइब्रेरी में। मुझे हमेशा जीवनियाँ पढ़ना पसंद रहा। जीवन का सत्य वहीं होता है। इन्हें तो मैं साक्षात् सुन पा रही थी। हमारी बातचीत का सबसे सुंदर हिस्सा था - मेरे बाबूजी के बारे में गोयनका जी की दिलचस्पी और सवाल। मैंने अपने पिता के बारे में उन्हें बताया। कितने अलग क़िस्म के, क़िस्सों से भरे, ख़ुशमिज़ाज इन्सान थे। एक दिलचस्प चरित्र के इन्सान जिन्हें मैंने पिता और एक मनुष्य के रूप में भी देखा, जाना। उन्होंने सलाह दी कि मुझे अपने पिता पर एक किताब लिखना चाहिए। शीर्षक भी सुझाए।

तब मुझे याद आई तीनों दिग्गजों की बातें। वे तीनों किधर संकेत कर रहे थे। जीवन से किरदार उठाने की बात थी। कथा में वर्णित दुख उतने कारुणिक नहीं, जितने जीवन के दुख करुणा पैदा करते है। शायद दुख first hand में ज़्यादा ''पैथोस'' उगलता है।

❑❑❑

'अवाक्' रह जाने का आनंद

आलेख : नीरज गोस्वामी
बी-44, प्रभु मार्ग, तिलक नगर, जयपुर, राजस्थान -302004
मोबाइल : 9860211911, ईमेल : neeraj1950@gmail.com

''ज़िंदगी 'अवाक्' होने के अवसर बहुत कम देती है लेकिन जब देती है और हम उस अवसर में जीते हैं तब पता चलता है कि 'अवाक्' रह जाने का आनंद क्या होता है। दरअसल अवाक् रह जाने की क्रिया बड़ी स्वाभाविक होती है आप चाह कर 'अवाक्' नहीं रह सकते। 'अवाक्' आप तब होते हैं जब आप उस अनुभव से अचानक गुज़रते हैं जिसकी आपने कल्पना नहीं की होती। जब मन कहता है कि ऐसा हो ही नहीं सकता लेकिन यथार्थ में आप उसे सामने घटित होते हुए देखते हैं। मन क्या करे वो आपके विगत के अनुभव पर धारणाएँ बनाता है और जब वो धारणाएँ टूटती हैं तब वो 'अवाक्' रह जाता है। ऐसा ही अवसर मुझे सीहोर-भोपाल में मिला। मौका था ढींगरा फ़ाउण्डेशन और शिवना प्रकाशन के दो दिवसीय कार्यक्रम में सहयोगी की हैसियत से भाग लेने का। कार्यक्रम के आयोजन और व्यवस्थाओं से नितांत अनजान जब मैं भोपाल पहुँचा, तब से मेरे अवाक् रह जाने का जो सिलसिला शुरू हुआ, वो मुसलसल मेरे वापस लौटने तक बना रहा। आप पूछेंगे कारण, तो मैं कहूँगा कि एक हो तो बताऊँ। आप कहेंगे कि सभी बताओ, तो मैं कहूँगा सभी तो नहीं हाँ नमूने के तौर पर कुछ एक बता देता हूँ, सभी पढ़ने की फुर्सत और धैर्य शायद आपके पास न हो, अलबत्ता कभी मिलेंगे तो रू-ब-रू बताएँगे अभी तो इतने ही सुनो.. अरे नहीं, नहीं, पढ़ो :

मैं अवाक् रह गया जब - 1. मैंने पंकज सुबीर जी के नेतृत्व में युवा कार्यकर्ताओं की एक समर्पित टीम देखी, जिन्होंने अपने कार्य को बड़ी दक्षता से संपन्न किया। घड़ी की सुइयों से ताल मिलाते हुए एक-एक पल का जिस कुशलता से उन्होंने सदुपयोग किया वो अद्भुत था। हर एक मेहमान का व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखना आसान काम नहीं था लेकिन उन्होंने किया। मैं यहाँ उनका नाम नहीं लूँगा क्योंकि अगर किसी एक भी टीम मेंबर का नाम भूल से छूट गया तो मैं अपने आपको क्षमा नहीं कर पाउँगा।

2. सीहोर जैसी छोटी जगह में हमें बड़े शहरों की तर्ज़ पर बने एक भव्य रिजॉर्ट्स में ठहराया गया।

3. माला में मोतियों की तरह गुँथे पंकज सुबीर के संयुक्त परिवार से मैं मिला, आदरणीय माताजी के स्नेह और बहुओं के आदर भाव और बेटियों के लाड़ को मैंने महसूस किया। मैंने देखा कि किस सहजता से हम सभी जो सीहोर मेहमान बन कर आए थे उनके घर आ कर उस घर के स्थाई सदस्य ही बन गए।

4. आदरणीय ओम और सुधा ढींगरा जैसी शख्सियतों से मिला, उनके निस्वार्थ भाव से किए जा रहे कामों के बारे में जाना। ऐसे लोग भी दुनिया में रहते हैं ? या ऐसे लोग हैं तभी ये दुनिया अभी तक रहने लायक बनी हुई है। उनके द्वारा किए जाने वालों कामों के लिए तो अलग से पोस्ट लिखनी पड़ेगी। मैंने जाना कोई इतना बड़ा काम करने के बावजूद कैसे इस कदर सहज और सरल भी हो सकता है।

5. मैंने ढींगरा फ़ाउण्डेशन और शिवना प्रकाशन द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रम का इतना गरिमामय आयोजन देखा।

6. मैंने 'जनेऊ' जैसी अद्भुत कविता के रचयिता श्री वसंत सकरगाए को सुना और देखा कि कैसे इतना बड़ा कवि प्रचार के आकर्षण से दूर भागता है।

7. मैं आदरणीय कमल किशोर गोयनका, बड़े भाई प्रेम जनमेजय, श्री महेश कटारे, मनीषा कुलश्रेष्ठ और गीताश्री से मिला। मैंने जाना कि साहित्य के आकाश में ऐसे विलक्षण सितारे भी जगमगाते हैं जो अपनी चमक के लिए किसी सूरज के मोहताज़ नहीं। (मनीषा कुलश्रेष्ठ और गीताश्री पर अलग से पोस्ट लिखूँगा)

8 . मैंने पारुल सिंह जैसी ज़िंदादिल इंसान को नाचते देखा जो हाल ही में दिल के वॉल्व की सर्जरी के लिए ऑपरेशन टेबल पर सजधज कर गई थी।

9. मैंने पहली बार भोपाल के बड़े तालाब की लहरों पर हिलते-डुलते जलयान पर पर किसी कामयाब काव्य गोष्ठी को सफलता पूर्वक संपन्न होते देखा।

अवाक् रह जाने के न जाने कितने छोटे बड़े और भी कारण हैं उनमें एक ये भी है कि जब आप ये सोचे बैठे होते हैं कि आपके जीवन में जितने मित्र बनने थे बन गए तभी कुछ ऐसे लोग आ मिलते हैं, जिनसे मिल कर लगता है कि इनके बिना तो मित्रता सूची कभी भी पूरी नहीं हो सकती थी। मन अभी भी कह रहा है कि जो हुआ वो सपना था, मैं इस बात को मान भी लेता लेकिन हम सपनों की तस्वीरें नहीं खींच सकते, इसलिए तस्वीरों को देख के मानना पड़ता है ऐसा हुआ ही था।''

❑❑❑

रहा किनारे बैठ

आलेख : धर्मपाल महेंद्र जैन
1512-17 Anndale Drive, Toronto M2N2W7, Canada
फ़ोन : + 416 225 2415, ईमेल : dharmtoronto@gmail.com

दिसंबर दो हज़ार अठारह के दिन थे, मेरा कविता संकलन 'इस समय तक' प्रेस में जा रहा था। शिवना प्रकाशन के महाप्रबंधक शहरयारजी ने हिंट दी हम इस बार दिल्ली के पुस्तक मेले में नहीं जा रहे हैं, भोपाल में ही पुस्तक मेले जैसा समारोह करने की योजना बन रही है, आप तैयारी रखें। मैं कुछ बोलता उसके पहले सहधर्मिणी हंसा दीप बोल उठीं, शहरयारजी मेरे नए उपन्यास 'कुबेर' का अंतिम पाठ चल रहा है। मैं इसकी पांडुलिपि शीघ्र भेजती हूँ, पढ़ें और बताएँ। मैंने हंसाजी से कहा, शहरयारजी के 'आप तैयारी रखें' का यह मतलब कैसे निकाल लिया कि शिवना ने पांडुलिपि मँगवाई। उन्होंने धीर-गंभीर होकर कहा ''ज़रा दिमाग़ का भी उपयोग कीजिए, शिवना समूह भोपाल में दिल्ली जैसा पुस्तक मेला करने की सोच रहा है, वे कितनी किताबें लाने की योजना बना रहे हैं, समझा करें कुछ!''

दो हज़ार उन्नीस की जनवरी; टोरंटो में भारी बर्फ़बारी का मौसम है, ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन - शिवना प्रकाशन के प्रस्तावित साहित्य समागम की पूर्व सूचना मिली है और आत्मीय आग्रह भी कि ज़रूर आइए, आप अपना कार्यक्रम बताइए। हम 'इस समय तक' और 'कुबेर' का विमोचन इस कार्यक्रम में रख रहे हैं। भोपाल जाना हमारे लिए घर वापसी जैसा है। यूनियन कार्बाइड के जानलेवा दौर में अर्जुन सिंह जी की तरह हम भी भोपाल छोड़कर नहीं भागे थे। टोरंटो में बसे मेरे भोपाली मित्रों में सुगबुगाहट होने लगी।

-अमा मियाँ सुना है भोपाल जा रिए हो।

-नहीं यार। भोपाल जाकर मैं कलकत्ती पान बहुत खाता हूँ और फिर बीमार हो जाता हूँ।

-अमा मियाँ, पान खाने से तो हमारे भोपाल में कोई बीमार नहीं हुआ, ख़ुदा ख़ैर करे।

-पान के पहले एक कप कड़क-मीठी गर्म चाय का भी रिवाज़ है।

-और कौन भोपाली नवाबज़ादा ख़ाली पेट चाय पीता है। कचौड़ियाँ, गुलाबजामुन और तबियत से खोहा भर-भर कर बनी मिठाइयाँ सिर्फ़ देखने के लिए तो बनती नहीं।

अब आपको क्या बताऊँ, छप्पन भोग खा-खा कर आप अपना सीना छप्पन इंची बना सकते हैं पर मुझे छप्पन भोग प्रोसेस करने में छप्पन सेकंड लगते हैं, सारा भोग पेट में पूरे एक मिनट भी नहीं टिकता। इधर खाया उधर बाहर, ऐसा डायरिया होता है कि 'नीट' पानी की चार-छः बोतलें चढ़ानी पड़ती हैं। पंकज सुबीर जी कितनी भी गारंटी दें कि आपको बीमार नहीं होने देंगे, कुछ भी देसी खाने ही नहीं देंगे। बताइए भला, पान और उसके पूर्व खाने-पीने का पूरा पैकेज न हो तो सीहोर-भोपाल में रहने का क्या लुत्फ़। मालवा की मिट्टी है, जहाँ पग-पग दाल-बाटी है और डग-डग लड्डू हैं।

समागम समारोह की तारीख़ों की अधिकारिक घोषणा हो गई, लाइफ़ टाइम अचीवमेंट अवार्ड, कथा सम्मान, कविता सम्मान पाने वाले मनीषियों के नाम देखकर मन गद्‌गद् हो गया। सम्मान तो ढेरों हैं पर इन सम्मानों को देने में छिपी आत्मीयता जब महसूस होने लगती है, तो मन आँखों में बैठ कर पिघलने लगता है। सुधा ओम ढींगरा जी का सहज स्नेहिल भाव और पंकज सुबीर जी की सदा मुस्कुराती आँखें सम्मान के साथ जो मान लाती हैं वह अनुभव तुलसी से शायद कुछ इस तरह कहलवा देता -

आवत ही हरषे जहाँ नैनन बरसे स्नेह।
तुलसी फिरि-फिरि जाइए पाने निर्मल मेह॥

वर्ष दो हज़ार चौदह में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन-हिंदी चेतना अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह टोरंटो में आयोजित हुआ था। इसमें समग्र साहित्यिक अवदान हेतु प्रो. हरिशंकर आदेश तथा अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान श्री महेश कटारे (उपन्यास) एवं सुदर्शन प्रियदर्शनी जी (कथा) को प्रदान किए गए थे। इसी कार्यक्रम के आयोजन के सिलसिले में पंकज जी से संपर्क हुआ और ओम जी एवं सुधा जी से पहली मुलाकात भी यहीं हुई। पंजाब के विख्यात अख़बार घराने से जुड़ी रहीं सुधा जी अब लेखन में सक्रिय हैं और रचनात्मक सामाजिक कार्यों में बढ़ कर भागीदारी करती हैं, यह मैं पहले से जानता था। उनसे मिल कर जाना कि लोगों को सहज ही अपना बना लेना उनके लिए कितना सरल है।

समागम समारोह हेतु भारत जाने के लिए मित्रगण उकसा रहे थे। जब मैंने कहा कि मुंबई एयरपोर्ट पर उतरते ही मच्छर ज़बर्दस्त हमला करते हैं, प्रवासी भारतीयों का ख़ून उन्हें ज़्यादा स्वादिष्ट लगता है, तो हाल ही में भारत यात्रा से लौटे मेरे मित्र ने भोलेपन से कहा, नहीं आजकल कस्टम वाले खाने के लिए मुँह नहीं फाड़ते। मेरे मित्र समझे मैं मच्छरों के बहाने भारतीय कस्टम्स अधिकारियों पर व्यंग्य कर रहा हूँ। एक रचनाकार मित्र ने कहा सरकारी रिकॉर्ड में हम भारतवंशी हैं, मतलब पर्सन ऑफ इंडियन ओरिजिन। अब एक-दो किलो सोना ले कर भारत जाने के दिन लद गए, प्रवासी लेखक अपने साथ चार-छः किलो अप्रकाशित रचनाएँ लेकर जाता है। कनाडा में बहुत तीखी ठंडी पड़ती है, दस-बीस शाल-दुशालों के साथ भारत से लौटो तो यशोगाथा सुनाना अच्छा लगता है। एक राजनेता-मित्र ने कहा बस तुम वहाँ जाकर वोट नहीं दे सकते। वोट देने वाले नागरिकों की ज़िम्मेदारियाँ ज़्यादा होती हैं, उन्हें वहाँ रहकर ही चौकीदार और कथित चौकीदारों का ध्यान रखना पड़ता है। यदि कोई नालायक जीत गया तो प्रजातंत्र को दाँव पर लगा देता है। अच्छा है समागम के वक़्त कोई चुनाव नहीं है, तुम सेफ हो, ज़रूर जाओ। ध्यान रखना, माइक पकड़ कर उससे चिपक जाने वाले

अनुभवी रचनाकार भी पंकज सुबीर के दक्ष कार्यक्रम संचालन का लोहा मानते हैं। घायल की गति घायल जाने, कुछ लोग तो शिकार होकर यहाँ अब तक घायल पड़े हैं। पंकज की टाइम लाइन में 'इंडियन टाइम' जैसा कुछ नहीं है। कुल मिलाकर मित्रगण जाने के पक्ष में माहौल बनाने में लगे थे पर हम समागम समारोह में नहीं जा पा रहे थे।

समागम के दस-पंद्रह दिन पहले से फेसबुक, व्हाट्सएप और फ़ोन पर जो संदेश मिल रहे थे तो लगा यह समागम, महासमागम में बदलने वाला है। कार्यक्रमों के चलते हर सत्र के बारे में अधिक जानने की उत्कंठा बनी रहती। कई बार सोचा, काश शिवना क्रिएशन से अनुरोध किया होता कि इस कार्यक्रम को फेसबुक पर लाइव कर दो। ख़ैर, महासमागम के विमोचन सत्र ने भी अपनी अलग छटा बिखेरी। रचनाकार उमंगित दिख रहे थे, उनकी मुस्कुराहट के साथ उनकी कृतियाँ बोल रही थीं। अपनी पुस्तक को मान मिले तो रचनाकार की रचनाधर्मिता, उसका सोच और वह स्वयं सबल बन जाता है।

मुझे इस कार्यक्रम पर बातें करनी थीं। माननीय कमल किशोर जी गोयनका दिल्ली लौटे तो उनसे फ़ोन पर बात हुई। उन्होंने बताया समागम समारोह साहित्यिक कुंभ जैसा भव्यतम रहा। पंकज के पास समर्पित कार्यकर्ताओं की बहुत अच्छी टीम थी, बेहद अनुशासित कार्यक्रम रहा। भारत में ऐसे कार्यक्रम बहुत कम होते हैं। कार्यक्रम में शामिल लोगों से मान, आत्मीयता और उनकी उमंग के बीच सम्मान और प्रशस्ति मिले तो वे क्षण अविस्मरणीय और गरिमामई हो जाते हैं। उनकी समारोह पर यह प्रतिक्रिया बहुत कुछ कह गई।

सीहोर और भोपाल के तीन-चार दिनों को जिन्होंने जीवंत जीया, उनके समृद्ध अनुभव, सहभागियों से मिली मिठास और विदा की वेदना आप साक्षात् उनसे ही इस अंक में सुन रहे हैं। इस समागम के चर्चे तो रहेंगे ही, बात निकली है तो दूर तलक जाएगी। हम तो सात समुंदर पार बैठे कार्यक्रमों को फॉलो कर रहे थे और अपनी अनुपस्थिति को भुलाते हुए आत्मीयता, स्नेह और मान की त्रिवेणी में डुबकी लगाने की कोशिश में कबीर को याद कर रहे थे -

जिन खोजा तिन पाइया गहरे पानी पैठ।
जो बोरा डूबन डरा रहा किनारे बैठ॥

❐❐❐

अपनापन भी रुला जाता है

मनीषा कुलश्रेष्ठ

''ढींगरा फ़ाउण्डेशन और शिवना प्रकाशन के अंतर्राष्ट्रीय साहित्य- सम्मान समारोह में..... ही नहीं.... एक ऐसे अनूठे कार्यक्रम में जिसमें शिरकत करना.... स्मृतियों से निकल नहीं सकता....पहली बात सुधा जी और ओम जी का प्रभावी सरल, स्नेह। दूसरी पंकज सुबीर का इस आयोजन को लेकर त्रुटिहीनता की हद तक परफेक्शनिस्ट होना...पंकज की दिन रात मेहनत से आयोजन को सफल बनाने वाली टीम....हर दिन साहित्यिक विमर्श और पंकज के घर पर स्नेहिल पारिवारिक लंच शाम मनोरंजक कार्यक्रम और एक से एक दावतें।

तीसरा- वैचारिक कट्टरताओं से परे सौहार्दपूर्ण माहौल में विमर्श।

चौथा- ढींगरा फाउंडेशन द्वारा आर्थिक रूप से कमज़ोर तीन सौ ग्रामीण लड़कियों को पंकज सुबीर और उनके सहयोगियों के सहयोग से कंप्यूटर शिक्षित करते देखना उन बच्चों से मिलना....उनके प्रति सुधा जी ओम जी का स्नेह और नेपथ्य में रह कर सतत सहयोग।

साहित्यकारों के प्रति ढींगरा दंपति का सम्मान चकित करता है।

पंकज सुबीर का स्नेहिल परिवार, रेखा भाभी, दोनों प्यारी बेटियाँ, आंटी, भाई साहब भाभी जी.... एक्सटैंडेड परिवार... शहरयार.. और उसके सहयोगी....मन में स्नेह का उत्स लिए जा रही हूँ....मौन कृतज्ञता का जल आँखों में लिए। अपनापन भी रुला जाता है।

❐❐❐

बिना गाँठ के बंधा हुआ रिश्ता

ज्योति जैन

सुंदर संयोजन व सफल संचालन के साथ बेहद गरिमामय व सुव्यवस्थित इस आयोजन हेतु पूरी टीम को बधाई देती हूँ। मुझे लगता है इस ग्रुप की एक नन्हीं-सी इकाई के रूप में मैं ही सबसे बड़भागी रही हूँ। सबके लिए परिचित नाम नहीं, लेकिन आदरणीय गोयनका सर, जनमेजय सर व संतोष चौबे सर जैसे वरिष्ठ साहित्यकारों के हाथों सम्मानित होना ही सबसे बड़ा सम्मान था। आदरणीय ओम ढींगरा सर व सहज सरल अपने नाम के अनुरूप ही सुधा बरसाती सुधा दी से प्रथम मुलाकात में ही इतना नेह व अपनत्व मिला जो अब तक सिर्फ उनकी तस्वीरों में ही नज़र आता था। गीता दी से दूसरी व मनीषा दी व विभोर जी से पहली मुलाकात थी। ये संक्षिप्त सत्संग कभी न भूलूँगी (हाँ...आप दोनों को देने के लिए मैने अपनी कुछ पुस्तकें रखी थी, लेकिन वापसी तक आप दोनों ही नहीं मिल पाए।)

पंकज सुबीर जी व शहरयार जी के मान भरे स्नेह से तो मेरा आँचल वैसे ही भरा हुआ है.. इस बार देवरानी ने भी अपना नेह उँडेल दिया.... मेरे हाथों पर उनके कसे हुए हाथों की उर्जा अपने साथ ले आई हूँ... जिसमें उनका सीहोर आने का खूब.. खूब.. आग्रह था।

शिवना परिवार का हिस्सा हूँ..इस बात का गर्व है। आप सबसे बिना गाँठ के बँधा हुआ रिश्ता तो है...और रहेगा ही। आप सभी का अपनापन मुझे भीतर तक भिगो देता है।

❐❐❐

हर लेखिका मल्लिका को जीती है

'मल्लिका' की लेखक मनीषा कुलश्रेष्ठ से पारुल सिंह की बातचीत

डब्ल्यू-903, आम्रपाली ज़ोडिएक, सेक्टर 120, नोएडा, उप्र 201301
मोबाइल : 9871761845, ईमेल : psingh0888@gmail.com
38 लैंड्सडाउन पार्क, थुरुविक्कल, पोस्ट अक्कुलम, त्रिवेंद्रम, केरल 695031
मोबाइल : 9911252907, ईमेल : manishakuls@gmail.com

(ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह के दौरान कथा सम्मान से सम्मानित कृति उपन्यास 'मल्लिका' की लेखक मनीषा कुलश्रेष्ठ से शिवना साहित्यिकी की सह संपादक पारुल सिंह ने बातचीत की। पारुल सिंह ने अन्य सम्मानित लेखकों से भी बातचीत की, जो आने वाले अंकों में आपको पढ़ने को मिलेंगी। इस अंक में मनीषा कुलश्रेष्ठ से पारुल सिंह की बातचीत उनके उपन्यास 'मल्लिका' पर।)

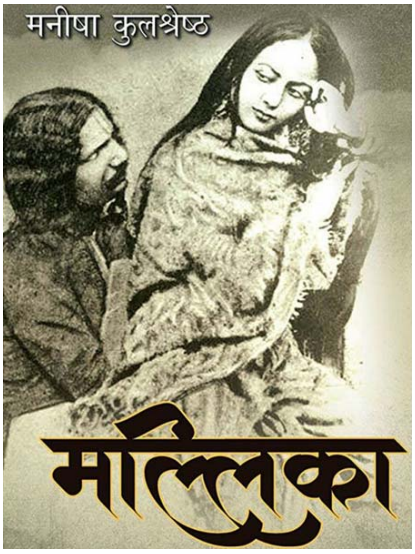

पारुल सिंह : मनीषा जी नमस्कार, बहुत सारी शुभकामनाएँ आपको। आपके उपन्यास 'मल्लिका' हेतु ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अंतरराष्ट्रीय कथा सम्मान से सम्मानित किया गया जो कि राजपाल एण्ड सन्ज़ प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। आप अपने और अपनी लेखन यात्रा के विषय में संक्षेप में बताइए।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : पारुल, मेरी लेखन यात्रा बहुत लंबी है। सच कहूँ तो मैंने कक्षा नौ से कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था, कक्षा ग्यारह में पहली कहानी लिख दी थी। वह भी दो वयस्कों की प्रेम-कहानी, एक पड़ोस के दीदी-भैया जो आकाशवाणी में कार्यक्रम देने जाते थे, उनको देख कर। कॉलेज में आई कविताएँ यहाँ-वहाँ स्थानीय तौर पर छपीं। एम.ए. कर रही थी तब राजस्थान साहित्य अकादमी की उद्घोषणा हुई - नवोदित लेखन पुरस्कार के लिए। तो मैंने एकांकी लिखी एक फ़ोटोग्राफर-पत्रकार कैसे एक लड़की को बचाता है देवदासी बनने से। उसे प्रथम पुरस्कार मिला, तमाम अख़बारों में नाम छपा। प्रभाकर माचवे द्वारा, हरीश भादाणी जी, प्रकाश आतुर सर, नंद भारद्वाज जी की उपस्थित में सम्मान मिला। उसके बाद ज़ाहिर है ज़िंदगी उलझ गई, नौकरी ढूँढ़ने, शादी-ब्याह की दुनियादारियों में। शादी भी हुई तो एक वायुसेना अधिकारी से, हर तीन साल बाद शहर का बदलाव। सो नौकरी तो दूर की कौड़ी हुई।

स्कूलों में पढ़ाना मुझे पसंद नहीं था। क्योंकि माँ वरिष्ठ शिक्षाधिकारी रहीं तो जीवन स्कूलों, शिक्षकों के बीच ही बीता, तो उस सब से ऊब होने लगी थी।

इसलिए अंतिम शरण लेखन ही था। मेरे पति मेरी जद्दोजहद देखते आ रहे थे। वे इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर और भौतिक विज्ञानी हैं, उन्होंने मुझे 1999 में कंप्यूटर और इंटरनेट से परिचित करवाया। जब हिंदी और इंटरनेट की कोई कल्पना नहीं कर सकता था, उन्होंने हिंदी की पहली वैब पत्रिका हिंदीनेस्ट.कॉम बनाने में मेरी सहायता की। जिसमें मैंने वरिष्ठ लेखकों की कहानियाँ, कविताएँ बाय पोस्ट मँगवाकर हाथ से टाइप करके पब्लिश कीं। एक साल में ही हिंदीनेस्ट विश्वव्यापी हो गई। सब हिंदीनेस्ट और मेरे नाम से परिचित हुए, फिर युवा लोगों ने अपना लेखन मुझे ईमेल से भेज कर मेरा काम हल्का किया। चूँकि हर पखवाड़े मुझे संपादकीय लिखना होता था। जब कोई कहानी न आए तो मुझे लिखनी होती, या वर्ल्ड क्लासिक कहानियाँ ट्रांसलेट करनी पड़ती। इस तरह कथा लेखन में मेरी वापसी हुई। हिंदीनेस्ट के अलावा मैं पत्रिकाओं के लिए कहानियाँ लिखने लगी। 'कठपुतलियाँ' कहानी के साथ मेरा नाम रेखांकित हुआ और आगे सब जानते हैं।

पारुल सिंह : आपने इतिहास से एक गुमनाम पात्र मल्लिका को लेकर ये उपन्यास रचा। मल्लिका ही क्यूँ? और भी बहुत से पात्र हो सकते थे इतिहास से।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मल्लिका क्यूँ? दरअसल बहुत पहले कथादेश के अंक में मल्लिका का ज़िक्र और उसके उपन्यास 'कुमुदिनी' के अंश छपे थे। तब यही फ़ोटो जो 'मल्लिका' के कवर पर है मेरे समक्ष आया था। तभी से मल्लिका मेरे अंतस में गड़ी थी। मैं उसके बारे में और-और जानना चाहती थी मगर कुछ मिलता न था। तब मल्लिका को लेकर मैं मल्लिका के बचपन, जन्मस्थान, माता-पिता, पति, ससुराल और भारतेंदु जी से पहली मुलाक़ात की बस कल्पना ही कर पाती थी। वह कौन थी, कहाँ से आई इसका ज़िक्र कहीं नहीं मिलता। तो काशी आने से पहले की मल्लिका मेरी कल्पनाओं में बार-बार जन्मी है। इसलिए उसे पन्नों पर एक दिन आना ही था। हाँ इतिहास में बहुत पात्र हैं, हिंदी जगत् के अतीत के पन्नों में ओझल हो चुके पात्र भी, लेकिन कोई-कोई ही आपको मोहपाश में बाँध पाता है। बरसों से हिंदी जगत् में जीवनीपरक उपन्यासों की कमी ने भी 'मल्लिका' को लिखवा लिया।

पारुल सिंह : इस पात्र के लिए आपने शोध और यात्राएँ की? आप कहाँ-कहाँ गईं ? और इस उपन्यास को लिखने में आपको क्या बाधाएँ आईं?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मल्लिका के अतीत का तो कोई सुराग़ नहीं मिलता। मल्लिका का ज़िक्र भी भारतेंदु की छायाओं में ढका-ढका

मिलता है।

प्रेमिका, प्रेम पोषिता, धर्म गृहीता मल्लिका...बल्कि ऐसे में तो लेखिका मल्लिका, व्यक्ति मल्लिका को मुझे इन तथ्यात्मक छायाओं से निकालना पड़ा।

हाँ, बनारस गई थी कि पढ़ा था, काशी में भारतेंदु जी के घर की पिछली गली में एक मकान जिसकी छतें मिलती थीं, वहाँ मल्लिका रहती थीं, ऐसा ज़िक्र उनकी पुरानी जीवनियों में मिलता है।

भारतेंदु जी की हवेली तो सब जानते हैं, वहाँ उनके वंशज और उनके परिवार रहते हैं। लेकिन मल्लिका के घर की ठीक पहचान कर पाना मुश्किल था। रामकटोरा बाग अब दुकानों से अटी पड़ी गलियों में छिप गया है।

भारतेंदु जी की जीवनियाँ कहती हैं वे कुलीन बंगाली बाल-विधवा थीं। बस इतना.. तो ऐसे में शोध की गुंजाइश बस इतनी थी कि उस समय के बंगाल, काशी के बारे में किताबों से जाना जाए। तो किताबों का ढेर ही साथ रहा कथा रचते हुए। कि बुढ़वा मंगल पर क्या होता था, रामकटोरा बाग का - 'काव्य समाज' जो हुआ उसमें क्या माहौल था। उस समय कलकत्ता - काशी के बीच रेल आरंभ हुई थी कि नहीं। हाँ, हर कदम पर लिखते हुए, सर्च करते रहना पड़ा। कि तार का अविष्कार हुआ था कि नहीं। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का बनारस आगमन आदि के समय की गणना आदि भी सटीक रखी। मल्लिका जो गुनगुनाए वह भूल कर भी नज़रुल या रविंद्र के गीत न हों। क्योंकि मल्लिका दोनों की पूर्ववर्ती थीं। कथा में गल्प और सत्य के मिश्रण पर मैं भूमिका में लिख चुकी हूँ।

मल्लिका के संघर्ष, अस्तित्व को लेकर द्वंद्व, भारतेंदु जी से बहस, आत्मसजगता भी मैंने उनके रचे 'कुलीन कन्या', 'कुमुदिनी' जैसे उपन्यासों में वर्णित घटनाओं, मज़बूत स्त्री पात्रों को ख़्याल में रख कर की।

पारुल सिंह : क्या किसी ख़ास कृति के ख़ास पात्र को लिखने के लिए लेखक का उसको अपने वास्तविक जीवन में जिया हुआ होना आवश्यक है? क्या कालजयी रचना का माध्यम स्वयं का भोगा हुआ सच ही बन सकता है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : नहीं ज़रूरी नहीं,

लेखक को बिना भोगे भी पात्रों के साथ सुख-दुख भोगना ही है। ऐसा हो तो लेखक बहुत सीमित हो जाएगा। वह वही लिखेगा जो उसने भोगा हो... हिंदी का जो समृद्ध साहित्य है वह केवल भोगे हुए पर आधारित नहीं। भोगे हुए के लिए आत्मकथा एक विधा है। लेकिन मुकम्मल कथा या उपन्यास विचार, कल्पना और यथार्थ का मिश्रण होती है। देखिए एक और बात होती है, पात्र से एम्पैथी! पात्र की भावभूमि में प्रवेश जो होता है, हाँ वह अनिवार्य है। आप नदी को ऊपर-ऊपर से तैर कर पार नहीं कर सकते, बीच में डूबना और उबरना भी पड़ता है, प्रवाह को बाँहों में लेकर भी तैरना होता है।

पारुल सिंह : यह बताएँ क्या आपका कहानी लेखन और उपन्यास लेखन का अनुभव क्या एक समान होता है? आपको क्या ज्यादा पसंद है कहानी लिखना या उपन्यास लिखना?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : इसके पीछे भी एक पूरा लंबा इतिहास है। कि मैं तो कविताएँ लिखा करती थी, अपनी वेबपत्रिका हिंदीनेस्ट का पेट भरने के लिए किसी लेखक की कहानी न आने पर कभी-कभी मुझे भी कहानी लिखनी पड़ती थी। कुछ कहानियाँ बेहतरीन बन पड़ीं और मैंने भेजना आरंभ किया जो हंस, कथाक्रम, वागर्थ में छपीं और मैं कहानीकार बन गई।

शुरू में मैं कहानियाँ ही लिखती थी और उपन्यास लिखने से बहुत डरती थी कि मुझसे नहीं सधेगा। क्योंकि मैं कहानी में भी बेज़ा डीटेलिंग नहीं पसंद करती।

लेकिन एक बार राजेंद्र यादव जी ने चुनौती रख दी सामने कि तुमने बहुत कहानियाँ लिख ली हैं। लेखक की असली कसौटी तो उपन्यास लिख कर होती है, तुम अब उपन्यास लिख कर दिखाओ। तब मैंने पहला उपन्यास लिखा जो कि 'शिगाफ़' था। मैंने अब तो कुल पाँच उपन्यास लिख लिए हैं। मुझे लगता है उपन्यास लेखन ही मेरी प्रिय विधा है। क्योंकि कहानी में आपको एक निश्चित जगह से चल कर एक निश्चित जगह पर पहुँचना है, उपन्यास अपने आप में एक शहर है, जिसकी मुख्य सड़क के अलावा उपसड़कों, गलियों में भी आप भटक सकते हैं।

पारुल सिंह : उपन्यास में एडवेंचर ज़्यादा है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ, उपन्यास में एडवेंचर ज़्यादा है और विषय का मनचाहा फैलाव कर सकते हैं। उपन्यास में आप उप कथाओं का उपयोग कर सकते हैं उपन्यास में अवांतर प्रसंग भी आ सकते हैं।

पारुल सिंह : अवांतर ?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : अवांतर-प्रसंग यानि मुख्य कहानी से हटकर भी आप कोई प्रसंग कह सके जैसे कि मैं मल्लिका पर लिख रही हूँ और किसी पौराणिक स्त्री का विषय आए तो मैं छोटी-सी कहानी उस पौराणिक स्त्री की भी कह सकती हूँ। ऐसा उपन्यास में कर सकते हैं, कहानी के साथ इतनी छूट आप नहीं ले सकते हैं।

हालाँकि उपन्यास भी कस कर एडिटिंग माँगता है। उपन्यास को भी आप ढीला नहीं छोड़ सकते। जब मुझे कोई छोटी बात करनी हो तो मैं कहानी लिखती हूँ, पर उपन्यास मेरी प्रिय विधा रहेगी। और इसका श्रेय राजेंद्र यादव जी को जाता है कि उन्होंने मेरे सामने एक बड़ी चुनौती रखी थी।

उपन्यास लिखना भी फ्लाइंग से कम नहीं, जिसमें आप सही टेकऑफ करो, बिना जर्क्स के उड़ा के ले चलो और अंत में उसकी लैंडिंग भी उसी तरह अच्छे से बिना जर्क्स के....

(हँसते हुए) एयर फ़ोर्स ऑफ़िसर की बीवी हूँ, तो मैं इसी भाषा में ठीक समझा पा रही हूँ। उपन्यास को कभी भी जर्की नहीं होना चाहिए। लोग बीच में पन्ने पलट दें तो वह उपन्यास सफल नहीं। उपन्यासकार वही जो हमेशा पाठक को होल्ड करके रखे। वह चाहे अपने भाषा के जादू से हो या कहानी की रवानगी से। कुछ लोग अंतस की मनोवैज्ञानिक यात्रा के द्वारा पाठक को होल्ड पर रखते हैं।

एक सधाव होना चाहिए उपन्यास में।

मुझे लगता है कि चौथे - पाँचवें उपन्यास तक आते-आते मुझ में यह स्किल अब सहज ही आ गया है। उसके लिए अब प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

पारुल सिंह : किसी भी पात्र को गहराई से लिखने के लिए लेखक को उसे लिखते समय जीना पड़ता है या लिखने से पहले कहीं उसने वैसा कुछ जिया होता है, तो लेखक का कोई अंश पात्र में आ जाता है, क्या ऐसा है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ देखो जब आप कोई विषय और फिर मुख्य पात्र चुनते हैं तो इसकी जो चयन प्रक्रिया है, वहीं आपका उस पात्रों के साथ आत्मिक जुड़ाव हो जाता है। क्यों आप कोई विषय चुनते हैं, क्योंकि उससे आप रिलेट कर पाते हैं, या उसके प्रति आपमें सघन जिज्ञासा है। आप उपन्यास के बहाने उसे जीना चाहते हैं, जानना चाहते हैं। उससे आपका रागात्मक संबंध बन जाता है। यही संबंध पाठक को भी आपसे जोड़ने लगता है।

मल्लिका एक पात्र के रूप में क्यों मुझे अच्छी लगी क्योंकि मैं भी एक लेखिका हूँ। और स्त्री होने के नाते साहित्य-जगत् में बहुत चुनौतियाँ मेरे सामने आई। ऐसा होता है कि अगर यहाँ आप किसी वरिष्ठ लेखक के साथ हैं, किसी संगठन में, ग्रुप में हैं, तो आपको उनकी शेडो में रख कर देखने की कोशिश की जाती है। भले आपका लेखन पूरा 180 डिग्री उलट हो। आपका सारा लिखा हुआ उन छायाओं के ग्रहण में देखने की कोशिश की जाती है। तो कहीं ना कहीं हम सारी लेखिकाएँ एक तरह से मल्लिका की ज़िंदगी जीती हैं। जिनकी प्रतिभा को पुरुष लेखकों की तुलना में कम तवज्जोह दी जाती है। मुझे लगता है कि मल्लिका के जीवन में भी यह चुनौतियाँ थी, यह द्वंद्व था कि उसके लेखन के सामने आते ही उसे नेपथ्य में भेजना आरंभ हो गया। वे भारतेंदु लेखक मंडल में सम्मिलित नहीं थीं।

पारुल सिंह : लेकिन मुझे एक चीज़ समझ नहीं आती कि आप प्रेम में क्या इस तरह से मीरा हो जाते हैं कि आप स्वाभिमानी हो, आप प्रतिभाशाली हो, आप आत्मविश्वास भी हो लेकिन आपकी सारी रचनात्मकता एक व्यक्ति के लिए ही सीमित कैसे हो सकती है कि भारतेंदु जी ने पढ़

लिया तो बस ठीक है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : देखो क्या है कि 'मल्लिका' एक जीवनीपरक उपन्यास है। मेरी मल्लिका एक संपूर्ण काल्पनिक पात्र होती तो मैं उसे उसके पथ से विचलन करवा सकती थी। विद्रोही बना सकती थी लेकिन सत्य तो यह है कि मल्लिका और भारतेंदु हरिश्चंद्र का संबंध रहा ही कितने साल? करीब 5 साल। इतने समय में क्या आप जी पाते हैं, क्या मैच्योर हो पाते हैं? भारतेंदु हरिश्चंद्र खुद 35 साल की उम्र से पहले चले गए। भारतेंदु हरिश्चंद्र का दृष्टिकोण तक उस समय बन ही रहा था तभी वह चले गए। मल्लिका भी उनकी हमउम्र या छोटी रही होंगी तो मुझे लगता है कि वह उस परिपक्वता को हासिल नहीं हुए थे। मुझे लगता है कि भारतेंदु अगर और जीते और उनका और मल्लिका का संबंध और आगे चलता, तो निसंदेह मल्लिका का लेखन रेखांकित होकर सामने आता। यह एक जीवनीपरक उपन्यास है, जिसकी सीमा है इसमें मैं मल्लिका को उठाकर रानी लक्ष्मीबाई नहीं बना सकती थी।

पारुल सिंह : मुझे यह भी लगता है कि प्रगतिशील होने के साथ-साथ मल्लिका कहीं ना कहीं उस समय की धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं से भी प्रभावित थी और भारतेंदु जी के साथ मन से अपनाए अपने रिश्ते के कारण उनके जाने के बाद उत्पन्न वैराग्य से वह विधवा धर्म निभाने चली गई उन्होंने तब स्वयं को विधवा माना।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : प्रगतिशीलता जीने का तरीका है। वह जिया उसने। कलकत्ता से सब छोड़ कर मल्लिका तो यह सोच कर आई थी कि वह इंडिपेंडेंट रहेगी। वह तो यह सोचकर आई ही नहीं थी कि उसे कोई स्नेहपगा रिश्ता मिलेगा या वह लेखन से जुड़गी! साहित्य और साहित्यकारों की संगत का मिलना तो उसके तईं उम्मीद से अधिक मिलना था। वह तो संतुष्ट थी, खुश थी जितनी उम्मीद करके आई थी उससे अधिक उसके द्वार खुले। आज के हिसाब से देखें और अगर सोचें तो मल्लिका की जगह हम होते तो निस्संदेह लिखते रहते।

पारुल सिंह : अपनी प्रतिभा को प्रेमी से पीछे रखने का कार्य क्या आज भी स्त्रियाँ ऐसा कर रही हैं, किसी भी क्षेत्र की हम बात करें तो आपको क्या लगता है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : नहीं! शायद ही। प्रेम में अंधे होने पर ही। शायद आज लोगों की आँखें खुल गई हैं। आज ऐसा कहाँ होता है, पुरुष भी उदार हैं। हाँ कोई शोषक प्रेमी / पति हो तो शायद.. हो लेकिन मल्लिका भारतेंदु जी के साथ और रहती तो उनकी प्रतिभा ज़्यादा प्रस्फुटित हो पाती और शायद भारतेंदु जी भी उनकी प्रतिभा का लोहा मानते। मल्लिका की विवशता तो समझ आती है कि वे भारतेंदु जी की मृत्यु के बाद अकेली पड़ गईं थीं और वृंदावन चली गईं। लेकिन नागरी प्रचारिणी ने जब उनके उपन्यास 'कुमुदिनी', 'कुलीन कन्या', 'प्रकाश पूर्णचंद्र' छापे तो, हिंदी साहित्य की भी कमी तो रही है कि उन पर ज़्यादा बात नहीं की गई।

पारुल सिंह : आपने उनके उपन्यास पढ़े हैं? आपके अनुसार कैसा लिखा है मल्लिका ने?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ, 'कुमुदिनी' पढ़ा। शेष जो पत्रिकाओं में अंश छपे। 'कुमुदिनी' में उनकी भाषा में बांग्ला पुट रहा है। बाद में इस भाषा में संस्कृतनिष्ठ हिंदी का असर रहा है। लेकिन मल्लिका की नायिकाएँ बड़ी मज़बूत प्रतीत हुईं। वसीयत में अपना नाम न होने पर लड़ने वाली। प्रेमी को तैर कर दलदल से निकालने वाली। खुल कर प्रेम करने वाली। घुटन हो पर भाग जाने वाली। इसी आधार पर मैंने मल्लिका को गढ़ा कि कहीं न कहीं रचयिता अपनी प्रवृत्तियाँ रचना में डालता ही है।

पारुल सिंह : आज की स्त्री के पास क्या चुनौतियाँ हैं ? जब प्रेम, परिवार, करियर और अपने पैशन के सवाल उसके सामने आते हैं। आपका अपना अनुभव लेखन में आने का कैसा है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ प्रेम जब भी

ज़िंदगी में आता है, बहुत सी डिमांड लेकर आता है। यह न करो, वह न करो... यहाँ तक की शादी भी मेरी ज़िंदगी में आई तो हाँ! मुझे भी कई जगह लड़ना पड़ा कि लिखना कोई मेरा निज आनंद-विलास नहीं है। इसके लिए मुझे समय चाहिए, अवकाश चाहिए गृहकार्यों से, बच्चों से।

जहाँ तक बच्चे सँभालने की बात है और मुझे कहीं जाना है तो जाना है। उसके लिए कोई विकल्प आप देखो। हमेशा उतना स्मूद - सेलिंग नहीं होता। कई बार सवाल होता था कि क्या लेखन इतना महत्त्वपूर्ण है तो दमदारी से मुझे कहना पड़ा कि हाँ लेखन महत्त्वपूर्ण है। हालाँकि मेरा परिवार सपोर्टिंग है, मेरी बात यहाँ मायने रखती है, मानी जाती है।

जब घर से बाहर निकले तो भी बहुत चुनौतियाँ -पहली यही कि अगर आप अच्छा लिख रहीं हैं तो कैसे लिख रही हैं? ज़रूर आपका लेखन किसी ने सुधारा होगा। कोई आपका मैंटोर होगा। मुझे तो खुल कर कहना पड़ा कि -जिस दिन यह नौबत आएगी कि मेरा लेखन किसी को सुधारना पड़े तो उस दिन मैं लिखना बंद कर दूँगी।

और हाँ तुम्हारा सवाल कि प्रेम में लोग अपनी प्रतिभा को पीछे रख देते हैं। मैं ऐसे प्रेम को ख़ारिज करूँगी। प्रेम क्या बस चला तो मृत्यु के सामने आने पर भी मैं लिखना ना छोड़ूँ।

पारुल सिंह : यानि यदि आप प्रेम में मीरा हो या मीरा की तरह हो और आप लिखती भी हो तो यह बहुत ख़तरनाक मिश्रण है? या तो आप स्वयं को बहुत ऊपर ले जाओगी या अस्तित्व ख़त्म कर लोगी।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ यह है मैंने देखा है ऐसे बहुत से लोगों को कि प्रेम में लिखना शुरू किया और प्रेम ना रहने पर वह भी उस परिदृश्य से हट गए। फिर तो वह लेखन नहीं था, प्रेम की अभिव्यक्ति मात्र थी ना?

अगर आपका प्रेम में लिखा हुआ समष्टि से जुड़ रहा, लोग पसंद कर रहे तो लिखो न आगे भी। कई पुरुष भी हैं ऐसे।

ऐसे लोगों के लिए दुख होता है पर ऐसे लोग हैं। होना तो यह चाहिए कि प्रेम आपको लिखने के स्तर पर लेकर आया है तो उस लेखनी को पकड़कर आपको बहुत ऊपर उठना चाहिए। हो सकता है मल्लिका

के साथ भी यही हुआ हो। पर अगर मल्लिका मेरा पात्र है, उसे मैंने गढ़ा है तो फिर वह रक्षिता या प्रेमपोषिता शब्द पर विरोध करेगी नॉवल में। हालाँकि ऐसा कहीं लिखा नहीं मिलता पर मुझे विश्वास है कि वह इतनी बौद्धिक थी तो ऐसा विरोध उसने ज़रूर किया होगा।

पारुल सिंह : लिखते समय आप कहानी पर हावी रहती हैं या आपका पात्र ? क्या पात्र आप से अपनी कहानी कभी बदलवा भी लेते हैं। कहानी का अंत या पात्र अपने चरित्र के आयाम बदलवा लेते हैं उस से इतर जैसा कि आपने शुरूआत में उनका चरित्र स्थापित किया था।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : बिल्कुल, मैं नहीं होती कहानी में, मेरे पात्र होते हैं। वे मेरी नहीं मैं उनकी कठपुतली होती हूँ। पात्र लेखक की विचारधारा की कठपुतली हो गया तो ऐसा पात्र और कहानी फ्लॉप है। पात्र के मनोविज्ञान, समय, परिवेश पर जो लोग शोध नहीं करते वे ही पात्र के साथ मनमानी करते हैं।

मैंने महसूसा है, और भी लेखकों का कहना है, कि कथा या उपन्यासों को लिखते समय पात्र बहस करते हैं आकर। सपने में आकर कई बार तो सिरहाने खड़े होकर बहस करते हैं आपसे, कि नहीं ऐसा नहीं है। पात्र बदलवा लेते हैं अपने आप को, अपने अंत को।

यह कोई सुपर नेचुरल जैसी चीज़ नहीं है। अवचेतनात्मक चेतना है यह एक लेखक की जिसे गहन अंतर्दृष्टि कहते हैं। क्योंकि लेखक ही सत्य, असत्य, अर्धसत्य से पाठक को रू-ब-रू करवाता है..समाधान नहीं देता।

पात्र आपके अवचेतन से खेलता है और जो सजग चेतना इस धरती पर विचार की है, विचार की जो ऊर्जा है, पात्र आकर उस को पकड़ता है। फिर आप कोई भी पंथ के हो आप किसी भी राजनैतिक धारा से जुड़े हो पात्र की चेतना आपकी चेतना को जगाने का काम करेगी ।

वह आपको सजगता की ओर ले जाएगा। सजगता आपको सत्य की ओर ही ले जाएगी। आपकी चेतना समष्टि की चेतना बन जाती है इसीलिए कहते हैं कि जब आप लेखक हो के कलम उठाते हैं तो आप में ब्रह्म तत्व आ जाता है, कहीं ना कहीं। देखो कितने ही देशी-विदेशी अराजक लेखक रहे है? जो निजी जीवन में कैसे भी हों, मगर जिन्होंने कितनी अच्छी रचनाएँ रची हैं। लेखक लेखक नहीं रहता जब वह रच रहा होता है।

पारुल सिंह : मेरा यह भी एक सवाल है आपसे कि कुछ लेखक निजी ज़िंदगी में कुछ और होते हैं और लिखते कुछ और हैं क्या यह सामान्य है सही है लेखन लेखन है या यह दोगलापन है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मुझे लगता है अराजक व्यक्ति बहुत सी परिस्थितियों की वजह से और प्रलोभनों की वजह से भी हो सकता है आप से विवशता में हत्या हुई है और अब आप हत्या के खिलाफ़ लिख रहे हैं तो यह कोई बुरी बात तो नहीं है कि आप के भीतर के कमज़ोर मनुष्य पर जब लेखक की ज़िम्मेदारी हावी हो जाती है तो तमाम अराजकता एक तरफ़ जा बैठती है। अभिव्यक्ति की लिखने की अवचेतन और अचेतन अमूर्त क्षण को पकड़ने की जो प्रतिभा है वह हर एक के पास नहीं होती अगर वह अहिंसा की बात करता है सर्वहारा की बात करता है तो मुझे लगता है उसका लेखन सार्थक है फिर वह एक व्यक्ति के रूप में कुछ भी हो।

पारुल सिंह : लेकिन यह लिखने के बाद वह एक और ख़ून कर दे तो?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ यह भी है, और ऐसा होता भी होगा। अगर ऐसा है तो हाँ उसका लेखन ईमानदार नहीं है क्योंकि लिखना तो आपको बदलता है।

पारुल सिंह : लेखक को निजी तौर पर मिलने पर जानने पर हमारे लेखक के विषय में विचार बदल जाते हैं कई बार। क्योंकि वह वहाँ अपनी लेखन वाली विचारधारा से विपरीत पाते हैं हम लेखक को।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ होता है, कई बार

लेखन से बेहतरीन लेखक होते हैं तो बेहतरीन लिखने वाले भी डिसएपॉइण्ट करते हैं।

सर्वहारा पर बात कर रहे हैं मगर रिश्वत से बनी अट्टालिकाओं में रह रहे हैं। आत्ममुग्धता के शिकार हैं। ऐसा नहीं कि अच्छे नहीं, बहुत से बेहतरीन लिखने वाले, अपने लिखने और अपने पोषित विचार के करीब जीते हुए मिले। सच कहूँ ? प्रिय लेखिकाएँ कहीं सहज और पारदर्शी मिलीं।

पारुल सिंह : पर आप तो बहुत विनम्र और डाउन टू अर्थ हैं।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाहाहा! कहा न महिलाएँ, सहज रहती हैं। मैं अभी किसी की प्रिय लेखिका बनने की श्रेणी में खुद को नहीं रख पाती। अभी खुद ही सीख रही हूँ।

मुझे लगता है आप के कहने में ईमानदारी होनी चाहिए। मेरा जब भी कोई इंटरव्यू होता है तो मैं सोचती हूँ वही बोलूँ जो मैं सच में हूँ। हालाँकि सत्य हमेशा विरोधाभासी होता है, लेकिन ऐसे विरोधाभास कि आपका लिखना ही आपके व्यक्तित्व व्यवहार से खारिज हो रहा हो तो ग़लत है।

वैसे मैं इस बात की हामी हूँ कि हम समाज की तयशुदा नैतिक मापदंडों की ज़िम्मेदारी लेखक क्यों वहन करे? ऐसा कर लेखक की प्रतिभा को कुंठित करना ठीक नहीं। अराजक जीवन जीकर भी लोग महान् साहित्य लिख गए हैं। किंतु वह अराजकता स्वयं को लेकर है, उसके लेखन की मूल चिंता में मनुष्य है, उसका अस्तित्व है।

पारुल सिंह : तो क्या दोहरा व्यक्तित्व होना सही है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : नहीं सही नहीं। हमारे यहाँ क्या होता है कि हम लेखन में बहुत तलवार चला लेते हैं। लेकिन ज़मीनी लड़ाइयों में सम्मिलित नहीं होते। हिंदी में बहुत ही कम हैं। मैं स्त्रीविमर्श की भी बात करूँ बहुत सी लेखिकाओं को मैं जानती हूँ जो अपने पारिवारिक जीवन में दमित हैं, उनको अपना लेखन छुपकर करना पड़ता है लेकिन वह अपने लेखन में परिवार तोड़ो - डंडा चलाओ जैसा कुछ लिखती हैं।

इसके कॉन्ट्रेरी मुझसे सवाल भी किया जाता है कि आप की नायिका अंततः घर वापस लौट जाती है तो मैं कहती हूँ घर

वापस किसी पितृसत्तात्मक षड्यंत्र के तहत नहीं लौट रही वह।

तूफ़ान के बावजूद वहाँ जो नीड़ में नन्हें पंख फड़फड़ाते हैं उनके लिए लौट रही है। प्रकृति ने जो उसके गर्भ में बीज डाला है उसे पल्लवित होते देखना चाहती है। उसका मातृत्व लौटा कर लाता है उसे। पितृसत्ता से अधिक उसके गर्भाशय की क़ैद उसे परेशान करती है। कोई स्त्री घर छोड़ती भी है तो बच्चों को संग ले जाती है, यह पितृसत्ता को बहुत सुहाता है। दुआ करिए कि यह समाज बदले और मैं एक रोज़ वह उपन्यास लिखने में सक्षम होऊँ जहाँ स्त्री अपने बच्चे पति को पालने के लिए देकर आज़ाद हो जाए।

पारुल सिंह : आपकी भाषा पहले से ही बहुत समृद्ध है और आपकी रचनाओं का वह महत्त्वपूर्ण अंग भी है। इस उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में भाषा की बात करें तो इसके लिए क्या-क्या सावधानियाँ अपने बरती? क्योंकि शब्दकोश तो आपका बहुत अच्छा है ही।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : भाषा के लिए मुझे कोई विशेष मेहनत करनी पड़ी हो ऐसा कभी नहीं रहा। भाषा मेरे भीतर संस्कार की तरह रहती है। हाँ मल्लिका की बात करें तो मैंने उस युग की विशुद्ध भाषा को लाने की कोशिश की है। हालाँकि भारतेंदु तो राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद से अंग्रेज़ी सीखते थे। वे तो ग्रैजुएट थे वह इंग्लिश बोलते भी थे।

पारुल सिंह : अच्छा आपको भी पक्षी चिड़िया पसंद है और मल्लिका को भी। (ज़ोर से हँसती हैं दोनों)

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मुझे क्या लगता है कि अगर बंगाल की पृष्ठभूमि से मल्लिका आई है। वह भी चौबीस परगना, घने जंगलों का इलाक़ा था तो उसे पक्षियों की याद ज़रूर आती होगी। प्रकृति का वहाँ वरद-हस्त रहा है तो वहाँ की याद तो उसे आई होगी और उसने भुवन मोहिनी को पाला भी होगा और मेरे आस-पास भी .....मेरा बज़ कूदता, फुदकता रहता था जब मैं 'मल्लिका' लिख रही थी तो यह स्वाभाविक था कि भुवनमोहिनी मैंने रचा।

पारुल सिंह : तो इसे आपने लेखकीय स्वतंत्रता के तहत रचा है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ! यह तो गल्प ही का हिस्सा कुछ लॉजिक का भी कि अगर वह इतनी एकाकी थी तो उसके ममत्व के निकास का माध्यम कोई तो होना ही था। और उस समय शुक - सारिकाएँ पालने का चलन भी था।

पारुल सिंह : और बंकिम चंद्र और ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से संबंध क्या सच में रहा मल्लिका का?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मुझे ऐसा कोई भान नहीं कि बंकिम और मल्लिका कभी मिले होंगे भी कि नहीं, यह गल्प ही है। बस एक सूत्र पर बुना गल्प। जहाँ वसुंधरा डालमिया अपनी किताब 'भारतेंदु हरिश्चंद्र एंड नाइन्टींथ सेंचुरी बनारस' में लिखती हैं कि मल्लिका कहीं नहीं बंकिम की लीनिएज से थीं। और भारतेंदु जी की जीवनी में आया कि मल्लिका के ज़रिये बंकिम के उपन्यासों के हिंदी अनुवाद के अधिकार भारतेंदु जी को प्राप्त हुए थे, और अनुवाद स्वयं मल्लिका और भारतेंदु जी ने किए भी। तो इस सूत्र पर यह बुनना तो बनता था।

मल्लिका की भाषा बताती है कि उसके पास संस्कृत का ज्ञान रहा होगा, इसीलिए उसके पिताजी को भी मैंने संस्कृत के विद्वान के रूप में उपन्यास में रखा। मल्लिका पर बहुत कम लिखा हुआ मिलता है इसमें 10 प्रतिशत सच है बाकी मेरे सूत्रों के सहारे कल्पना कड़ियाँ बहुत जोड़नी पड़ी हैं मुझे।

पारुल सिंह : इसीलिए आपने उस समय की ज्ञात घटनाओं को कहानी में घटित होते भी देश काल के अनुसार बताया। जैसा कि हम सब जानते हैं भारतेंदु उस समय हिंदी के प्रचार-प्रसार में जुटे थे, तो वह मल्लिका को अपना परिचय एक हिंदी प्रचारक के तौर पर देते हैं जब उससे पहली बार मिलते हैं।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ-हाँ और यह बात भी भारतेंदु जी की जीवनी में मिलती है।

पारुल सिंह : एक जगह आपने प्रेम

और नदी के उद्‌गम में समानता की बात बड़ी ख़ूबसूरती से कही है। ऐसे ही बहुत से स्थान हैं जहाँ पाठक लेखक को ढूँढ़ता है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ वह नदी के स्रोत की बात है -प्रेम, प्रतिभा और नदी तीनों आरंभ में तो बहुत छोटे स्रोतों से धीरे-धीरे निकलते हैं। प्रेम-प्रसंगों को लेकर कई जगह मैंने संकेत छोड़े हैं, प्रस्थान बिंदु छोड़े हैं ताकि पाठक स्वयं मल्लिका को समझें। जैसे भारतेंदु मल्लिका से मिलने आते थे और वहाँ से तैयार होकर तवायफ़ों के पास जाते थे तो उसकी जो पीड़ा थी, उसे भी मैंने मूक संकेतों में पाठक के लिए छोड़ा है। अंत भी वैसा ही है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के परिवार वालों का बहुत बड़ा दिल था कि उन्होंने मल्लिका की सामग्री सँभाल कर रखी और उसको बाद में मल्लिका के नाम से छपवाया। हम मल्लिका को जान सके। इसीलिए मैंने अंत में उनकी पत्नी मन्नो को सकारात्मक दिखाया। मन्नो जानती थी कि मल्लिका कोई साधारण स्त्री नहीं थी।

पारुल सिंह : 'मल्लिका' उपन्यास को कैसे लिया जा रहा है पाठक वर्ग में? क्या 'मल्लिका' मनीषा कुलश्रेष्ठ को नई ऊँचाई देगी?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : 'मल्लिका' को बेइंतहा मेरी उम्मीद से ज़्यादा प्यार मिला। पहले ही दिन पुस्तक मेले में मैंने फ्रेक्चर्ड हाथ से मल्लिका की दो सौ कॉपीज़ साइन की थीं। मैं 'मल्लिका' उपन्यास की रचनाकार हूँ मेरे तईं बस यही बहुत है। मुझे ऊँचाइयों के प्रति कोई लोभ नहीं।

'मल्लिका' लिखकर मैं ने तो मल्लिका को ही सामने लाना चाहा था। चाहे मनीषा नेपथ्य में चली जाए मुझे कोई गुरेज़ नहीं।

मुझे प्रसन्नता होगी यह मेरा देय है साहित्य को। 'मल्लिका' को अगर कोई लिखने को कहता कि यह उपन्यास लिखो पर तुम्हारा नाम नहीं जाएगा। तो भी मैं इसे लिखती।

मैं किसी भी किताब को लिखने के कुछ समय तक उससे जुड़ी रहती हूँ। उसके बाद की यात्रा किताब स्वयं तय करती है और मेरे सभी उपन्यासों ने यह यात्रा तय की है व पाठकों तक पहुँचे हैं। मेरा मानना है कि कृति अगर अच्छी है तो वह स्वयं बोलेगी

लेखक को चुप रहना चाहिए। वैसे मैंने देखा है, यहाँ तो लोग कमज़ोर किताबों और रचनाओं की भी बहुत पब्लिसिटी करते हैं लेकिन कालजयी किताबें पाठकों की दृष्टि बनाती है न कि पब्लिसिटी।

पारुल सिंह : ढींगरा फ़ाउण्डेशन कथा सम्मान जब आपको दिया गया तो सम्मान समारोह में गोयनका जी ने कहा कि मैं मान ही नही सकता कि कोई लेखक मल्लिका जैसा पात्र रच दे जब तक उस ने उसे जिया ही न हो, क्या आप सहमत हैं?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ बिल्कुल, हर लेखिका मल्लिका को जीती है, हर लेखिका पर दबाव होता है कि वह किसी पुरुष की छाया के पीछे छिपकर लिखें। मैंने ऐसी छायाओं से खुद को विलग किया है।

उनको स्त्रियों की प्रतिभा से असुरक्षा महसूस होती है। यह डर भारतेंदु जी को भी था जो उन्होंने मल्लिका को अपने लेखन मंडल में, भारतेंदु मंडल में शामिल नहीं किया तो गोयनका जी का सवाल आ ही जाता है ना सामने हर जगह। जहाँ मल्लिका संघर्ष कर रही है, मैं किसी की छाया में नहीं मेरा स्वतंत्र अस्तित्व है, हर उस जगह मनीषा कुलश्रेष्ठ है। बहुत सारे सामाजिक षड्यंत्र हैं जो मल्लिका ने भी झेले, हम सबने भी। मल्लिका को प्रतिभा के होते साइडलाइन किया स्वयं भारतेंदु ने किया।

पारुल सिंह : अच्छा ऐसा भी है कि आप जब किसी साहित्यिक मित्र या गुट के साथ हो तो आपकी वही कृति वही रचना अच्छी है और जब आप साथ नहीं हैं अलग हो गए हैं तो वही कृति वही रचना बुरी हो जाती है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : हाँ हिंदी में साहित्य के धड़े हैं, पक्षपाती गुटबाज़ी है। विचारधारा के नाम पर छुआछूत है। तो आप जुड़िए फिर अलग होइए तो यह होगा ही। इसलिए बेहतर है अलग रहकर केवल जीवन लिखें।

जहाँ मुझे कट्टरता दिखती है, जैसे कि आप बाँध रहे हो लेखक को कस के वायर में कि आप की विचारधारा का शेप लेने लगे तो वहाँ मैं हट गई। मैं लेखक हूँ विशुद्ध लेखक हूँ मेरा मूलभूत कर्तव्य है कि मैं सर्वहारा की बात करूँ। पर आप के शब्दों में सर्वहारा की बात करूँ यह मुझसे ना होगा, मैं अपनी क्रिएटिविटी के साथ सर्वहारा की बात करूँगी। मैं सेकुलरिज़्म पर बात करूँगी तो इकहरी बात नहीं करूँगी। अपनी तरह करूँगी। लेकिन मेरा लेखन सर्वस्वीकृत रहा है तो हर पत्रिका ने छापा चाहे किसी विचारधारा से संबद्ध हो। मैंने इस गंगा जमुनी तहज़ीब में जन्म लेकर जो देखा वह जीवन में लिखती हूँ। मैं कहानी को नारे की तरह कभी नहीं ला सकती जिस दिन मैं नारे की तरह कहानी लिखूँगी ना उस दिन मैं कहानीकार नहीं बनना चाहूँगी नेता बन जाऊँगी। नारे में कहानी को आप एक निश्चित अंत की तरफ ले जाते हैं चाहे कहानी कुछ भी कह रही हो।

पारुल सिंह : मान लो कोई अपनी रचना मैं एक स्त्री के तौर पर जो कि प्रेम में है लिखती हूँ। अपनी संवेदनशीलता से प्रभावित होकर तो उसे कह दिया जाता है कि यह तो अति भावुकता है। यह ग़लत है। तुम बहुत भावुक हो रही हो।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : ऐसा नहीं है मैं भी अति भावुक हूँ जैसे मैं प्रकृति को लेकर भावुक हूँ और तो कहेंगे कि तुम अति भावुकता का शिकार हो या तुम बायस्ड हो गई हो। तो ठीक है।

अभिव्यक्ति हमेशा भावनाओं की लहरों पर सवार होकर ही तो आती है ना पारुल और उनको शब्द देती है। और आप उन भावनाओं को किसी और के हृदय में उतार पाते हो तो यह आपकी अति भावुकता नहीं है यह आपकी रचनात्मक संवेदनशीलता है। जैसे मैं टालस्टाय का उदाहरण दूँ तो आन्ना उनके अंदर उतर गई थी। अंत आते-आते फिर वह आन्ना को महसूस कर पा रहे थे, लेवेन जो है वह स्वयं टॉलस्टॉय का कैरेक्टर है, टॉलस्टॉय आन्ना के प्यार में है लेवेन के रूप में। टॉलस्टॉय ने अपना पूरा का पूरा जीवन उसमें भर दिया है।यदि आप भावुक नहीं होंगे तो इन भावों को दूसरों तक कैसे पहुँचा पाएँगे? तटस्थ चीज़ें लहरें नहीं बनाती

हैं। भावनाएँ लहर बनाती हैं। और वह लहर दूसरे तक पहुँचेगी। तटस्थता तो चट्टान है भावुकता लहर। भावुकता की लहरें अक्सर चट्टानों से टकराती हैं और अभिव्यक्ति पैदा होती है।

पारुल सिंह : मल्लिका प्रगतिशील थी पर विद्रोह नहीं करती थी; करती भी थी तो बहुत धीमा या पलायन कर जाती थी, यहाँ तक कि भारतेंदु के जीवन में दूसरी औरतों के होने का भी उसने विरोध नहीं किया, क्यूँ?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मल्लिका ने जो अपने विद्रोह के मायने वह सीमाएँ रखी हैं विद्रोह की, मैं उन्हें नहीं बदल सकती थी और मल्लिका का प्रेम ही अगर उसकी सबसे बड़ी आज़ादी है तो उस प्रेम पर भी मैं सवाल नहीं कर सकती, मगर मैं मल्लिका के हाथ में 'सिमोन द बोआ' के शब्द नहीं पकड़ा सकती थी। ऐसा उसके साथ करना उसके साथ न्याय नहीं था। हमें उसके फैसले का सम्मान करना होगा। मल्लिका और भारतेंदु के प्रेम की जो सुंदर पेंटिंग है उस पर में स्त्री विमर्श की कूची नहीं चला सकती।

पारुल सिंह : उपन्यास में मल्लिका का कहीं भी ग्लानि या अपराध बोध नहीं दिखा भारतेंदु से प्रेम को लेकर।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मल्लिका ने कम समय में बहुत जीवन देखा। बंगाल से चलकर काशी तक आने में उसने कई पुरुष देख लिए थे, अबोध नहीं रह गई थी। प्रेम, और प्रेम में समर्पण क्या होता है वह जानती थी। मुझे लगता है कि जब आप विशुद्ध प्रेम में हों तो उसमें ग्लानि नहीं होती ग्लानि होती है तो फिर आप प्रेम नहीं कर रहे प्रेम में आप देना चाहते हैं और जब दे रहे हैं अर्पित कर रहे हैं तो ग्लानि नहीं होती।

पारुल सिंह : अब एक आख़िरी सवाल, जिस तरह आपने बंगाल इसमें लिखा है वह अद्भुत है; क्या आप कभी बंगाल में रहीं या शोध हेतु गई थीं?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : रही हूँ ना अभी तीन साल बंगाल में। काफी घूमा। जो बचपन में महाश्वेता देवी, ताराशंकर बंदोपाध्याय, विमल मित्र, शरतचंद्र, आशापूर्णा देवी यह सब अपनी रचनाओं में इतना सुंदर बंगाल हमें देकर गए हैं कि उसकी बंगाल कल्पना

में वैसा ही उभरता है। खुद मैंने भी कई साल देखा। तुम यकीन नहीं करोगी अपने यहाँ प्रेमचंद मार्ग नहीं मिलेगा, तुम नॉर्थ इंडिया में देख लो प्रेमचंद मार्ग नहीं मिलेगा। वेस्ट बंगाल में हर चौराहे पर छोटे गाँव में भी वही टैगोर की मूर्ति लगी है । साफ-सुथरी उस पर रोज़ ताज़ा फूल चढ़ाए जाते हैं। सिलीगुड़ी में मैंने देखा, एक मार्ग जिस पर लिखा था 'प्रेमचंद मार्ग' उत्तर भारत में ऐसा नहीं मिलेगा। नज़रुल बांग्लादेश के हो गए। पर वह भारत में वेस्ट बंगाल में आज भी गाए जाते हैं। उनकी प्रतिमाएँ मिलती हैं। तो बंगाल में साहित्य, संगीत और कलाओं के प्रति जो आग्रह मिलता है वो और कहीं नहीं है।

पारुल सिंह : सवाल आए ही जा रहे हैं रिसर्च कार्य क्या-क्या किया आपने मल्लिका उपन्यास के लिए?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : ढेर सारी रिसर्च। बनारस जाना हुआ। मल्लिका में आए हर तथ्य को जहाँ तक संभव हुआ परखा। जैसे तार सेवा भारत में कब आई ? हावड़ा - बनारस की उन दिनों ट्रेन थी कि नहीं? कैसे डिब्बे होते थे? यह रिसर्च किया कि भारतेंदु के जीवन के रहते उस समय बंकिमचंद्र या ईश्वर चंद्र विद्यासागर जी बनारस आए कि नहीं? कब आए। यह मैं हर उपन्यास में करती हूँ।

पारुल सिंह : मल्लिका उपन्यास लिखने में आपको कितना समय लगा?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मन में लिखने में 2 साल लगे और कलम से लिखने में मैंने 4 महीने लगाए। कहीं अलग-अलग घटनाओं के उपर कई पेज लिखे रखे थे उन्हें एक जगह लगाने में वक़्त लगा। जिगसॉ पज़ल की तरह उन्हें जोड़ा गया। पेज जोड़ने के लिए मुझे अगर नई योजक-कथा भी लिखनी पड़ती है तो मैं वह भी लिखती हूँ। यह साड़ी पर कढ़ाई करने जैसा है, जैसे बड़ी घटनाओं के बड़े मोटिफ्स बना लिए फिर बीच-बीच में जोड़ते हुए बेल-बूटे बनाए जाते हैं।

पारुल सिंह : ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन कथा सम्मान पाकर आपको कैसा लग रहा है?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन समाज के लिए जो कर रहे हैं, वह अभूतपूर्व है। ऐसी संस्था से सम्मान पाना निसंदेह संतोष प्रदान करता है। उस पर सुधा जी और ओम जी का हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति गहरा सरोकार और समर्पण देख मन श्रृद्धा से भर जाता है। वे अपने योगदान पर स्वयं तो नेपथ्य में रहते हैं और किसी को अपनी प्रशंसा में कुछ कहने तक नहीं देते। सुधा ओम ढींगरा जी स्वयं बहुत उम्दा लेखिका हैं, यह मैंने उनका 'नक़्क़ाशीदार केबिनेट' उपन्यास पढ़ कर जाना। ओम जी तो वैज्ञानिक हैं, वैज्ञानिकों की तरह ही विनम्र और अपने देय को देकर फिर अपनी लैब में बंद हो जाने वाले। ये दोनों ज़हीन और बेहतरीन दंपति मेरे मन में सदा ऊँचे पैडस्टल पर रहेंगे।

पारुल सिंह : शिवना प्रकाशन और ढींगरा फ़ाउण्डेशन के इस आयोजन के लिए आप कुछ कहना चाहेंगी? कैसा रहा आयोजन?

मनीषा कुलश्रेष्ठ : शिवना प्रकाशन और ढींगरा फ़ाउण्डेशन का यह आयोजन इतना त्रुटिहीन और आत्मीयता से भरा था कि मैं बार-बार इस आयोजन में आना चाहूँगी। पंकज सुबीर और उनकी युवा ब्रिगेड ने अतिथियों के पल-पल को सुविधा और किसी न किसी आयोजन में व्यस्त रखा। सबसे सुंदर भोपाल की झील पर क्रूज़ में कवि सम्मेलन था। मन से आभारी रहूँगी शिवना और ढींगरा फ़ाउण्डेशन की। सुधा जी और पंकज को विशेष आभार।

पारुल सिंह : शुक्रिया दीदी, बहुत अच्छा लगा मुझे आपसे बात कर। बहुत सारी शुभकामनाएँ आपको भविष्य के रचना कर्म के लिए।

मनीषा कुलश्रेष्ठ : मुझे भी अच्छा लगा तुम इतने इंटेलिजेंट सवाल लेकर आई थी बहुत अच्छा लगा, टिपिकल इंटरव्यू से एकदम अलग।

❑❑❑

बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला आष्टा, ज़िला सीहोर मप्र

15 मार्च 2019 ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र, आष्टा

'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका- शिवना साहित्य समागम' का शुभारंभ पहले दिन सीहोर ज़िले के आष्टा में 'बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला' के आयोजन के साथ हुआ। आष्टा में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका द्वारा आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत वहाँ सौ बालिकाएँ कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। आष्टा में साहू धर्मशाला में इन बच्चियों को मार्गदर्शन देने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने बच्चियों का मार्गदर्शन किया। कार्यशाला का शुभारंभ दोनों अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर प्रशिक्षण केंद्र के प्रभारी सुरेंद्र सिंह ठाकुर तथा महेंद्र सिंह ठाकुर ने अतिथियों का स्वागत किया। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के भारत समन्वयक पंकज सुबीर ने सर्वप्रथम बोलते हुए ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के कार्यों के बारे में विस्तार से चर्चा की। आष्टा में चलाए जा रहे कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में केंद्र प्रभारी सुरेंद्र सिंह ठाकुर ने जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बालिकाओं ने गीत, नृत्य सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। बालिकाओं से चर्चा करते हुए डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने कहा कि बालिकाओं के लिए कठिन समय अब बीत गया है, आने वाला समय अब बालिकाओं का ही है। उन्होंने कहा कि निराश होने या बैठ जाने से कोई भी बाधा पार नहीं होगी, यदि सफलता प्राप्त करनी है तो लड़ना होगा, संघर्ष करना होगा। उन्होंने अपना स्वयं का उदाहरण देते हुए कहा कि मैं स्वयं जीवन में बहुत संघर्ष कर यहाँ तक आई हूँ। उन्होंने कहा कि मेरी कोई बेटी नहीं है, लेकिन अब मुझे ऐसा लगता है कि आप लोगों के रूप में मुझे कई बेटियाँ मिल गई हैं। डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने कहा कि हम आप सबके अच्छे भविष्य को लेकर चिंतित हैं और इसी कारण यह कार्यक्रम चला रहे हैं, ताकि आप लोग कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा ने कहा कि बहुत अच्छा लगता है यह देख कर कि भारत में लड़कियों के अंदर अपने अधिकार को लेकर जागरूकता आ रही है। उन्होंने कहा कि जब मैंने भारत छोड़ा था उस समय और आज में ज़मीन-आसमान का अंतर आ गया है, आज लड़कियाँ अपने अधिकारों को लेकर बहुत जागरूक हैं और संघर्ष से पीछे नहीं हट रही हैं। उन्होंने कहा कि अब आने वाला समय स्किल का है। इस अवसर पर उपस्थित बालिकाओं ने भी दोनों अतिथियों से प्रश्न पूछे, जिनका दोनों अतिथियों ने समाधान किया। कार्यक्रम में सभी बालिकाओं को फ़ाउण्डेशन की ओर से निशुल्क पाठ्य सामग्री भी वितरित की गई। अंत में सभी पधारे हुए अतिथियों का केन्द्र की ओर से श्री भेरू सिंह ठाकुर ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सुरेश कुमार ने किया।

❐❐❐

बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला सीहोर मप्र

16 मार्च 2019 गीता मानस भवन सीहोर, मप्र

'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका- शिवना साहित्य समागम' के दूसरे दिन सीहोर के गीता भवन सभागार में बालिकाओं को मार्गदर्शन देने के लिए 'बालिका सशक्तिकरण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में देश भर से पधारे साहित्यकारों ने उपस्थित रह कर बालिकाओं का मार्गदर्शन किया। जिनमें डॉ. प्रेम जनमेजय, श्री नीरज गोस्वामी, श्री बुधराम यादव, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री पारुल सिंह के साथ फ़िल्म निर्देशक इरफ़ान ख़ान, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक समीर यादव तथा पूर्व विधायक श्री शैलेन्द्र पटेल उपस्थित थे। सीहोर में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका द्वारा आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत वहाँ तीन सौ बालिकाएँ कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। यहाँ पिछले पाँच वर्षों से यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है तथा अभी तक बारह सौ से अधिक बालिकाएँ इस कार्यक्रम का लाभ उठा चुकी हैं। कार्यशाला में पधारे हुए अतिथियों के साथ-साथ ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा, तथा भारत के शिक्षा समन्वयक श्री प्रमोद शर्मा ने भी बच्चियों का मार्गदर्शन किया। सर्वप्रथम डॉ. सुधा ओम ढींगरा तथा डॉ. ओम ढींगरा ने देश भर से पधारे हुए अतिथियों का पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत किया।

सुप्रसिद्ध हिन्दी लेखक सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कार्यशाला में बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे स्वयं भी राजस्थान के एक छोटे से गाँव से आती हैं, जहाँ पानी के लिए दूर-दूर तक जाना पड़ता था। उन्होंने बताया कि उनकी माँ शिक्षक थीं और वे चाहती थीं कि मैं खूब पढ़-लिख कर अपनी ज़िंदगी बनाऊँ। मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी माँ को याद करते हुए कहा कि उन्होंने हमेशा बालिकाओं की शिक्षा के लिए कार्य किए। सुप्रसिद्ध व्यंग्य लेखक डॉ. प्रेम जनमेजय ने अपने संबोधन में कहा कि आज का समय केवल माँगने का हो गया है, ऐसे में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन समाज को प्रदान कर रहा है और समाज का निर्माण कर रहा है। जिन कार्यों के बारे में अब तक मैं केवल पढ़ रहा था उन कार्यों को आज मैं यहाँ आकर देख पा रहा हूँ। यह सचमुच बहुत बड़ा काम है और ज़रूरी भी।

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की उपाध्यक्ष तथा हिन्दी की सुप्रसिद्ध कहानीकार डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने बालिकाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आप लोगों को कोई भी समस्या हो तो हम लोग आपके साथ खड़े हैं। आपकी कोई भी समस्या हो तो आप हमसे संपर्क करें। उन्होंने कहा कि मैंने जीवन में हमेशा बेटी की कमी को महसूस किया, लेकिन इस प्रोजेक्ट के माध्यम से मुझे बहुत सारी बेटियों का प्यार मिला है। उन्होंने एक बच्ची के सवाल के उत्तर में कहा कि हमारी तो यह इच्छा है कि भारत की हर बच्ची को हम कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान करें। उन्होंने कहा कि आने वाला समय कम्प्यूटर के बिना कुछ भी काम करना संभव नहीं होगा इसलिए कम्प्यूटर प्रशिक्षण का यह प्रोजेक्ट हमने शुरू किया। इस अवसर पर

बोलते हुए पूर्व विधायक श्री शैलेन्द्र पटेल ने कहा कि आप सब बालिकाओं को समाज की कुरीतियों के ख़िलाफ़ भी काम करना होगा। उन्होंने कहा कि बाल-विवाह हमारे समाज की एक बड़ी कुरीति है, जिसके ख़िलाफ़ आप बालिकाएँ चाहें तो बहुत अच्छा काम कर सकती हैं। हमें और आपको मिलकर ही सबको जगाना होगा। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री समीर यादव ने कहा कि बालिकाओं को समाज सुधार के लिए आगे आना ही होगा। उन्होंने कहा कि बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं, जहाँ आप लोग बहुत अच्छा काम कर सकती हैं। हर काम सरकार नहीं कर सकती है, हम सब को प्रयास करने की ज़रूरत है। किसी भी अच्छे काम की शुरूआत हमसे ही होती है। इस अवसर पर सीहोर पुलिस द्वारा बालिकाओं के लिए विशेष रूप से बनवाए गए पुलिस सहायता कार्ड का भी लोकार्पण किया गया। मंच पर आसीन अतिथियों ने यह कार्ड कार्यशाला में उपस्थित बालिकाओं में वितरित किए। इन कार्ड में सभी पुलिस अधिकारियों के नंबर दिए गए हैं।

सुप्रसिद्ध लेखक सुश्री पारुल सिंह ने बालिकाओं का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि सही और ग़लत कुछ नहीं होता, जिसे हमारा मन सही और ग़लत कहे वही हमारे लिए सही और ग़लत होता है। उन्होंने कहा कि किसी भी चीज़ से डरना नहीं चाहिए, वो जो चार लोग हैं जिनके बारे में कह-कह कर हमें डराया जाता है, वह कहीं नहीं होते हैं। आप अपनी चेतना को हमेशा जगाए रखें। शिक्षा के साथ सबसे ज़्यादा ज़रूरी है विनम्रता, आप यह सीख कर जाइए कि कितनी ही बड़ी हो जाएँ हमेशा ज़मीन से जुड़े रहना है, विनम्र बने रहना।

इस अवसर पर बालिकाओं ने शिवना क्रिएशंस द्वारा बनाए गए देशभक्ति गीत 'भारत कहानी' की भी प्रस्तुति दी। फ़िल्म निर्देशक इरफ़ान ख़ान ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में सफल होना या ऊँचाइयों को छू लेना कोई बहुत बड़ा काम नहीं है, बड़ा काम होता है एक बहुत अच्छा इन्सान बनना। दुनिया की सबसे बड़ी यौद्धा औरत होती है, माँ होती है, जो जीवन भर अपने परिवार के लिए लड़ती रहती है। आप किसी भी तरह से कमज़ोर नहीं है। दुनिया का कोई काम ऐसा नहीं है, जो आप नहीं कर सकते हैं। जिस काम को करने का आप एक बार अपने मन में ठान लें, उस काम को करने से आपको कोई रोक नहीं सकता।

श्री प्रमोद शर्मा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि विश्व में मानव को लेकर किसी भी प्रकार का कोई बँटवारा नहीं होता है। आप सब को साधुवाद कि आप सब ने हमारे एक स्वप्न को साकार किया। आप सब आने वाले समय में बहुत आगे जाएँ, जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करें, जो प्राप्त करने का सपना आपने देखा है। ढींगरा फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा ने कहा कि पूरी ज़िंदगी एक सीखने की प्रक्रिया है, जो आप सीखेंगे उसे आप से कोई नहीं ले सकता। अंत में आभार संस्था के प्रमुख श्री सनी गोस्वामी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पंकज सुबीर ने किया।

❐❐❐

सम्मानित लेखकों के सम्मान में कार्यक्रम एवं रात्रि भोज

16 मार्च 2019
गीता मानस भवन
सीहोर, मप्र

'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका– शिवना साहित्य समागम' में सम्मानित होने जा रहे साहित्यकारों के सम्मान में सीहोर शहर के नागरिकों द्वारा एक कार्यक्रम का आयोजन स्थानीय गीता मानस भवन के सभागार में किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महामण्डलेश्वर यशोदानंदन पंडित अजय पुरोहित उपस्थित थे, जबकि विशेष अतिथि के रूप में पूर्व विधायक श्री शैलेन्द्र पटेल तथा सीहोर के पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री नरेश मेवाड़ा उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में सभी अतिथियों का पुष्प गुच्छ से स्वागत किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए ग्वालियर से पधारे वरिष्ठ कहानीकार श्री महेश कटारे, डॉ. कमल किशोर गोयनका तथा सुश्री गीताश्री का स्वागत अतिथियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री शैलेन्द्र पटेल ने कहा कि मैं पिछले तीन-चार साल से ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों को देख रहा हूँ। उनसे जुड़ा हुआ हूँ जिन बच्चियों को शिक्षा देने के लिए ढींगरा फ़ाउण्डेशन ने बीड़ा उठाया है। मैं बहुत से कार्यक्रमों में जाता रहता हूँ, लेकिन जिस प्रकार इस संस्था ने बच्चियों की शिक्षा के लिए काम करने की शुरूआत की है, उसके लिए मैं पूरे क्षेत्र की तरफ़ से फ़ाउण्डेशन को धन्यवाद देता हूँ। बच्चियों को सक्षम बनाने के लिए जो कार्य उन्होंने प्रारंभ किया है, उसके निश्चित रूप से बहुत अच्छे परिणाम सामने आएँगे। इन कार्यों को होते हुए देख कर हमें इस बात का एहसास होता है कि अभी भी समाज में, देश में, दुनिया में इस प्रकार के अच्छे लोग हैं, जो दुनिया में दूसरों की ज़िंदगी को और बेहतर बनाने के लिए काम कर रहे हैं। स्थानीय स्तर पर जिस प्रकार का माहौल इन बच्चियों को प्रदान किया जा रहा है, उसे मैंने स्वयं भी प्रशिक्षण केन्द्र में जाकर देखा है। वहाँ सर्वश्रेष्ठ सुविधाओं के बीच इन बच्चियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। श्री पटेल ने देश भर से पधारे हुए साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सब के आने से हमारी यह धरती आज अपने आप को धन्य महसूस कर रही है। साहित्यकारों तथा संतों का किसी भी शहर में आगमन उस शहर को पवित्र बनाने तथा वहाँ नई चेतना जगाने के उद्देश्य से होता है। आप सब के आने से सीहोर में नई चेतना का संचार होगा, नई ऊर्जा का प्रवाह होगा, इस बात की मुझे पूरी उम्मीद है।

पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री नरेश मेवाड़ा ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि मैं ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन को अपनी तरफ़ से बहुत धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने सीहोर शहर को अपने प्रोजेक्ट के लिए चुना है। सीहोर में बहुत से परिवार ऐसे हैं, जो अर्थाभाव के कारण अपनी बच्चियों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण प्रदान नहीं करवा पाते हैं, ऐसे परिवार की बच्चियों के लिए ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री ओम ढींगरा तथा सुधा ओम ढींगरा ने सोचा यह बहुत बड़ी बात है। श्री मेवाड़ा ने देश भर से पधारे हुए सभी साहित्यकारों का स्वागत करते हुए कहा कि सीहोर के लिए यह गौरव की बात है कि देश और दुनिया के ऐसे दिग्गज साहित्यकार आज सीहोर शहर में आए हैं। पूरे शहर की ओर से

मैं सभी का स्वागत करता हूँ, आपने यहाँ पधार कर हमारे शहर का मान बढ़ाया है।

महामण्डलेश्वर पंडित अजय पुरोहित ने इस अवसर पर कहा कि सुधा ढींगरा तथा ओम ढींगरा जैसे लोग वास्तव में संत की श्रेणी के लोग हैं, जो इस प्रकार दूसरों के जीवन को और बेहतर बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं। जिसका कभी अंत न हो उसका नाम संत है। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में लिखा है कि जब सृष्टि का अंत हो जाता है, तो बस दो चीज़ें बचती हैं, एक अमृत और दूसरा शब्द। अमृत का पर्यायवाची शब्द होता है 'सुधा' और जो शब्द अंत में बचा रहता है, वह होता है 'ओम'। इस प्रकार सुधा और ओम सृष्टि के पश्चात् भी जीवन का चिह्न होते हैं। आप लोग ढींगरा फ़ाउण्डेशन के माध्यम से जो कार्य कर रहे हैं, वह वास्तव में संतों द्वारा किए जाने वाले कार्य हैं। पंडित अजय पुरोहित ने कहा कि साहित्य हर युग में समाज के लिए दिशा दिखाने का कार्य करता है। तुलसीदास, वाल्मीकि और वेद व्यास के काल से लेकर मुंशी प्रेमचंद, सूर्यकांत निराला तक जब हम आते हैं तो हम पाते हैं कि समाज को और बेहतर बनाने के लिए एक प्रकार की छटपटाहट इन लेखकों की रचनाओं में होती है। और उनसे होते हुए हम जब आधुनिक काल में आते हैं तो 'अकाल में उत्सव' जैसी रचनाओं के माध्यम से भी हम देखते हैं कि वह छटपटाहट तो वैसी की वैसी है। 'अकाल में उत्सव' भी कोई आज की रचना नहीं है, यह तो बरसों से चली आ रही घटना है। जब हनुमान ने लंका में आग लगा कर लंका को पूरा जला दिया, तो उस जली हुई लंका में बैठ कर भी रावण अपनी पत्नी और दूसरे दरबारियों के साथ संगीत और नृत्य का आनंद लेता है, यह उस युग का अकाल में उत्सव था और रामप्रसाद कमला की कहानी आज का अकाल में उत्सव है। साहित्यकार के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता यह होती है कि वह विनम्र रहे, वह जितना विनम्र होगा, उसकी रचना उतनी बड़ी हो जाएगी। 'अकाल में उत्सव' उपन्यास में रामप्रसाद जब ओले की मार से टूटी हुई फ़सल को लेकर सरकारी कार्यालयों के चक्कर काट रहा है, बस वही तो अकाल में उत्सव है। बस वही तो असली कहानी है।

इस अवसर पर पुरोहित परिवार की ओर से कार्यक्रम में पधारी हुई लेखिकाओं डॉ. सुधा ओम ढींगरा, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री गीताश्री तथा सुश्री पारुल सिंह का सम्मान किया गया। परिवार की ओर से किरण पुरोहित तथा रेखा पुरोहित ने भारतीय पारंपरिक तरीक़े से यह सम्मान किया। तत्पश्चात सुप्रसिद्ध टी वी कलाकार विभोर चौधरी ने उपस्थित श्रोताओं के सामने अपनी प्रस्तुतियाँ दी। उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों से श्रोताओं को ख़ूब गुदगुदाया। कई प्रसिद्ध राजनैतिक व्यक्तियों की मिमिक्री को उन्होंने अपने ही अंदाज़ में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध तबला वादक श्री सुनील भालेराव ने किया तथा अंत में आभार श्री शहरयार अमजद ख़ान ने व्यक्त किया। कार्यक्रम के पश्चात सम्मानित रचनाकारों के सम्मान में आयोजित रात्रि भोज में सीहोर शहर के गणमान्य नागरिकों सपरिवार उपस्थित थे।

❐❐❐

प्रथम उद्घाटन सत्र सम्मानित लेखकों का रचना पाठ एवं पुस्तक चर्चा

17 मार्च 2019 राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल, मप्र

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन का संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' भोपाल के श्यामला हिल्स स्थित राज्य संग्रहालय के सभागार में आयोजित किया गया। इस समारोह में भोपाल के अलावा देश भर से पधारे साहित्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. कमल किशोर गोयनका, डॉ. उर्मिला शिरीष, श्री महेश कटारे, श्री मुकेश वर्मा, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री गीताश्री, श्री वसंत सकरगाए, सुश्री ज्योति जैन, डॉ. पुष्पा दुबे, पारुल सिंह, ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

प्रथम सत्र 'सम्मानित रचनाकारों का पाठ' की अध्यक्षता डॉ. उर्मिला शिरीष ने की तथा मुख्य अतिथि श्री महेश कटारे थे। इस सत्र में सम्मानित रचनाकारों श्री मुकेश वर्मा, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री गीताश्री, श्री वसंत सकरगाए, सुश्री ज्योति जैन ने अपनी सम्मानित रचनाओं का पाठ किया। सम्मानित रचनाकारों की कृतियों पर श्री बलराम गुमाश्ता, श्री विनय उपाध्याय, श्री समीर यादव तथा डॉ. गरिमा संजय दुबे ने टिप्पणी की।

श्री मुकेश वर्मा के पुरस्कृत कहानी संग्रह ''सत्कथा कही नहीं जाती'' पर टिप्पणी करते हुए श्री बलराम गुमाश्ता ने कहा कि मुकेश वर्मा वह कहानीकार हैं जो अपनी कहानियों में बहुत सहजता से जीवन के अंतर्द्वंद्वों, जटिलताओं और असत्य के मायाजाल को भेदने का पुरुषार्थ रचते हैं। मानवता को बचाने हेतु कारुणिक पुकार उनकी कहानियों की एक बड़ी विशेषता है। उनका कहना है कि कहानी लिखना उनके लिए जीवन को बचा लेने का एक प्रयास है। इस अवसर पर श्री मुकेश वर्मा ने अपनी चर्चित कहानी 'होली' का पाठ किया।

सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ के पुरस्कृत उपन्यास ''मल्लिका'' पर टिप्पणी करते हुए सुश्री गीताश्री ने कहा कि जबसे मैंने मल्लिका पढ़ी है, तबसे मल्लिका मेरा साथ ही नहीं छोड़ रही है। रचना कैसे एक रचनाकार की दृष्टि बदल देती है, यह मैंने मल्लिका को पढ़कर ही जाना है। उन्नीसवीं शताब्दी में स्त्री विमर्श एक नया रूप ले रहा था, तब मार्गरेट आई। मल्लिका को कब पता था कि बरसों बाद कोई मनीषा कुलश्रेष्ठ आएँगी जो उनकी कहानी को अपने अंदाज़ में लिखेंगी। मैं मल्लिका उपन्यास को आधुनिक समय में स्त्री विमर्श का सबसे बड़ा उपन्यास मानती हूँ। जिस सिस्टरहुड की बात आज होती है, इस उपन्यास में कितनी ख़ूबसूरती से उसकी बात की गई है। भारतेंदु के जीवन में जितनी स्त्रियाँ हैं, उनके बीच किस प्रकार का बहनापा है, उसको कितनी ख़ूबसूरती से पकड़ा है मनीषा कुलश्रेष्ठ ने। मल्लिका ने मेरी सोच को भी बदलने का काम किया है। उपन्यास का अंश पढ़ने से पहले सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ ने कहा गीताश्री ने जिसे ख़ूबसूरती के साथ उपन्यास के मर्म को छुआ है उसे सुन कर मैं भी हतप्रभ हूँ। उन्होंने इस अवसर उपस्थित श्रोताओं को अपने पुरस्कृत उपन्यास मल्लिका का अंत का अंश पढ़ कर सुनाया जहाँ भारतेंदु हरिश्चंद्र की मृत्यु होती है।

सुश्री गीताश्री के पुरस्कृत उपन्यास ''हसीनाबाद'' पर टिप्पणी करते हुए श्री समीर

यादव ने कहा कि गीताश्री जी नवाज़िशों के साथ इस उपन्यास की शुरूआत करती हैं। एक बहुत पाठकीय दृष्टिकोण से जब मैं इसे देखता हूँ कि इसमें अलग-अलग पात्र हैं और उनका अंतर्द्वंद्व बहुत अच्छे से व्यक्त किया गया है। इसमें गीताश्री जी ने प्रेम के भी बहुत अद्भुत दृश्य रचे हैं। गोलमी की माँ को लेकर जो प्रेम दृश्य रचे हैं वो बहुत ही सुंदर तरीक़े से रचे गए हैं। उपन्यास की भाषा बहुत ही समृद्ध भाषा है, गोलमी के पात्र को जिस प्रकार से उन्होंने गढ़ा है, उससे ऐसा लगता है कि गोलमी सजीव होकर हमारे सामने आ गई है। मेरा ऐसा मानना है कि हसीनाबाद एक कालजयी रचना है। सुश्री गीताश्री ने अपने उपन्यास का अंश पढ़ने से पहले सभी का आभार व्यक्त किया हसीनाबाद को स्वीकृति प्रदान करने के लिए। उन्होंने अपने पुरस्कृत उपन्यास हसीनाबाद से 'हाँ मैं बेवफ़ा हूँ' अंश का पाठ किया।

श्री वसंत सकरगाए के पुरस्कृत कविता संग्रह ''पखेरू जानते हैं'' पर टिप्पणी देते हुए श्री विनय उपाध्याय ने कहा कि वंसत सकरगाए की कविता को मैं याद करूँ तो मुझे उनके प्रारंभ की कविताएँ याद आती हैं। नौ बरस पूर्व आया उनका संकलन एक भावाकुल कवि की स्मृतियों का दस्तावेज़ है। और अब यह दूसरा संग्रह। वसंत सकरगाए का कवि अनुभव की आवाजाही में प्रौढ़ होते हुए भाव से विचार की ओर बढ़ गया है। उन्होंने वसंत सकरगाए की कविता 'पिता की विरासत' का भी पाठ किया। इस अवसर पर श्री वसंत सकरगाए ने अपने पुरस्कृत कविता संग्रह ''पखेरू जानते हैं'' से कविता 'जनेऊ' का पाठ किया।

सुश्री ज्योति जैन के पुरस्कृत उपन्यास ''पार्थ तुम्हें जीना होगा'' पर टिप्पणी डॉ. गरिमा संजय दुबे ने कहा कि ज्योति जैन जी ने अपने पहले ही उपन्यास के रूप में राजनीति को विषय बना कर एक साहस का काम किया है। यह वो विषय है जिस पर लिखने से अमूमन महिला कथाकार बचती रही हैं। यह उपन्यास अच्छाई और बुराई के बीच के संघर्ष को बहुत अच्छे से सामने लाता है और पूरी रोचकता के साथ पाठक को अपने साथ बाँधे रखता है। यह उपन्यास बहुत प्रवाहमय भाषा के साथ लिखा गया है। इस अवसर पर सुश्री ज्योति जैन ने अपने पुरस्कृत उपन्यास ''पार्थ तुम्हें जीना होगा'' से एक अंश का पाठ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही वरिष्ठ कहानीकार डॉ. उर्मिला शिरीष ने कहा कि भोपाल में एक नई शुरूआत आज होने जा रही है, जो कार्यक्रम पूर्व में अमेरिका और कैनेडा में आयोजित हुआ अब वह भोपाल में आयोजित हो रहा है। यह कार्यक्रम निश्चित रूप एक मील का पत्थर होने जा रहा है। श्री महेश कटारे ने कैनेडा यात्रा के अपने संस्मरण सुनाते हुए फ़ाउण्डेशन को साधुवाद दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्य में इस प्रकार के सुव्यवस्थित और अनुशासित कार्यक्रम बहुत ज़्यादा देखने को नहीं मिलते हैं। कार्यक्रम के अंत में सुधा ओम ढींगरा ने दोनों अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। अंत में आभार शिवना प्रकाशन की पारुल सिंह ने व्यक्त किया। संचालन पंकज सुबीर ने किया।

❐❐❐

द्वितीय सत्र ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन एवं शिवना अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह

17 मार्च 2019 राज्य संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल, मप्र

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका के प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान तथा शिवना प्रकाशन के अंतर्राष्ट्रीय कथा-कविता सम्मान प्रदान किए गए।

दूसरे सत्र 'अलंकरण समारोह' में अध्यक्षता वरिष्ठ कवि कथाकार श्री संतोष चौबे ने की जबकि मुख्य अतिथि देशबंधु समाचार पत्र के संपादक श्री पलाश सुरजन थे। सभी सम्मानों के तहत सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल तथा सम्मान पट्टिका प्रदान की गई। सम्मान समारोह में प्रदान किए गए सम्मानों में 'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन लाइफ़ टाइमसम्मान' डॉ. कमल किशोर गोयनका को, 'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अंतर्राष्ट्रीय कथा सम्मान' उपन्यास विधा में सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ को उपन्यास 'मल्लिका' हेतु तथा कहानी विधा में श्री मुकेश वर्मा को कहानी संग्रह 'सत्कथा कही नहीं जाती' हेतु प्रदान किया गया। शिवना प्रकाशन का 'अंतर्राष्ट्रीय शिवना कथा सम्मान' सुश्री गीताश्री को उपन्यास 'हसीनाबाद' के लिए, 'अंतर्राष्ट्रीय शिवना कविता सम्मान' श्री वसंत सकरगाए को कविता संग्रह 'पखेरू जानते हैं' तथा 'अंतर्राष्ट्रीय शिवना कृति सम्मान' उपन्यास 'पार्थ तुम्हें जीना होगा' के लिए कथाकार, सुश्री ज्योति जैन को प्रदान किया गया। ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा तथा उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा तथा मंचासीन अतिथियों के साथ सम्मानित रचनाकारों को यह सम्मान प्रदान किए। 'ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन लाइफ़ टाइम सम्मान' डॉ. कमल किशोर गोयनका को दिए जाते समय सभागार में उपस्थित सभी श्रोताओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर करतल ध्वनि से स्वागत किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत वक्तव्य देते हुए ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन की उपाध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध कहानीकार डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने फ़ाउण्डेशन द्वारा भारत तथा दूसरे देशों में फ़ाउण्डेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में श्रोताओं को जानकारी प्रदान की। उन्होंने भारत में शिक्षा तथा स्वास्थ्य को लेकर चलाई जा रही विभिन्न परियोजनाओं के बारे में बताया। साथ ही अमेरिका में वृद्धों और निशक्तों के इलाज को लेकर चलाई जा रही फ़ाउण्डेशन की योजना के बारे में भी जानकारी प्रदान की। हिन्दी को लेकर अमेरिका में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन द्वारा जो काम किए जा रहे हैं उनकी भी उन्होंने प्रमुखता से चर्चा की।

इस अवसर पर सभी सम्मानित रचनाकारों की ओर से बोलते हुए डॉ. कमल किशोर गोयनका ने कहा कि महान् व्यक्तिओं के भी दो पक्ष होते हैं। एक वह पक्ष होता है जो कला पक्ष के रूप में सामने आता है, और दूसरा वह पक्ष होता है जो कि असली पक्ष होता है। जहाँ वह भी एक सामान्य इन्सान की तरह ही कमज़ोर होता है। श्री गोयनका ने कहा कि निरंतर बेचैनी होती है, जो कुछ नया करने के लिए मजबूर करती रहती है। उन्होंने प्रेमचंद पर किए गए अपने कार्य के बारे में भी श्रोताओं को जानकारी प्रदान की तथा प्रेमचंद को लेकर कई रोचक जानकारियाँ साझा कीं। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद अपनी कृतियों में नैतिकता और

मनुष्यता के उच्चतम स्तर को छूते हैं। यही बात प्रेमचंद को अपने समकालीनों से बिलकुल अलग कर देती है। प्रेमचंद इसीलिए आज भी सबसे पसंदीदा लेखक बने हुए हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री पलाश सुरजन ने साहित्य की विधाओं के बीच पारस्परिक अंर्तसंबंधों पर काम किए जाने की बात कही, तथा देश के बाहर काम कर रहे हिन्दी सेवियों की सराहना की। सभी रचनाकारों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि रचनाकारों का यह सम्मान वास्तव में मेरा भी सम्मान है। मेरे लिए यह बात माथे से बड़े तिलक के समान है। पंकज सुबीर से मेरा परिचय तब से है जब वे पत्रकार हुआ करते थे, तब भी हमने साथ काम किया। पंकज की तरह मैं साहित्यकार तो नहीं बन पाया लेकिन हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बन कर कहीं न कहीं साहित्य से जुड़ गया हूँ। एक लेखक के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सबसे बड़ी चीज़ है। लेकिन पिछले कुछ समय से इस स्वतंत्रता पर लगातार आक्रमण हो रहे हैं, लोगों अपनी बात कहने से रोका जा रहा है, हत्याएँ हो रही हैं। लेखक होने के नाते हम सबको मिल कर इन सबके विरोध में आवाज़ उठानी चाहिए। सोशल मीडिया पर इन दिनों लेखकों को जिस प्रकार आत्ममुग्धता का शिकार देखता हूँ, उससे बहुत निराशा होती है। नए लेखकों को आगे बढ़ाना हम सभी लोगों की ज़िम्मेदारी है। इसी से लेखकीय परंपरा आगे बढ़ सकेगी। हमें आने वाले समय के लेखकों को तराशना ही होगा।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री संतोष चौबे ने कहा कि बड़ी प्रसन्नता की बात है कि भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है, इससे भोपाल की साहित्यिक गतिविधियों को और बल मिलेगा। आज इतना सारा कुछ घटित हुआ है कि मुझे समझ ही नहीं आ रहा है कि मैं किस पर बोलूँ। मुझे लगता है कि यह इस समय की ज़रूरत है, हमें सरकारों से हट कर स्वयं अपने बूते पर इस प्रकार के आयोजन करने की ज़रूरत है। चूँकि सरकारें इस प्रकार के आयोजन नहीं करना चाहती हैं। यह आयोजन एक प्रकार की समाज सेवा है। चूँकि इस प्रकार के आयोजन कलाओं के संरक्षण के लिए किए जा रहे हैं। प्रत्येक लेखक को अपने लेखन के अलावा एक और काम ज़रूर करना चाहिए जो समाज से जुड़ा हुआ हो। लेखक यदि केवल अपने लेखन पर ही केन्द्रित रहता है समाज को लेकर कुछ नहीं सोचता, तो वह अपने दायित्वों से दूर होने लगता है। सुधा ओम ढींगरा तथा ढींगरा फ़ाउण्डेशन इस प्रकार के काम कर रहे हैं, यह बात मुझे बहुत अच्छी लगी। यह कहीं न कहीं अपने सरोकारों से जुड़ाव है। लेखक और उसकी कला दोनों अलग-अलग होते हैं, कोई भी रचनाकार जो लिख रहा है, जो कुछ रच रहा है अंततः वह ही महत्त्वपूर्ण होता है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. ओम ढींगरा तथा रेखा पुरोहित ने सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। अंत में आभार शिवना प्रकाशन के श्री नीरज गोस्वामी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पंकज सुबीर ने किया।

❐❐❐

तृतीय सत्र
शिवना प्रकाशन
पुस्तक विमोचन
समारोह

17 मार्च 2019
राज्य संग्रहालय,
श्यामला हिल्स,
भोपाल, मप्र

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' में तीसरे सत्र 'विमोचन समारोह' में शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेम जनमेजय ने की जबकि मुख्य अतिथि के रूप में श्री शशिकांत यादव उपस्थित थे।

इस अवसर पर 'रेखाएँ बोलती हैं भाग-2'- रेखाचित्र, गीताश्री,'पार्थ तुम्हें जीना होगा'- उपन्यास का नया संस्करण, ज्योति जैन, '51 किताबें ग़ज़लों की भाग 2' - समीक्षा संग्रह, नीरज गोस्वामी, 'फ़रहाद नहीं होने के' - ग़ज़ल संग्रह, नुसरत मेहदी, 'सरला मैडम के मिस्ड कॉल'- कहानी संग्रह, डॉ. कमल चतुर्वेदी, 'चुनी हुई कविताएँ'- कविता संग्रह, राजेन्द्र नागदेव, 'दो ध्रुवों के बीच की आस'- कहानी संग्रह, डॉ. गरिमा संजय दुबे, 'वक़्त की गवाही'- गीत संग्रह, बुधराम यादव, 'एक शाम हरी घास पर'- व्यंग्य संग्रह, कमलानाथ, 'प्रेम पॉलीटिक्स'- नाटक, प्रसन्न सोनी, 'हैश टैग मी टू'- कहानी संग्रह, आकाश माथुर, 'कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न कारण और निवारण'- शोध, शहरयार अमजद ख़ान, 'बारह चर्चित कहानियाँ'- कहानी संकलन, संपादन सुधा ओम ढींगरा, पंकज सुबीर, 'मेरा दावा है'- कविता संकलन, संपादन सुधा ओम ढींगरा, 'विमर्श दृष्टि, सुधा ओम ढींगरा का साहित्य'- आलोचना, संपादन पंकज सुबीर , 'यायावर हैं, आवारा हैं, बंजारे हैं'- यात्रा वृतांत, पंकज सुबीर, 'होली'- कहानी संग्रह, पंकज सुबीर, 'कुबेर'- उपन्यास, डॉ. हंसा दीप कैनेडा, 'इस समय तक'- कविता संग्रह, धर्मपाल महेन्द्र जैन का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में वाणी प्रकाशन से प्रकाशित सुश्री गीताश्री के सम्मानित उपन्यास 'हसीनाबाद' के नये पेपरबैक संस्करण का भी विमोचन किया गया। इस अवसर पर ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन तथा शिवना क्रिएशंस के गणतंत्र दिवस के अवसर पर जारी किए गए अत्यंत सफल वीडियो ''भारत कहानी'' के निर्देशक श्री इरफ़ान ख़ान की आने वाली फ़िल्म 'शरद पूर्णिमा' के पोस्टर का विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। इस फ़िल्म की कहानी, पटकथा, संवाद तथा गीत लेखन का कार्य पंकज सुबीर ने किया है।

कार्यक्रम में ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के कार्यों में सक्रिय भागीदारी प्रदान करने हेतु प्रशस्ति चिह्न भी प्रदान किए गए। यह प्रशस्ति चिह्न श्री राजेश शुक्ला, स्टेट हैड आइसेक्ट, रवीन्द्रनाथ टेगौर विश्वविद्यालय, श्री संतोष उपाध्याय, रीज़नल हैड, आइसेक्ट, रवीन्द्रनाथ टेगौर विश्वविद्यालय, श्री राजेन्द्र शर्मा, प्रेस छायाकार, श्री जुबैर शेख़, डिज़ायनर, प्रिंटर, श्री शरद शर्मा, कोरियर संचालक तथा निर्देशक श्री इरफ़ान ख़ान को प्रदान किए गए। श्री इरफ़ान ख़ान को ''भारत कहानी'' की अपार सफलता के लिए अतिथियों ने शॉल भेंट कर सम्मानित किया। वे सभी रचनाकार जिनकी पुस्तकों का विमोचन किया गया, उनको शिवना प्रकाशन की ओर से श्री नीरज गोस्वामी ने स्मृति चिह्न भेंट किए। सभी को शिवना प्रकाशन का लोगो स्मृति चिह्न के रूप में प्रदान किया गया।

डॉ. प्रेम जनमेजय ने शिवना प्रकाशन और ढींगरा फ़ाउण्डेशन द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह संस्थाएँ बड़ा काम कर रही हैं। शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में मैंने पूर्व में भी भाग लिया है। शिवना प्रकाशन के साथ मैं जुड़ा हुआ हूँ। वह सोच जो इन किताबों का प्रकाशन कर रही है, पत्रिका का प्रकाशन कर रही है। यह सोच वह है जिसका सोचना यह है कि क़लम और गरदनें दोनों ही नहीं झुकना चाहिए। जिस प्रकार के गुणवत्ता और अनुशासन से शिवना प्रकाशन काम कर रहा है, उससे बड़े प्रकाशकों को भी बहुत कुछ सीखे जाने की ज़रूरत है। जब एक सोच को लेकर काम किया जाता है तो उसके इसी प्रकार के अच्छे परिणाम सामने आते हैं। यह पुस्तकें केवल छापने के लिए नहीं छापी जा रही हैं। यह पत्रिकाएँ छापने के लिए नहीं छापी जा रही हैं। यह किताबें यह पत्रिकाएँ परिवर्तन का सूत्रपात करने के लिए प्रकाशित हो रही हैं, इसलिए ही मैं इनसे जुड़ाव महसूस करता हूँ। शिवना परिवार का मैं भी एक हिस्सा हूँ।

श्री शशिकांत यादव ने कहा कि भविष्य में यह दोनों संस्थाएँ हिन्दी साहित्य की प्रमुख संस्थाएँ होंगी। मैं शिवना प्रकाशन परिवार से जुड़ा हुआ हूँ। शिवना प्रकाशन के साथ आप सबकी सद्भावनाएँ, आपका सहयोग तथा आपका परामर्श तथा स्नेह बना रहेगा, तो हम सब मिलकर आगे और भी इस कार्यक्रम और आगे आयामों तक ले जाने का प्रयास करेंगे। शिवना मेरी अपनी संस्था है, इसलिए आज मैं भी आप सबका अभिनंदन करता हूँ।

कार्यक्रम के अंत से पूर्व सुधा ओम ढींगरा तथा पंकज सुबीर ने साहित्य समागम के पृष्ठ में कार्यरत आयोजन समिति के सक्रिय तथा ऊर्जावान सदस्यों श्री उमेश शर्मा, श्री अनिल पालीवाल, श्री कैलाश अग्रवाल, श्री समीर यादव, श्री हितेन्द्र गोस्वामी, श्री राजेंद्र शर्मा, श्री सुनील भालेराव, श्रीमती अनीता भालेराव, श्री सुदेश विश्वकर्मा, श्री आकाश माथुर, श्री धर्मेंद्र कौशल, श्री सुरेंद्र सिंह ठाकुर, श्री सनी गोस्वामी, श्री शरद शर्मा, श्री शहरयार ख़ान, श्री शिवम गोस्वामी, श्री सुनील पेरवाल, श्री फ़राज़ ख़ान, श्री सिद्दीक़ ख़ान, श्री सचिन पुरोहित, परी पुरोहित तथा पंखुरी पुरोहित से श्रोताओं का परिचय करवाया। श्रोताओं ने करतल ध्वनि से गरिमामय तथा सफल आयोजन के लिए पूरी आयोजन समिति का स्वागत किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. ओम ढींगरा तथा रेखा पुरोहित ने अतिथियों को स्मृति चिह्न प्रदान किए। अंत में आभार व्यक्त करते हुए ढींगरा फ़ैमिल फ़ाउण्डेशन के श्री प्रमोद शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम वास्तव में आयोजन समिति द्वारा पिछले दो माह से की जा रही मेहनत का परिणाम है। इसकी सफलता के लिए समिति का एक-एक सदस्य धन्यवाद का पात्र है। वह लोग जो सामने नहीं आते हैं, दिखाई नहीं देते हैं, यह कार्यक्रम असल में उनके ही परिश्रम और सोच से आज इस प्रकार की सफलता को प्राप्त हुआ है। उन्होंने सभी पधारे हुए श्रोताओं का भी आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन पंकज सुबीर ने किया।

❐❐❐

चतुर्थ सत्र
कविता की एक शाम लहरों के नाम

17 मार्च 2019
क्रूज़, मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग, बड़ा तालाब, भोपाल

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका तथा शिवना प्रकाशन के संयुक्त आयोजन 'साहित्य समागम' में चतुर्थ सत्र – 'कविता की एक शाम लहरों के नाम' का आयोजन एक अभिनव प्रयोग करते हुए झीलों के शहर भोपाल में मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के बड़ा तालाब स्थित क्रूज़ पर किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता श्री नीरज गोस्वामी ने की, मुख्य अतिथि भोपाल के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री मनु व्यास थे। संचालन श्री शशिकांत यादव ने किया। इस कविता की शाम में श्री बुधराम यादव, श्री चौधरी मदन मोहन समर, श्री शैलेन्द्र शरण, श्री रघुवीर शर्मा, सुश्री अर्चना नायडू, सुश्री पारुल सिंह, श्री मोहम्मद आज़म, श्री बद्र वास्ती, श्री पंकज सुबीर, सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

अपने ही तरह के अनूठे प्रयोग में बड़े तालाब की लहरों पर तैरते हुए क्रूज़ पर बैठे श्रोताओं ने कवियों द्वारा प्रस्तुत की जा रही कविताओं का आनंद लिया। श्रोताओं में वरिष्ठ व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय, वरिष्ठ कथाकार श्री महेश कटारे, सम्मानित रचनाकार सुश्री गीताश्री, सहित आयोजिन समिति के सभी सदस्य श्री शैलेन्द्र पटेल, श्री अनिल पालीवाल, श्री हितेन्द्र गोस्वामी, श्री कैलाश अग्रवाल, श्री सुनील भालेराव, श्रीमती अनीता भालेराव, श्रीमती रश्मि मनु व्यास, श्री अथर अली, श्री राजेन्द्र शर्मा, श्री रईस शाह उपस्थित थे। श्रोताओं ने कवियों द्वारा सुनाई जा रही कविताओं पर ख़ूब जम कर दाद दी। क़रीब तीन घंटे तक शाम सात बजे से रात दस बजे तक यह क्रूज़ बड़े तालाब की लहरों पर विचरता रहा और उस पर कविता के स्वर गूँजते रहे। वीआइपी रोड तथा नए बने भोज सेतु की पानी में बनती झिलमिलाती लाइटों की परछाँइयों के बीच लहरों पर तैरते क्रूज़ पर साहित्य समागम के समापन की शाम एक यादगार शाम बन कर रह गई। कवियों और शायरों ने अपने-अपने रंग की कविताएँ प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। यह साहित्य समागम का चौथा और अंतिम सत्र था। पूर्व के तीन सत्र राज्य संग्रहालय के सभागार में संपन्न हुए थे और दो घंटे के अंतराल के बाद चौथा सत्र ठंडी-ठंडी हवा के बीच बहते क्रूज़ पर संपन्न हो रहा था।

काव्य संध्या का प्रारंभ सुश्री अर्चना नायडू ने अपनी कविता से किया 'पहना दिया मेरे गले में मंगल सूत्र तुमने पर मेरी धड़कनें नहीं पढ़ सके तुम, जिसकी थी मुझको सबसे ज़्यादा दरकार'। इस अवसर पर सुश्री पारुल सिंह ने अपनी कविता 'मुझे तो चाहने की आदत है' का पाठ किया। 'तुम्हारे बातों में हिप्रोटिज़्म, तुम्हारी स्वभाव में सादगी कम भी होती, तब भी तुम्हारे लिए मेरी दीवानगी यूँ ही होती, मुझे तो चाहने की आदत है। मुझे तो खामखाँ के रोग पालने की आदत है।' इस अपनी ही तरह की कविता को श्रोताओं ने ख़ूब सराहा।

हिन्दी के वरिष्ठ कवि तथा बिलासपुर छत्तीसगढ़ से पधारे श्री बुधराम यादव ने अपनी ही विशिष्ट तरन्नुम में अपनी कविताएँ पढ़ीं। 'त्याग भेदभाव सभी स्नेह से गले मिले। विपदाओं में भी लगे जो सदा खिले खिले, जिसकी अंतरात्मा में निज का न गुमान हो, स्नेह सनेह शब्द प्रेम से पगी ज़ुबान हो। तेरे लिए गाऊँगा मैं गीत ज़िंदगी।' श्रोताओं ने श्री यादव के मुक्तों को

ख़ूब दाद प्रदान की। उन्होंने अपना एक गीत भी सुमधुर अंदाज़ में प्रस्तुत किया।

सुप्रसिद्ध शायर बद्र वास्ती ने अपने ही अंदाज़ में ग़ज़लें पढ़ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया 'तुमसे तुम्हारा घर ही अब तक सँभल न पाया, ढाका गँवा चुके हो कश्मीर क्या करोगे।', 'बनाएँ आओ सब मिलकर नई तस्वीर भारत की, उठो आगे बढ़ो हम सब करें तामीर भारत की।', 'क्या सलीक़े से काम करते हो, सब हँस कर कलाम करते हो, हमसे कुछ काम पड़ गया है क्या, आते-जाते सलाम करते हो' शेरों को ख़ूब सराहा गया।

हिन्दी कवि सम्मेलन मंचों के वीर रस के कवि चौधरी मदन मोहन समर ने अपनी अलग कविताएँ पढ़ीं 'सुनो' कविता के माध्यम से उन्होंने पति और पत्नी के बीच उम्र बीत जाने के बाद होने वाली बातचीत को बहुत ही रोचक अंदाज़ में प्रस्तुत किया। खंडवा से पधारे नवगीतकार रघुवीर शर्मा ने अपनी प्रतिनिधि कविता 'चारों और कुहासा है' का पाठ किया। 'जाने क्या मौसम की मर्ज़ी देता रहा दिलासा है, चारों और कुहासा है।' पंक्ति को श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया। खंडवा से ही पधारे गीत-ग़ज़लकार शैलेन्द्र शरण ने अपनी एक मार्मिक कविता 'पिता' का पाठ किया, वहीं मानव-संवेदना को झकझोरती अपनी कविता 'तथागत हम कहाँ जाएँगे' के द्वारा उन्होंने श्रोताओं को ख़ूब प्रभावित किया।

सुप्रसिद्ध शायर डॉ. आज़म को श्रोताओं ने बहुत पसंद किया 'यूँ लिखने को हमने भी लिक्खा बहुत है, पसंद आए एक शेर इतना बहुत है, नहीं ज़हर की थैली इन्साँ के मुँह में, ज़बाँ से मगर वो उगलता बहुत है, अजब हाल में महफ़िलें हैं अदब की, सुख़न कम हुनर कम तमाशा बहुत है।' पर श्रोताओं ने जमकर दाद दी। पंकज सुबीर ने अपनी प्रतिनिधि ग़ज़ल 'अभी तुम इश्क़ में हो' तथा एक अन्य ग़ज़ल 'बड़ी जानी हुई आवाज़ में' पढ़ी।

'आसमाँ से आँसुओं तक बह रही है ज़िंदगी, ध्यान से सुन लो ज़रा कुछ कह रही ज़िंदगी। जाने क्या क्या पा लिया है, खुद को न पाया कभी, साँस की सरगम पर मन का गीत न गाया कभी' क्रूज़ पर कवि मंच का कुशलता से संचालन कर रहे देश के सुप्रसिद्ध संचालक, कवि श्री शशिकांत यादव ने अपने इस गीत का सस्वर पाठ कर दाद हासिल की।

सम्मानित रचनाकार सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ ने भी अपनी ग़ज़ल 'ये कैसी दानिशमंदी है, नादान को दाना डाले है' पढ़ी जिसे श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया। अंत में अध्यक्षता कर रहे श्री नीरज गोस्वामी ने अपनी सुप्रसिद्ध ग़ज़ल 'करें जब पाँव ख़ुद नर्तन समझ लेना कि होली है, हिलोरे ले रहा हो मन, समझ लेना कि होली है' और 'दर्द दिल में मगर लब पे मुस्कान है, हौसलों की हमारे ये पहचान है' को तरन्नुम में पढ़कर श्रोताओं की दाद हासिल की।

कार्यक्रम के पश्चात् डॉ. प्रेम जनमेजय, सुश्री पारुल सिंह तथा सनी गोस्वामी के जन्मदिन का केक काटा गया, इन तीनों का जन्मदिन कार्यक्रम की तारीख़ के आसपास ही थे। अंत में आभार श्री समीर यादव ने व्यक्त किया।

❐❐❐

हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ: रचना प्रक्रिया और आयाम पर अंतर्राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी

सीहोर की भूमि साहित्य की दृष्टि से उर्वरा है। साहित्य के पठन-पाठन, लेखन से इतर साहित्यिक परिदृश्य की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को लेकर चर्चा का दो दिवसीय महत्त्वपूर्ण आयोजन जिले के अग्रणी चन्द्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीहोर में किया गया। जहाँ 'हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ : रचना प्रक्रिया और आयाम' विषय पर केन्द्रित हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शोध-संगोष्ठी के तहत देश विदेश से आये विद्वानों ने विचार मंथन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने दीप प्रज्जवलन कर किया। अकादमिक सत्र के प्रारंभ में संयोजक डॉ. पुष्पा दुबे ने अपने वक्तव्य में साहित्यकारों की मनोभूमि, भावनाओं के आवेग की स्थिति एवं रचनाओं के रूप में उन भावों की परिणति को कविताओं के संबंध में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने कहा कि विश्व भर में कलाओं की सारी रचना प्रक्रिया तेज़ी के साथ बदल रही है, ऐसे में साहित्य और हिन्दी इससे कैसे अछूती रह सकती है। उन्होंने कहा कि भारत में इन दिनों लेखन बिलकुल अलग तरह से हो रहा है, तो वहीं विदेशों में बसे भारतीय लेखक भी इस नएपन के साथ ही चल रहे हैं। यह साहित्य के लिए परिवर्तन का समय है। मगर इस परिवर्तन की नब्ज़ पर लेखक अपनी उँगली रखे हुए है। सत्र के अंत में प्राचार्य डॉ. आशा गुप्ता ने सुधा ओम ढींगरा को स्मृति चिह्न भेंट किया।

समापन सत्र में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. आशा गुप्ता एवं डॉ. पुष्पा दुबे ने अतिथियों का स्वागत किया। विशिष्ट वक्ता सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ (त्रिवेन्द्रम) ने उपन्यास विधा पर अपनी बात को केन्द्रित करते हुए कहा कि अगर आप विकट पाठक हैं तो भविष्य में अच्छे लेखक बन सकते हैं। उन्होंने निर्मल वर्मा, रांगेय राघव, कृष्ण बल्देव वैद्य, मनु भण्डारी, कृष्णा सोबती आदि की चर्चा करते हुए अपने उपन्यासों की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। कवयित्री पारुल सिंह (नोयडा) ने अपने उद्बोधन में कहा कि कविता जितना संकेतों मे बात करती है, उतनी अच्छी मानी जाती है। मनुष्य होना भाग्य की बात है तो कवि होना सौभाग्य की बात। संवेदनशीलता को जब तक आप शब्द नहीं देते, आपके भीतर बेचैनी बनी रहती है। प्रख्यात व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय (नई दिल्ली) ने प्रसाद के नाटकों में हास्य एवं व्यंग्य की स्थिति से अपनी बात प्रारंभ करते हुए तुलसी, सूर, कबीर, बिहारी आदि की कविताओं के व्यंग्य-प्रसंगों को रेखंकित किया। प्रसिद्ध ग़ज़लकार नीरज गोस्वामी (जयपुर) ने ग़ज़ल विधा की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए अपनी कुछ प्रसिद्ध ग़ज़लों का पाठ किया। समापन सत्र का संचालन डॉ. राजकुमारी शर्मा ने किया। आभार एवं शोध-संगोष्ठी का प्रतिवेदन डॉ. पुष्पा दुबे ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में विभिन्न प्रदेशों से आये 48 प्राध्यापक, 23 शोधार्थी एवं 40 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में महाविद्यालय का स्टाफ, विद्यार्थी एवं गणमान्य सदस्य उपस्थित रहे।

❒❒❒

15-16 मार्च 2019 अग्रणी चन्द्रशेखर आजाद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीहोर

भोपाल मध्यप्रदेश के राज्य संग्रहालय के सभागार में 17 मार्च 2019 को आयोजित "ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका-शिवना प्रकाशन साहित्य समागम तथा सम्मान समारोह" की कुछ झलकियाँ

प्रथम सत्र : सम्मानित रचनाकारों पर वक्तव्य प्रदान करते श्री बलराम गुमाश्ता, सुश्री गीताश्री तथा श्री समीर यादव

प्रथम सत्र : सम्मानित रचनाकारों पर वक्तव्य प्रदान करते श्री विनय उपाध्याय, डॉ. गरिमा संजय दुबे तथा सत्र के मुख्य अतिथि श्री महेश कटारे

प्रथम सत्र : अध्यक्ष डॉ. उर्मिला शिरीष का उद्बोधन, तृतीय सत्र : अध्यक्ष डॉ. प्रेम जनमेजय तथा मुख्य अतिथि श्री शशिकांत यादव का उद्बोधन

द्वितीय सत्र : सुधा ओम ढींगरा का स्वागत भाषण, अध्यक्ष श्री संतोष चौबे का उद्बोधन, मुख्य अतिथि श्री पलाश सुरजन का उद्बोधन

चतुर्थ सत्र : "कविता की एक शाम लहरों के नाम" में भोपाल के बड़ा तालाब में मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग के क्रूज़ पर कविता पाठ के दौरान कार्यक्रम अध्यक्ष श्री नीरज गोस्वामी, कार्यक्रम का संचालन करते श्री शशिकांत यादव तथा क्रूज़ पर कविता का आनंद लेते श्रोतागण।

Shivna Sahityiki ● Quarterly ● APRIL-JUNE 2019 ● RNI : MPHIN/2016/67929 ● ISSN : 2455-9717

ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन अमेरिका द्वारा मध्यप्रदेश के सीहोर ज़िले में सीहोर तथा आष्टा में चलाए जा रहे आर्थिक रूप से कमज़ोर परिवार की बालिकाओं के लिए निशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण योजना के तहत स्थापित प्रशिक्षण केन्द्रों पर आयोजित कुछ कार्यक्रम

आष्टा के कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र की बालिकाओं हेतु आयोजित बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम में बालिकाओं को संबोधित करते ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा, उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा।

सीहोर के कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र की बालिकाओं हेतु आयोजित बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम में बालिकाओं को संबोधित करते ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के अध्यक्ष डॉ. ओम ढींगरा, उपाध्यक्ष डॉ. सुधा ओम ढींगरा।

सीहोर के कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र की बालिकाओं हेतु आयोजित बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम में बालिकाओं को संबोधित करते हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकारगण सुश्री मनीषा कुलश्रेष्ठ, सुश्री पारुल सिंह और डॉ. प्रेम जनमेजय।

सीहोर के कम्प्यूटर प्रशिक्षण केंद्र की बालिकाओं हेतु आयोजित बालिका सशक्तिकरण कार्यक्रम में बालिकाओं को संबोधित करते फ़िल्म निर्देशक श्री इरफ़ान ख़ान, ढींगरा फ़ैमिली फ़ाउण्डेशन के समन्वयक श्री प्रमोद शर्मा और पूर्व विधायक श्री शैलेन्द्र पटेल।

If Undelivered Please Return to :
P. C. Lab, Shop No. 3-4-5-6, Samrat Complex Basement, Opp. Bus Stand, Sehore, M.P. 466001
Phone 07562-405545, 07562-695918, Mobile 09584425995, 07828313926, 09806162184

स्वत्वधिकारी एवं प्रकाशक पंकज कुमार पुरोहित के लिए पी. सी. लैब, शॉप नं. 3-4-5-6, सम्राट कॉम्प्लैक्स बेसमेंट, बस स्टैंड के सामने, सीहोर, मध्य प्रदेश 466001 से प्रकाशित तथा मुद्रक ज़ुबैर शेख़ द्वारा शाइन प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बी-2, क्वालिटी परिक्रमा, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लैक्स,ज़ोन 1, एम पी नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश 462011 से मुद्रित।